" दीप हैं जलते रहेंगे, हम प्रलय की आँधियों से अन्त तक लड़ते रहेंगे।"

पूर्वोत्तर भारत शिलचर (असम) से प्रकाशित लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

प्रेरणा भारती

www.preranabharati.com Email: preranabharati@gmail.com

हरिदर्शन HARIDARSHAN

हमारे यहाँ धार्मिक पुस्तक के साथ पूजा-पाठ, हवन-पूजन की सामग्री उचित मूल्य पर प्राप्त करें

मेहरपुर, शिलचर, असम-788015
मो.नं. 9435213512,

Postal Registration No.RN-SC-36/2023-25 (RNI No.) ASSHIN/2016/69550 अंक - 192 वर्ष -11 अषाढ़ शुक्ल चतुर्थी 2082 रविवार (19 जुलाई 2026) मूल्य-5 रुपये, पृष्ठ-6, preranabharati@gmail.com

श्रीहरिकोटा स्पेस सेंटर से विक्रम-१ का सफल प्राइवेट प्रक्षेपण

भारत के अंतरिक्ष भविष्य की स्परेखा की रचा नई इतिहास

अतनु दास , वरिष्ठ पत्रकार, पूर्व पीटीआई नई दिल्ली, १८ जुलाई : सुधार, प्रगति और उडान एक नया दौर: भारत ग्लोबल स्पेस हब के रूप में उभर रहा है। विक्रम-१ के सफल प्रक्षेपण के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने पूरी टीम को हृदय से दी बहुत-बहुत बधाई ।भारत सरकार के दूरदर्शी सुधारों के चलते देश का अंतरिक्ष क्षेत्र ऐतिहासिक बदलाव के दौर से गुजर रहा है। स्काईरूट एयरोस्पेस के भारत के पहले निजी तौर पर विकसित ऑर्बिटल रॉकेट विक्रम-१ के प्रक्षेपण की तैयारी इस परिवर्तन का प्रतीक है। इंडियन स्पेस पॉलिसी २०२३ ने पूरी स्पेस वैल्यू चेन को निजी क्षेत्र के लिए खोल दिया है, जिससे नवाचार, निवेश और उद्यमिता

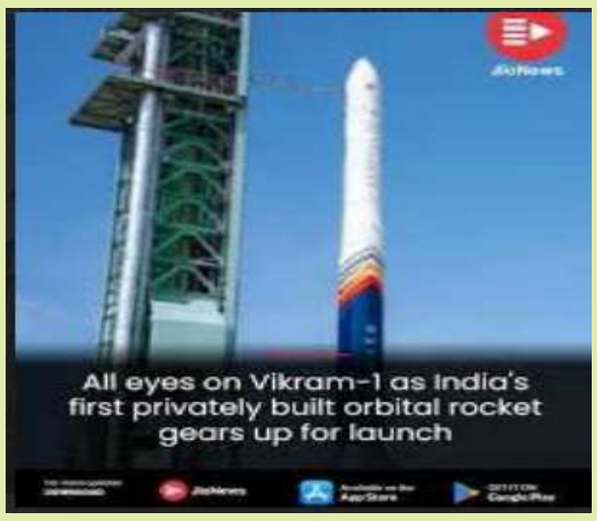

को नई गति मिली है। आज भारतीय उद्योग उपग्रह निर्माण, प्रक्षेपण सेवाओं, अंतरिक्ष अनुप्रयोगों और डाउनस्ट्रीम सेवाओं में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इन सुधारों का प्रभाव आंकडों में भी स्पष्ट है। २०१४ में केवल एक स्पेस स्टार्टअप वाला भारत २०२६ तक ४०० से अधिक स्पेस स्टार्टअप्स का देश बन चुका है, जो निजी भागीदारी और नवाचार के तेजी से बढते विस्तार को दर्शाता है।सरकार के सुधारों से भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था भी तेजी से आगे बढ. रही है। वर्तमान में लगभग ८.४ अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य वाली इस अर्थव्यवस्था के २०३० तक बढ़कर ४०-४५ अरब अमेरिकी डॉलर और २०४० तक १०० अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का लक्ष्य है। सरकार का निरंतर सहयोग, अनुकूल नीतियां और मजबूत सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) इस विकास को गति दे रही हैं। इसके परिणामस्वरूप भारत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, विनिर्माण, नवाचार और वाणिज्यिक अंतरिक्ष गतिविधियों के क्षेत्र में एक वैश्विक केंद्र के रूप में उभर रहा है। भारत के अंतरिक्ष भविष्य की यात्रा के बारे में और जानने के लिए पढ़ें: इंडिया स्पेस ओडीसी

मिशन आगमन: विक्रम-१ :-- स्काईरूट एयरोस्पेस द्वारा विकसित 'विक्रम-१' भारत का पहला निजी तौर पर विकसित ऑर्बिटल प्रक्षेपण यान है, जो ३५० किलोग्राम तक के पेलोड को पृथ्वी की निचली कक्षा (लो अर्थ ऑर्बिट) में स्थापित करने में सक्षम है। ऑर्बिटल प्रक्षेपण यान उपग्रहों को पृथ्वी की निर्धारित कक्षाओं में स्थापित करते हैं, जिससे संचार, नौवहन, पृथ्वी अवलोकन और वैज्ञानिक अनुसंधान जैसी सेवाओं को बढावा मिलता है।

- इसे पूरी तरह से कार्बन कम्पोजिट स्ट्रक्चर, भरोसेमंद सॉलिड-फ्यूल

⇨ शेषांश पृष्ठ ४ पर

सुको : अब ट्रेन में सफर करने वालों को नहीं कह सकेंगे सेकंड क्लास यात्री, बिना टिकट मौत पर भी ८ लाख के मुआवजे का आदेश

नई दिल्ली. (एजें) १८ जुलाई : भारतीय रेलवे की व्यवस्थाओं और यात्रियों के सम्मान को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने एक बेहद अहम और ऐतिहासिक फैसला सुनाया है. अदालत ने रेलवे द्वारा आम बोलचाल और दस्तावेजों में इस्तेमाल होने वाले सेकंड क्लास पैसेंजर (द्वितीय श्रेणी यात्री) शब्द पर गहरी आपत्ति जताई है.अदालत का मानना है कि देश के इतिहास में मौजूद वर्ग विभाजन को देखते हुए किसी भी नागरिक को इस तरह से संबोधित करना सीधे तौर पर संविधान की मूल भावना के खिलाफ है. इसके साथ ही कोर्ट ने एक अहम मामले में रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल के फैसले को पलटते हुए एक बडा आदेश पारित किया है. सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजय करोल और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि भविष्य में किसी भी यात्री की श्रेणी उसके द्वारा किए गए खर्च से तय नहीं होनी चाहिए. अदालत ने रेलवे को सख्त हिदायत दी है कि अब से दस्तावेजों में श्रेणी का उल्लेख यात्री के बजाय केवल उस कोच या डिब्बे के संदर्भ में ही किया जाए, जिसमें वह सफर कर रहा है. इसे रेलवे व्यवस्था में एक बडे.सुधारात्मक कदम और समानता के अधिकार के रूप में देखा जा रहा है.सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने रेलवे की सुरक्षा व्यवस्था और कर्मचारियों की भारी कमी पर भी चिंता व्यक्त की. अदालत ने कहा कि रेलवे मैनुअल के सुरक्षा प्रावधानों को जमीन पर सही ढंग से लागू करने के लिए कर्मचारियों की संख्या में काफी इजाफा करने की सख्त जरूरत है. देश आधुनिकीकरण की ओर बढ.रहा है, ऐसे में रेलवे स्टेशनों और ट्रेनों में अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार दिया जाना चाहिए. इससे न सिर्फ युवाओं को स्थायी आजीविका मिलेगी, बल्कि आपात स्थिति में यात्रियों की जान बचाने में भी बडी मदद मिलेगी.इस ऐतिहासिक सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश हाईकोर्ट और रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल के एक पुराने फैसले को पलट कर पीडित परिवार को बडी राहत दी है. दरसअल, ट्रेन से गिरकर एक यात्री की मौत हो गई थी, लेकिन शव के पास से टिकट न मिलने के कारण उसे गैर-टिकट यात्री मानकर मुआवजा देने से इनकार कर दिया गया था. मृतक की पत्नी ने अपने हलफनामे में साफ बताया था कि उनके पति ने वैध टिकट लिया था, लेकिन हादसे में उनका बैग गुम हो गया, जिसमें टिकट था. सुप्रीम कोर्ट ने कडा रुख अपनाते हुए कहा कि केवल टिकट न मिलने के आधार पर यात्री को गैर-टिकट यात्री नहीं ठहराया जा सकता. अदालत ने रेलवे को निर्देश दिया है कि वह मृतक की पत्नी को ब्याज सहित ८ लाख रुपए का मुआवजा तत्काल प्रभाव से अदा करे.

रविवार को होगी असम प्रीमियर लीग (एपीएल) के खिलाड़ियों की नीलामी

असम के क्रिकेटरों के लिए यादगार और महत्वपूर्ण दिन : एसीए अध्यक्ष तरंग गोगोई

गुवाहाटी, १८ जुलाई (हि.स.)। असम क्रिकेट संघ (एसीए) द्वारा पहली बार आयोजित की जा रही असम प्रीमियर लीग (एपीएल) के खिलाड़ियों की नीलामी रविवार को गुवाहाटी में आयोजित होगी। बरसापारा एसीए स्टेडियम परिसर स्थित '९१ यार्ड्स क्लब' के सभागार में होने वाली इस नीलामी में आठ टीमें अपनी रणनीति के अनुसार खिलाड़ियों को खरीदकर अपनी-अपनी टीम का गठन करेंगी।पहले एपीएल के लिए कुल २७५ खिलाड़ियों की नीलामी होनी है। इसके लिए एसीए पहले ही २० माकी खिलाड़ियों की सूची जारी कर चुका है। बीसीसीआई के घरेलू क्रिकेट में प्रदर्शन के आधार पर डेनिश दास, शिवशंकर रॉय, सुमित कश्यप, स्वरूपम पुरकायस्थ, जितुमणि कलिता, मृण्मय

दत्ता, मुक्तार हुसैन, अभिनव चौधरी, राहुल सिंह, सदाक हुसैन, भार्गव प्रतिम, साहिल जैन, प्रद्युन सैकिया, सौरभ मौसम दिहिंगिया, अब्दुल अजीज, आकाश सेनगुप्ता, आयुष्मान मलाकार, सुमित घाडीगांवकर, रोहित सेन और रुहिनंदन पेगू को इस सूची में शामिल किया गया है। रविवार की नीलामी में इन खिलाड़ियों के अलावा अन्य क्रिकेटरों पर भी सभी टीमों की नजर रहेगी।एपीएल को लेकर बढते उत्साह के बीच एसीए अध्यक्ष तरंग गोगोई ने कहा कि रविवार की खिलाड़ियों की नीलामी असम के क्रिकेटरों के लिए एक यादगार और महत्वपूर्ण दिन होगा। उन्होंने कहा कि राज्य के सभी जिलों के क्रिकेटर नीलामी का हिस्सा हैं और लंबे इंतजार के बाद उन्हें पता चलेगा कि वे आठ में से किस टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। उन्होंने कहा कि नई पहचान के साथ नई लीग में खेलने का अनुभव खिलाड़ियों के लिए विशेष होगा और अपनी प्रतिभा को व्यापक स्तर पर प्रदर्शित करने का यह सुनहरा अवसर है।एक अगस्त से शुरू होने वाले एपीएल के उद्घाटन सत्र में जोरहाट स्टैलियंस, तेजपुर टाइटंस, डिब्रूगढ. वॉरियर्स, बराक लीजेंड्स, नगांव रेंजर्स, बरपेटा ब्रेव्स, गुवाहाटी रॉयल्स और चराइदेव सनराइजर्स की टीमें हिस्सा लेंगी।

५०० करोड. रुपये से अधिक लागत वाली कामाख्या कॉरिडोर परियोजना का कार्य शुरू

गुवाहाटी, १८ जुलाई (हि.स.)। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने शनिवार को कहा कि मां कामाख्या के आशीर्वाद से ५०० करोड.रुपये से अधिक लागत वाली महत्वाकांक्षी कामाख्या कॉरिडोर परियोजना का कार्य शुरू हो गया है।मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर आज एक पोस्ट शेयर करते हुए कहा कि काशी विश्वनाथ कॉरिडोर की सफलता से प्रेरित यह परियोजना शक्तिपीठ मां कामाख्या आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को अधिक सुगम, सुव्यवस्थित और विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराएगी।उन्होंने कहा कि इस परियोजना से न केवल श्रद्धालुओं के दर्शन का अनुभव बेहतर होगा, बल्कि असम में आध्यात्मिक पर्यटन को भी नई गति मिलेगी और राज्य धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र के रूप में और अधिक सशक्त होगा।

भारत के पहले निजी ऑर्बिटल लॉन्च पर असम के मुख्यमंत्री ने दी बधाई

गुवाहाटी, १८ जुलाई (हि.स.)। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने भारत के पहले निजी ऑर्बिटल लॉन्च विक्रम-१ की सफलता पर स्काईरूट एयरोस्पेस की पूरी टीम को बधाई दी है।मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा कि विक्रम-१ का प्रक्षेपण भारत के अंतरिक्ष उद्योग और उद्यमिता की संभावनाओं के लिए एक नई ऊंचाई का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि भारत के पहले निजी ऑर्बिटल लॉन्च के रूप में देश के अंतरिक्ष क्षेत्र में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है।

डॉ. सरमा ने कहा कि यह सफलता 'नए भारत' की उस क्षमता को पुनः प्रमाणित करती है, जहां नवाचार, प्रौद्योगिकी और उद्यमिता देश को नई बुलंदियों तक पहुंचा रहे हैं।

मां का शव कंधे पर लेकर जा रहे बेटे की ट्रक की चपेट में आने से मौत

गुवाहाटी, १८ जुलाई (हि.स.)। राजधानी के आजरा इलाके में शनिवार को एक बेहद दर्दनाक हादसा सामने आया। अपनी वृद्ध मां का शव कंधे पर लेकर श्मशान जा रहे एक व्यक्ति की राष्ट्रीय राजमार्ग पार करने के दौरान ट्रक की चपेट में आने से मौत हो गई।मृतक की पहचान पराग दास के रूप में हुई है। बताया गया है कि पराग दास अपनी दिवंगत मां के शव को कंधे पर लेकर अंतिम संस्कार के लिए श्मशान जा रहे थे। इसी दौरान राष्ट्रीय राजमार्ग पार करते समय तेज रफ्तार ट्रक ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी।हादसे में पराग दास की मौके पर ही मौत हो गई। इस हृदयविदारक घटना से पूरे इलाके में शोक की लहर दौड.गई। पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है।

असम राज्य सूचना आयोग की सख्त कार्रवाई, दो वर्षों तक सूचना नहीं देने और सुनवाई में अनुपस्थित रहने पर लगाया दंड

चंद्रशेखर ग्वाला लखीपुर, १८ जुलाई। सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम, २००५ का उल्लंघन करने के आरोप में कछार जिले के लखीपुर के तत्कालीन सब-डिविजनल ऑफिसर (सिविल), जो वर्तमान में सह-जिला आयुक्त (को-डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर) हैं, पर असम राज्य सूचना आयोग ने २० हजार रुपये का जुर्माना लगाया है। राज्य सूचना आयुक्त उत्पल बरुआ ने ३ जुलाई २०२६ को जारी आदेश में यह कार्रवाई करते हुए संबंधित अधिकारी को दंड की राशि जमा करने का निर्देश दिया है।आयोग ने अपने आदेश में कहा है कि आरटीआई आवेदक को लगभग दो वर्षों

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

पद्मश्री से सम्मानित कविंद्र पुरकायस्थ की स्मृति में भावपूर्ण 'पद्मश्री गौरव उत्सव'

शिलचर से रानू दत्त की रिपोर्ट १८ जुलाई :शिलचर। मरणोपरांत पद्मश्री सम्मान से अलंकृत शिक्षाविद्, समाजसेवी और जननेता कविंद्र पुरकायस्थ की स्मृति में शिलचर में भावपूर्ण 'पद्मश्री गौरव उत्सव' का आयोजन किया गया। सर्किट हाउस रोड स्थित समारोह भवन में आयोजित कार्यक्रम में राजनीति, शिक्षा, समाजसेवा और सांस्कृतिक जगत की अनेक प्रतिष्ठित हस्तियों ने हिस्सा लेकर महान व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में राज्य के मंत्री कौशिक राय, सांसद परिमल शुक्लवैद्य, विधायक डॉ. राजदीप राय, अमिय कांति दास, किशोर नाथ, पूर्व विधायक दीपायन चक्रवती तथा राज्यसभा सांसद कनाद पुरकायस्थ सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। नृत्यांगना सिमरन साहा की गणेश वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। स्वागत भाषण में राज्यसभा सांसद कनाद पुरकायस्थ ने कहा कि पद्मश्री सम्मान केवल उनके परिवार का गौरव नहीं, बल्कि कविंद्र पुरकायस्थ के आदर्शों से प्रेरित प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान है। उन्होंने अपने पिता की कर्मनिष्ठा, मानवीय संवेदनशीलता और क्षमाशील स्वभाव को याद करते हुए कहा कि मानव कल्याण के लिए कार्य करना ही उनके जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य था। उन्होंने कबीर के दोहे के भाव का उल्लेख करते हुए कहा ङ्गपद तुम्हारी पहचान नहीं है, बल्कि तुम पद की पहचान हो। कार्यक्रम के दौरान कविंद्र पुरकायस्थ के जीवन, उनके सामाजिक योगदान और जनसेवा से जुडी गतिविधियों पर आधारित एक वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट शिक्षाविद् डॉ. अमलेंदु भट्टाचार्य, रवींद्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. मानवेंद्र दत्त चौधरी तथा समाजसेवी महावीर प्रसाद जैन ने अपने वक्तव्यों में कविंद्र पुरकायस्थ के शिक्षक जीवन, संगठनात्मक दक्षता, ईमानदारी और समाज के प्रति उनके उल्लेखनीय योगदान को याद किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत सुब्रत राय के निर्देशन में प्रस्तुत नाटक ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया। वहीं गार्गी चक्रवती, रथींद्र चक्रवती, कौस्तव पुरकायस्थ और देबांजना भट्टाचार्य के संगीत प्रस्तुतियों ने समारोह को और भी यादगार बना दिया। कार्यक्रम का संचालन मंजुषा पुरकायस्थ और मनोज देव ने किया। अंत में कुनाल पुरकायस्थ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि कविंद्र पुरकायस्थ का कर्ममय जीवन, मानवीय मूल्य और समाजसेवा की भावना आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

लखीपुर विधानसभा क्षेत्र की विकास परियोजनाओं की प्रगति की मंत्री कौशिक राय ने की समीक्षा

चंद्रशेखर ग्वाला लखीपुर, १८ जुलाई: राज्य के शहरी विकास एवं आवासीय मामलों तथा खाद्य सुरक्षा विभाग के मंत्री कौशिक राय ने शनिवार को लखीपुर विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत लखीपुर, बिन्नाकांडी और राजाबाजार विकास खंडों में संचालित विभिन्न विकास परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।

फूलेरतल स्थित मल्टीपर्पस हॉल में आयोजित समीक्षा बैठक में उन्होंने परियोजनाओं की वर्तमान स्थिति, कार्यों की प्रगति तथा भविष्य की कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की। बैठक में विभिन्न विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन की प्रगति का विस्तृत आकलन किया गया। मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

संघ कभी सूर्यास्त नहीं देखता, सदैव चिरयुवा रहता है : प्रो. राकेश सिन्हा

गुवाहाटी, १८ जुलाई (हि.स.)। राज्यसभा के पूर्व सांसद, चिंतक एवं लेखक प्रो. राकेश सिन्हा ने शनिवार को कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) एक ऐसा संगठन है, जो कभी सूर्यास्त नहीं देखता, बल्कि सदैव सूर्योदय के साथ उपस्थित रहता है। उन्होंने कहा कि संघ कभी वृद्ध नहीं होता और समय के साथ स्वयं को निरंतर नवीनीकृत करते हुए सदैव चिरयुवा बना रहता है।गुवाहाटी के पलटन बाजार स्थित केशव धाम के शंकरदेव सभागार में पूर्वोत्तर भारत अध्ययन समूह की ओर से आयोजित वैचारिक प्रबोधन कार्यशाला के अंतर्गत विशेष व्याख्यान कार्यक्रम में प्रो. सिन्हा ने यह बात कही। कार्यक्रम का विषय 'परम पूजनीय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार : संघ कार्य की शताब्दी प्रेरणा' था, जिसमें बडी संख्या में शिक्षाविद, शोधार्थी, स्वयंसेवक और विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

'अंडरस्टैंडिंग आरएसएस एंड डॉ. के.बी. हेडगेवार' पुस्तक के लेखक प्रो. राकेश सिन्हा ने अपने व्याख्यान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के जीवन, व्यक्तित्व, संगठनात्मक

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

महामना शिक्षण संस्थान की कार्यशाला में मानव मूल्यों पर हुआ मंथन, विद्वानों ने विद्यार्थियों का किया मार्गदर्शन

लखनऊ प्रेरणा भारती १८ जुलाई :महामना शिक्षण संस्थान के तत्वावधान में लखनऊ में 'मानव मूल्य एवं सर्वांगीण विकास' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में संस्थान के पूर्व विद्यार्थियों, वर्तमान छात्रों और नवप्रवेशी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ संस्कार, मानव मूल्य, सेवा भावना, सामाजिक दायित्व और राष्ट्र निर्माण के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर संस्थान के प्रमुख अवनिंद्र चतुर्वेदी एवं अन्य पदाधिकारियों ने मंचासीन अतिथियों का स्वागत और सम्मान किया।

प्रथम सत्र को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख स्वांतरंजन जी ने भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय के जीवन, उनके आदर्शों, शिक्षा दर्शन और राष्ट्र निर्माण में उनके अप्रतिम योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जनकल्याण के बडे.लक्ष्य की शुरुआत भी छोटे-छोटे प्रयासों से होती है।क्षेत्र प्रचारक अनिल जी ने 'नर सेवा ही नारायण सेवा' विषय पर अपने विचार रखते हुए सेवा, समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्व को जीवन का मूल आधार बताया। उन्होंने दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार के संस्थापक आशीष गौतम जी के सेवा कार्यों का उदाहरण देते हुए विद्यार्थियों को समाज के प्रति संवेदनशील बनने का संदेश दिया।कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में डॉ. दुर्ग सिंह चौहान, आईआईएम लखनऊ के निदेशक प्रो. एम.पी. गुप्ता सहित अनेक विद्वानों और शिक्षाविदों ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। वक्ताओं ने मानव मूल्यों, नैतिक आचरण, नेतृत्व क्षमता, चरित्र निर्माण और सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों पर अपने विचार रखे। समापन सत्र को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि ऐसे जिम्मेदार, संवेदनशील और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक तैयार करना है, जो समाज और राष्ट्र के विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकें। उन्होंने विद्यार्थियों से भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और सेवा भावना को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में लखनऊ विश्वविद्यालय की वरिष्ठ अध्यापिका डॉ. शीला मिश्रा, प्रसिद्ध वनस्पति विज्ञानी प्रो. ए.के. शासनी सहित अनेक शिक्षाविद् एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। कार्यशाला ने पूर्व और वर्तमान विद्यार्थियों के बीच संवाद एवं आत्मीय संपर्क का भी अवसर प्रदान किया। प्रतिभागियों ने कार्यशाला को प्रेरणादायी, उपयोगी और व्यक्तित्व विकास की दिशा में महत्वपूर्ण बताया।

सोनाई नदी में अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने से सनसनी, पुलिस की देरी पर लोगों में आक्रोश

प्रे.सं. शिलचर, शनिवार १८ जुलाई : सोनाई नदी में शनिवार सुबह एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। धर्मी-जमालपार क्षेत्र में नदी किनारे कचरे के बीच शव फंसा हुआ देखकर स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी।स्थानीय लोगों का आरोप है कि सूचना देने के करीब दो घंटे बाद भी पुलिस घटनास्थल पर नहीं पहुंची। लंबे समय तक पुलिस के आने का इंतजार करने के बाद एक स्थानीय व्यक्ति ने

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

!! नकारात्मक विचारों का आना तय है, परन्तु यह आप पर निर्भर करता है कि आप उन्हे कितना महत्व देते हैं। !!

सम्पादकीय.....

जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा

इस बात को ढाई साल से ज्यादा हो चुके हैं जब केंद्र सरकार ने भारत के सुप्रीम कोर्ट में औपचारिक वादा किया था कि जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा लौटा दिया जायेगा। कोर्ट ने कोई सयमसीमा तो तय नहीं की, लेकिन उम्मीद थी कि यह वाजिब समयावधि के भीतर होगा और क्रमिक रूप से कदम उठाये जायेंगे। तब से भारतीय जनता पाटी-नीत सरकार ने इस मोर्चे पर कुछ नहीं किया है, जिसका एक ही मतलब हो सकता है कि उसने समयसीमा के अभाव को राज्य-का-दर्जा अनिश्चितकाल के लिए टालने का लाइसेंस समझ लिया है। केंद्र द्वारा बार-बार आश्वासन दिये जाने के बावजूद ऐसा है। जम्मू-कश्मीर चुनाव के पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसका वादा किया और गृह मंत्री अमित शाह ने इसे संसद के भीतर दोहराया। कोई आश्चर्य नहीं कि इस निष्क्रियता के चलते जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को विरोध-प्रदर्शनों और रैलियों की श्रृंखला आयोजित करनी पडी, जिसका समापन २० जुलाई को जंतर-मंतर पर धरने के साथ होगा। उनकी और इस प्रांत की शिकायत जायज है। लोकप्रिय चुनाव के बाद भी केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा बनाये रखने से निर्वाचित सरकार एक अनिर्वाचित उप-राज्यपाल के अधीन हो जाती है जिसके पास नौकरशाही, पुलिस और अन्य संस्थाओं, पर अधिक अधिकार होता है। एक बार चुनाव हो जाने और सरकार बन जाने के बाद इस बंदोबस्त को जारी रखने का कोई सैद्धांतिक औचित्य नहीं है।

इस मामले में निष्क्रियता के लिए नई दिल्ली का तर्क घिसा-पिटा रहा है: ङ्कसुरक्षाङ्घ। पिछले साल के आखिर में, राज्य-का-दर्जा बहाल करने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर-जनरल ने पहलगाम हमले का हवाला देते हुए इसी तर्क का इस्तेमाल किया। लेकिन इस दलील में कोई दम नहीं है। खुद सरकार का कहना है कि यह हमला सीमा पार से कराया गया और भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए मुकम्मल जवाब दिया। एक सीमा-पार उकसावे का इस बात से कोई तार्किक वास्ता नहीं है कि पूर्ण राज्य की शक्तियां सौंपने के लिए जम्मू-कश्मीर के निर्वाचित प्रतिनिधियों पर भरोसा किया जाए या नहीं। बल्कि, निर्वाचित नेताओं को स्थानीय शिकायतें दूर करने के लिए सशक्त बनाना ही वह तरीका है जिससे कोई राज्य-व्यवस्था चिंताओं को असंतोष में बदलने से पहले ही शांत कर देती है। गौरतलब है कि इसी असंतोष ने दशकों तक कश्मीर घाटी में उग्रवाद के विभिन्न दौर को हवा दी। केंद्र सरकार जिस तरीके से जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और यहां तक कि मणिपुर को संभाल रही है, उससे बडी अल्पसंख्यक आबादी वाले इन सीमावती क्षेत्रों के साथ हो रहे सलूक में एक चिंताजनक पैटर्न दिखता है। पूरे उत्तर, पश्चिम और अब पूर्व में अपने दबदबे को लेकर निश्चिंत भाजपा इन प्रांतों के नागरिकों की चिंताओं को तुच्छ मानती लग रही है। ऐसा नजरिया अदूरदशी है: जो शासन-व्यवस्था किसी सीमावती क्षेत्र को राजनीतिक रूप से गौण मानती है, वह केवल अलगाव की भावना और गहरी करती है; और जल्द ही अस्थिरता दूसरी जगहों तक भी फैल जाती है और पूरी शासन-व्यवस्था को हिला देती है। ऐसा लगता है कि भाजपा राज्य-का-दर्जा मुद्दे को तब तक लटकाये रखने में ही खुश है जब तक कि राजनीतिक अंकगणित उसके पक्ष में निर्णायक ढंग से न झुक जाए। जम्मू-कश्मीर में परिसीमन के जरिए अंकगणित बदलने की कोशिश वह पहले ही कर चुकी है। सुप्रीम कोर्ट, संसद और जम्मू-कश्मीर की जनता से किये गये वादे को राजनीतिक हालात भाजपा के लिए सुविधाजनक होने के इंतजार में लटका कर नहीं रखा जा सकता।

मंडल आयोग : अधिकांश सिफारिशें ठंडे बस्ते में पड़ी हैं

- ई० प्रभात किशोर

भारत का संविधान अपने नागरिकों को समानता का अधिकार सुनिश्चित करता है, परन्तु सामाजिक भेदभाव के कारण, समाज के एक बड़े वर्ग का सेवाओं और अन्य क्षेत्रों में अल्प प्रतिनिधित्व है। सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों की स्थिति का आकलन करने के लिए जनता पार्टी सरकार के द्वारा १ जनवरी १९७९ को श्री बी.पी. मंडल की अध्यक्षता में द्वितीय पिछड़ा वर्ग आयोग की स्थापना की गई थी। आयोग ने ३१ दिसंबर १९८० को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, परन्तु यह कांग्रेस शासन के पूरे एक दशक तक ठंढे बस्ते में पड़ी रही। सन १९८९ में जब जनता दल सरकार सत्ता में आई, तो १३ अगस्त १९९० को केंद्र सरकार और उसके सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की सेवाओं में पिछड़ा वर्ग के लिए २७ प्रतिशत आरक्षण की अधिसूचना जारी की गई।

रिपोर्ट से उल्लिखित है कि ङ्कहिंदू और गैर-हिंदू दोनों श्रेणी के पिछड़े वर्ग की जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या का लगभग ५२ प्रतिशत है। तदनुसार, केंद्र सरकार के तहत सभी पदों में से ५२ प्रतिशत का यथानुपात आरक्षण उनके लिए आरक्षित किया जाना चाहिए। परन्तु यह प्रावधान उच्चतम न्यायालय के उन निर्णयों के विरुद्ध होगा, जिसमें कहा गया है कि संविधान के अनुच्छेद १५(४) और १६(४) के तहत आरक्षण की कुल मात्रा ५० प्रतिशत से कम होनी चाहिए। इसे देखते हुए, पिछड़े वर्गों के लिए प्रस्तावित आरक्षण की सीमा इस प्रकार निर्धारित की जाय कि अनु० जाति एवं जनजाति के लिए प्रावधानित आरक्षण २२.५ प्रतिशत में जोड़ने पर वह ५० प्रतिशत से नीचे रहे। इन कानूनी बाधाओं को देखते हुए, आयोग ने केवल २७ प्रतिशत आरक्षण की अनुशंसा की, भले ही उनकी जनसंख्या प्रावधानित अनुशंसा से दोगुनी हो। जिन राज्यों ने पहले ही ओबीसी के लिए २७ प्रतिशत से अधिक आरक्षण लागू कर दिया है, वे इस अनुशंसा से अप्रभावित रहेंगे।''

न्यायालय के द्वारा ५० प्रतिशत सीलिंग की कानूनी बाध्यता के कारण आयोग द्वारा पिछड़े वर्ग के लिए मात्र २७ प्रतिशत आरक्षण की अनुशंसा की गई है, अन्यथा यह अनुशंसा जनसंख्या अनुपात के अनुसार यानी ५२ प्रतिशत होती। अगड़ी जातियों के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए १० प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान के लिए वर्ष २०१९ में, १०३वें संविधान संशोधन के माध्यम से सीमा को बढ़ाकर ६० प्रतिशत कर दिया गया है। यही प्रक्रिया पिछड़े वर्गों को भी महज २७ प्रतिशत के स्थान पर ५२ प्रतिशत आरक्षण देने के लिए की जानी चाहिए थी, लेकिन खंडित दबे-कुचले तबके कभी भी सरकारों की प्राथमिकता सूची में नहीं रहे ।

जनता दल एवं बाद की अन्य दलों की केंद्र सरकारों ने मंडल आयोग की सभी अनुशंसाओं को लागू नहीं किया । आयोग की अनुशंसायें केवल सरकारी सेवाओं (जो जनसंख्या के १ प्रतिशत से अधिक नहीं हैं) के लिए नहीं हैं बल्कि समाज के सर्वांगीण विकास के लिए है, ताकि एक निश्चित अवधि के बाद सभी नागरिक एक ही बेंच मार्क पर खड़े हो सकें। अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग के द्वारा निम्नलिखित योजनाओं की अनुशंसा की गई है, जिनका क्रियान्वयन अभी प्रतीक्षित है:-

(१) एक खुली प्रतियोगिता में गुणागुण आधार पर नियोजित पिछड़े वर्ग के उम्मीदवारों को उनके २७ प्रतिशत आरक्षण कोटा में समायोजित नहीं

किया जाना चाहिए।

(२) उपरोक्त आरक्षण को सभी स्तरों पर पदोन्नति में भी लागू किया जाना चाहिए।

(३) आरक्षित कोटा जो भरा नहीं गया है उसे तीन साल की अवधि के लिए आगे बढ़ाया जाना चाहिए और उसके बाद अनारक्षित किया जाना चाहिए।

(४) सीधी भर्ती के लिए ऊपरी आयु सीमा में छूट ओबीसी के उम्मीदवारों को उसी तरह दी जानी चाहिए जैसे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के मामले में दी जाती है।

(५) संबंधित प्राधिकारियों द्वारा प्रत्येक श्रेणी के पदों के लिए रोस्टर प्रणाली उसी प्रकार से अपनाई जानी चाहिए जैसे वर्तमान में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों के संबंध में अपनाई जाती है।

(६) आरक्षण की उपरोक्त योजना केंद्र और राज्य सरकारों के अधीन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों के लिए भी सभी भर्तियों पर लागू होनी चाहिए।

(७) सभी निजी क्षेत्र के उपक्रम जिन्हें सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त हुई है, उन्हें उपरोक्त आधार पर कर्मियों की भर्ती करनी चाहिए।

(८) सभी विश्वविद्यालयों और संबद्ध महाविद्यालयों को भी उपरोक्त आरक्षण योजना के अंतर्गत शामिल किया जाना चाहिए।

शैक्षिक रियायतें:-

चयनात्मक आधार पर शुरूकिया गया प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम और आवासीय विद्यालय पूरे समुदाय की चेतना के बढ़ते बिंदुओं के रूप में कार्य करेंगे।

केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा संचालित सभी वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यवसायिक संस्थानों में पिछड़े वर्गों के छात्रों के लिए २७ प्रतिशत सीटें आरक्षित की जानी चाहिए। वे राज्य, जिन्होंने पहले ही इनके लिए २७ प्रतिशत से अधिक सीटें आरक्षित कर रखी हैं, वे इन अनुशंसाओं से अप्रभावित रहेंगे।

हमारे तकनीकी और पेशेवर संस्थानों में ऐसे सभी छात्रों के लिए विशेष कोचिंग सुविधाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि ये युवा निराश और अपमानित महसूस न करें और साथ ही देश में अकुशल और घटिया इंजीनियरों, डॉक्टरों और अन्य पेशेवरों के साथ देश न उतरे।

वित्तीय सहायता: -व्यवसायिक समुदायों (जैसे ग्रामीण कुम्हार, तेल कोल्हू, लोहार, बढ़ई आदि) के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए अलग-अलग वित्तीय संस्थान स्थापित किए जाने चाहिए।

संरचनात्मक परिवर्तन:-

सभी राज्य सरकारों को प्रगतिशील भूमि कानून बनाने और लागू करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए ताकि ग्रामीण इलाकों में मौजूदा उत्पादन संबंधों में बुनियादी संरचनात्मक परिवर्तन किए जा सकें।

वर्तमान में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को अधिशेष भूमि आवंटित की जा रही है। भूमि हदबंदी कानूनों आदि के लागू होने के परिणामस्वरूप भविष्य में उपलब्ध होने वाली अतिरिक्त भूमि का एक हिस्सा भी अन्य पिछड़ा वर्ग के भूमिहीन श्रमिकों को आवंटित किया जाना चाहिए।

मिश्रित: -(१) व्यावसायिक समुदायों के कुछ वर्ग जैसे मछुआरे, बंजारे, खटवे, बाँसफोर आदि, जो अभी भी अस्पृश्यता से पीड़ित हैं, को अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल किया जा सकता है।

(२) पिछड़ा वर्ग विकास निगमों को उनकी उन्नति के लिए विभिन्न सामाजिक-शैक्षिक और आर्थिक उपायों को लागू करने के लिए केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर स्थापित किया जाना चाहिए।

(३) पिछड़े वर्गों के हितों की रक्षा के लिए केंद्र और राज्यों में एक अलग मंत्रालय बनाया जाना चाहिए।

(४) अत्यंत पिछड़े वर्गों यथा- हिमाचल प्रदेश में गद्दी, महाराष्ट्र में नव-बौद्ध, तटीय क्षेत्रों में मछुआरे, जम्मू एवं कश्मीर में गुर्जरों को बेहतर प्रतिनिधित्व देने के लिए, परिसीमन के दौरान उनकी सघनता वाले क्षेत्रों को अलग निर्वाचन क्षेत्र बनाया जाना चाहिए।

केन्द्रीय सहायता:-

राज्य सरकार द्वारा सभी विकास कार्यक्रमों, विशेष रूप से पिछड़े वर्गों के लिए, केंद्र सरकार द्वारा उसी तरह और उसी सीमा तक वित्तपोषित किया जाना चाहिए जैसा कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के मामले में किया जाता है। पूरी योजना को केवल बीस साल (यानी एक पीढ़ी की अवधि) के बाद संशोधित किया जाना चाहिए। कम अंतराल पर कोई समीक्षा पिछड़े वर्ग की वर्तमान स्थिति और जीवन शैली पर अनुशंसाओं के प्रभाव का उचित आकलन संभव नहीं होगा।

आयोग की रिपोर्ट १९३१ की पिछली जनगणना के यथानुपात आधारित थी। २०२१ के बाद की आगामी जनगणना में जातिवार सर्वेक्षण और पिछड़े वर्गों को उनकी जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण की लंबे समय से जनता की प्रबल मांग है। इससे न केवल कल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी ढंग से और कुशलता से तैयार करने में मदद मिलेगी, बल्कि समाज में असमानता को तेजी से दूर करने में भी मदद मिलेगी।

(लेखक अभियंता और शिक्षाविद हैं)

चर्च-नक्सल गठजोड़: क्या विदेशी फंडिंग के सहारे भारत की सामाजिक जड़ों पर हो रहा प्रहार?

- डॉ. मयंक चतुर्वेदी

भारत में धर्मांतरण, यह विषय पिछले कुछ वर्षों में सामने आए अनेक प्रकरणों से कहीं अधिक व्यापक हो गया है। इसमें विदेशी फंडिंग, वैचारिक हस्तक्षेप, जनजातीय क्षेत्रों में बढ़ती सक्रियता और नक्सली नेटवर्क से संभावित संबंधों जैसे गंभीर आयाम भी जुड़ गए हैं। बेंगलुरु में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की शिकायत पर दर्ज हालिया एफआईआर ने एकबार फिर इस पूरे मुद्दे को राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में ला खड़ा किया है।

यदि हम भारत का समग्र चिंतन करते हैं तो एक बात तय है कि भारत की पहचान उसकी सांस्कृतिक विविधता, स्थानीय परंपराओं और हजारों वर्षों से विकसित सामाजिक संरचना से बनती है। विशेष रूप से जनजातीय समाज अपनी विशिष्ट आस्था, जीवन शैली और सांस्कृतिक विरासत के कारण भारतीय सभ्यता का अभिन्न अंग है। ऐसे समाजों में यदि बाहरी वैचारिक हस्तक्षेप योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है तो स्वभाविक है कि उसका प्रभाव धार्मिक परिवर्तन तक सीमित नहीं रहता बल्कि सामाजिक संतुलन और सामुदायिक विश्वास पर भी पडता है।

वस्तुत: बेंगलुरु में दर्ज एफआईआर ने

इसी चिंता को नए सिरे से सामने रखा है। आरोप है कि अमेरिका स्थित संस्था 'द टिमोथी इनिशिएटिव' (टीटीआई) ने विदेशी धन के माध्यम से भारत में व्यापक नेटवर्क तैयार किया। जांच एजेंसियों के अनुसार लगभग ९२ करोड़ रुपये से अधिक की राशि विदेशी डेबिट कार्डों के जरिए देश में लाई गई और उसका उपयोग धार्मिक प्रचार, प्रशिक्षण तथा संवेदनशील क्षेत्रों में वैचारिक प्रभाव बढ़ाने के लिए किया गया।इस मामले का सबसे चिंताजनक पहलू वह प्रशिक्षण सामग्री है, जिसके बारे में जांच एजेंसियों ने दावा किया है कि उसमें भारतीय धार्मिक परंपराओं और हिंदू देवी-देवताओं को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया।

यदि किसी समुदाय की आस्था को कमजोर करके उसके स्थान पर नई वैचारिक पहचान स्थापित करने की रणनीति अपनाई जाती है तो यह स्वभाविक तौर पर सामाजिक मनोविज्ञान को प्रभावित करने का प्रयास है।अब यदि भारतीय संविधान के संदर्भ में इसे समझें तो हमारे लोकतांत्रिक समाज में धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार महत्वपूर्ण है किंतु वह दूसरे समुदाय की आस्था को अपमानित करने या योजनाबद्ध ढंग से सामाजिक विभाजन पैदा करने का माध्यम नहीं बन सकता, इसके लिए पूरी तरह से मनाही है बल्कि कहें कि इसे अपराध तक घोषित कर रखा है। इसके बावजूद देखने में बार-बार यही आ रहा है कि चर्च पोषित संस्थाएं कन्वर्जन के खेल में लगी हुई हैं।

उदाहरण स्वरूप आप इन बडे.मामलों को भी देख सकते हैं- भीमा कोरेगांव प्रकरण, फादर स्टेन स्वामी से जुडे. आरोप, झारखंड का पथलगडी आंदोलन और ओडिशा में स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती हत्याकांड जैसे मामले वस्तुत: अलग-अलग घटनाएं भले हों किंतु इन सभी ने समय-समय पर यह प्रश्न अवश्य खडा किया कि क्या कुछ क्षेत्रों में सामाजिक, धार्मिक और उग्रवादी नेटवर्क किसी स्तर पर एक-दूसरे के संपर्क में रहे हैं, आखिर इसके पीछे क्या कारण हो सकता है ?विदेशी फंडिंग का प्रश्न भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। भारत में विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) इसी उद्देश्य से बनाया गया कि विदेश से आने वाले धन का उपयोग पारदर्शी और घोषित उद्देश्यों के अनुरूप हो। यदि किसी संस्था द्वारा प्राप्त धन का उपयोग सामाजिक सेवा, शिक्षा या स्वास्थ्य के बजाय वैचारिक ध्रुवीकरण, अवैध धर्मांतरण या राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के लिए किया जाता है तो यह स्थिति कानून का उल्लंघन होने के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा का विषय भी है।भारत का संविधान प्रत्येक नागरिक को अपनी आस्था मानने, उसका प्रचार करने और उसका पालन करने का अधिकार देता है। लेकिन यही संविधान सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता और कानून के दायरे को भी समान रूप से महत्व देता है। इसलिए धार्मिक स्वतंत्रता और संगठित धर्मांतरण के बीच की सीमा को समझना आवश्यक है। यदि किसी व्यक्ति का धार्मिक परिवर्तन उसकी स्वतंत्र इच्छा से होता है तो वह संवैधानिक अधिकार है लेकिन यदि उसके पीछे आर्थिक प्रलोभन, सामाजिक दबाव, विदेशी वित्तपोषण या वैचारिक अभियान काम कर रहे हों तो वह निश्चित तौर पर सिर्फ धार्मिक स्वतंत्रता का प्रश्न नहीं है, यह तो सीधे-सीधे एक देश की संपूर्ण सभ्यता और संस्कृति को ही बदल देना है!

अब इस नजरिए से देखें तो आज बेंगलुरु से शुरू हुई यह नई जांच उस व्यापक बहस का हिस्सा है, जो लंबे समय से भारत में धर्मांतरण, विदेशी फंडिंग, जनजातीय समाज के धार्मिक, पांथिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्वरूप को पूरी तरह बदलने, वैचारिक नेटवर्क और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संबंधों को लेकर चल रही है।हालांकि यह भी तय है कि आने वाले समय में न्यायिक प्रक्रिया और जांच एजेंसियों की कार्रवाई इस मामले की वास्तविक तस्वीर स्पष्ट करेंगी, किंतु इतना जरूर लगता है कि भारत जैसे बहुलतावादी लोकतंत्र में सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक अस्मिता और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुडे.ऐसे प्रश्नों की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। इस मामले में अच्छा यही होगा कि जितना शीघ्र हो सके, राष्ट्रीय स्तर पर कन्वर्जन के विरोध में सख्त कानून बने, ताकि भारत में धर्मांतरण रोकने की दिशा में सार्थक परिणाम सामने आएं।

(लेखक, हिन्दुस्थान समाचार से संबद्ध हैं।)

जिंदगी रूकती नहीं रिश्ता टूटने से

उषा जैन 'शीरीं'

रिश्ते का टूटना दुखदायी होता है। संभलते हुए वक्त लगता है। जिन्दगी रूकती नहीं है। समय के साथ घाव भी भरने लगते हैं और आप एक नया अध्याय खोलने को तत्पर हो जाते हैं. फिर से डेटिंग का सिलसिला शुरू होने लगता है हालांकि इसके लिए मानसिक रूप से तैयार होना आसान नहीं। ढेर सी मानसिक शक्ति और साहस जुटाकर ही आप आगे बढ.पाते हैं।पिछला चैप्टर क्लोज कर आगे का पृष्ठ खोलने से पहले आप लोगों को कैसे जतायेंगे कि आप नई शुरूआत के लिए तैयार हैं। यह इतना आसान नहीं। हो सकता है इस बीच किसी ने आप में दिलचस्पी दिखाने की कोशिश भी की हो लेकिन आपका रूखा व्यवहार और अपने ही दुखों में लीन रहने की आदत देखते हुए वो पीछे हट गया हो।

खोल से बाहर निकलें:-अब तक जो आपने अपने को एक खोल के भीतर कैद कर रखा था, इससे बाहर निकलें। किसी एक व्यक्ति के साथ ही जीवन समाप्त नहीं हो जाता। जिन्दगी रूकती नहीं। वो तो अनवरत चलती ही रहती है। यहां पर रूकना मौत के समान होगा, इसलिए जीवन में रस लें, दिलचस्पी लें। दोस्तों के जरिए नये दोस्त बनाएं। सोशल बनें। पार्टीज, फंक्शंस वगैरह में जाने से न कतराएं। नया रिश्ता जोडने में झिझक न करें। यह न सोचें कि घरवाले, दोस्त, सहेली, रिश्तेदार क्या सोचेंगे। अब रिश्ते का टूटना पहले की तरह शर्मनाक नहीं माना जाता।

चेतावनी के साइन:- नये रिश्ते की शुरूआत सुखद हो सकती है लेकिन यहां सावधानी बरतनी भी जरूरी है। बगैर सोचे समझे परखे किसी के साथ भी डेटिंग पर चल देना आपके लिए मुसीबत का कारण बन सकता है।

पहली बात तो यह है कि अपना सेल्फ एस्टीम कम न होने दें। किसी भी तरह के अपराध बोध से स्वयं को मुक्त रखें। अगर आपको अपने पिछले रिश्ते को लेकर किसी भूल का अहसास है भी तो भविष्य में उसे न दोहराने का संकल्प लें लेकिन पछतावे में अपनी ऊर्जा का क्षय न होने दें। मन में सोचें कि अगर दूसरे की भावनाओं में परिवर्तन आ गया है, प्रेमी ने बेवफाई दिखाई है तो उसमें आपका क्या कसूर।

यह तो ठीक है कि आपको दुबारा जुडाव के लिए अपने को तैय्यार करना चाहिए लेकिन इसमें जल्दी न करें। इस बात की जांच कर लें पहले कि दूसरी बार दूसरे व्यक्ति के लिए आपकी फीलिंग्स कितनी सच्ची और गहरी हैं।

अगर आप सिंगल पेरेंट हैं:-टूटे वैवाहिक संबंधों पर भी टूटे प्रेम संबंधों जैसा ही असर पडता है। पति पत्नी का मिलकर बनाया आशियाना बिखरने पर भी दिल टूटने की स्थिति आ जाती है। अगर बच्चे भी हैं तो प्रॉब्लम और भी ज्यादा बढ. जाती है। बच्चों को अपनी भावनाओं से निपटने में मदद भी आप ही को करनी है। ऐसे में नई शुरूआत के लिये केवल डेटिंग का ही सहारा न लें बल्कि दोस्ती का दायरा विस्तृत करने का प्रयत्न करें। इन रिश्तों से आपका जीवन समृद्ध होगा। रिश्तों से और रिश्ते जुडक़र चेन बनती जाएगी। आपको चॉइस करने में आसानी होगी।धीरे-धीरे आगे बढऩे की पॉलिसी अपनाएं। शुरूके दो चार माह में सब कुछ नया उत्साहवर्द्धक लगता है। इसके बाद छह सात महीने बीत जाने पर रिश्ते की ताजगी खत्म होने लगती है। तब ही असली जांच परख होती है। कौन कैसा है, कितना केयरिंग और सिंसियर है, यह अब पता लगता है। आपके जीवन के उद्देश्य, मान्यताएं व जीवन मूल्य दूसरे के साथ कितने मैच करते हैं, यह जानिए, तत्पश्चात रिश्ते को गंभीरता से लेकर उनके साथ सैटल होने का सोचें।यहां बच्चों को भी इन्वॉल्व करना जरूरी है। उनकी उम्र के अनुसार उनसे इस विषय में बात करें, उनकी राय लें। जहां समझाने की गुंजाइश है, समझाएं।

नई ट्रेंड:-आज का ट्रेंड है इंटरनेट डेटिंग। यह सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। अब इसे लोग नकारात्मकता से नहीं देखते हैं। हजारों सफल महिलाएं और पुरूष इसे दोस्ती का माध्यम बनाते हैं।

इसी तरह डेटिंग एजेंसीज की मदद से कार्य होता है लेकिन इसमें समय लगता है और कोई गारंटी नहीं कि सामने वाला कितना जेन्युइन है। गलत व्यक्ति के जाल मे फंस जाने से दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति और नहीं। इससे अच्छा है ज्यादा हाई फाई मैच तलाश न कर सामान्य पुरूष जो सज्जन हों, उनके साथ ही संबंध जोडा जाए। (उर्वशी)

खाने में स्वाद बढ़ाएं ऐसे

सुनीता गाबा

क्रीम की मात्रा और स्वाद बढाना हो तो २५० ग्राम फ्रेश क्रीम में आधा कप दही व आधा कप दूध मिला दें और अच्छी तरह मिक्स कर लें।

चपाती अधिक टेस्टी और पौष्टिक बने, इसके लिए आटा गूंथने से पहले आटे में ५ प्रतिशत सोया आटा और ५ मक्की का आटा मिला लें।

चाय के स्वाद को और बढाने के लिए चाय की पत्ती में छोटी इलायची पीस कर मिला लें। चाय स्वादिष्ट बनेगी।

चाय का फ्लेवर और जायकेदार बनाना हो तो संतरे के सूखे छिलके उबलते चाय के पानी में डाल देने से चाय का मजेदार फ्लेवर तैयार होता है।

घर के पनीर को अधिक सॉफ्ट बनाने के लिए दूध फाड़ने से पहले एक लिटर दूध में आधा कप क्रीम मिला लें। फिर दूध फाडें। पनीर अधिक साफ्ट बनेगा।

डोसा, इडली को सॉफ्ट बनाने के लिए सामग्री तैयार करते समय उसे थोडे. पके चावल मिला लें।

आम के पने का स्वाद बढाने के लिए उसमें पांच छः बूंदें अदरक के रस की मिला लें।

करेले की कडवाहट कम करने के लिए करेले बनाते समय उसमें थोडी सी भुनी पिसी मेथी डालें। कडवाहट भी कम होगी और स्वाद भी अधिक आएगा।

अगर आप सलाद को नया लुक और स्वाद देना चाहती हैं तो उबला पास्ता या नूडल्स डाल दें। उन पर थोडा कटा टमाटर व चीज कददूकस कर सजाएं। सलाद नया लुक भी देगा और स्वाद भी अच्छा लगेगा।

कोल्ड कॉफी को अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए आइस टैं में काफी पाउडर डाल कर आईस क्यूब जमाएं। कोल्ड काफी बनाते समय उसमें काफी क्यूब्स मिलाएं। अधिक मजा आएगा।

खिले हुए चावल बनाने के लिए चाहे नमकीन हों या उबले हुए, बनाने से पहले उसमें एक चम्मच नींबू का रस मिलाएं।

भिंडी को अधिक क्रिस्पी बनाने के लिए भिंडी बनाते समय नींबू का रस मिलाएं।

स्टफ्ड आलू बनाने के लिए आलू उबालते समय आलूओं की मात्रानुसार पानी में नमक डालें। आलू टूटेंगे नहीं।

पनीर की सब्जी बनाते समय पनीर से अधिक टमाटर मिक्सी में ब्लैंड कर डालें और एक चम्मच टोमेटो सास और मलाई फेंट कर डालें। पनीर बहुत स्वादिष्ट बनेगा।

ग्रेवी वाली सब्जी में पिसा लहसुन पानी में थोडा घोलकर मसाले में डालें। लहसुन का फ्लेवर अच्छा आएगा।

नमकीन नींबू पानी बनाते समय उसमें जलजीरा पाउडर मिलाएं और साथ में महीन पिसा पुदीना भी डालें। स्वाद अच्छा लगेगा।

खीर बनाते समय चावलों को हल्का सा घी में भूनकर फुल क्रीम दूध मिलाएं तो खीर स्वादिष्ट और गाढी बनेगी।

किसी भी खाने को सर्व करने से पहले मलाई को अच्छी तरह फेंट कर मोटी स्टील की छलनी में कडछी से हिलाते हुए सर्विंग बाउल में सब्जी के ऊपर गार्निश करने से सब्जी सुन्दर भी लगती है और स्वाद भी अच्छा लगता है। (उर्वशी)

प्रथम पृष्ठ का शेषांश.....

असम राज्य सूचना आयोग की सख्त कार्रवाई,....

तक मांगी गई जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई। इसके अलावा आयोग द्वारा जारी नोटिस का कोई जवाब नहीं दिया गया और सुनवाई की निर्धारित तिथियों पर भी संबंधित अधिकारी उपस्थित नहीं हुए। इसे सूचना का अधिकार अधिनियम का गंभीर उल्लंघन मानते हुए आयोग ने अधिनियम की धारा २०(१) के तहत २० हजार रुपये का आर्थिक दंड लगाया है।आयोग द्वारा जारी पत्र में स्पष्ट किया गया है कि आदेश प्राप्त होने के ३० दिनों के भीतर जुर्माने की राशि जमा करनी होगी। निर्धारित अवधि में राशि जमा नहीं करने पर अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।प्राप्त जानकारी के अनुसार, लखीपुर विधानसभा क्षेत्र के पायलापूल निवासी एवं व्यवसायी राकेश सिंह ने ३० जुलाई २०२४ को सूचना का अधिकार अधिनियम, २००५ के तहत लखीपुर महकमा कार्यालय तथा उसके अधीन खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग से संबंधित विभिन्न जानकारियां मांगते हुए आवेदन किया था।निर्धारित समय सीमा के भीतर सूचना उपलब्ध नहीं कराए जाने पर उन्होंने प्रथम अपील जिला आयुक्त कार्यालय में दायर की। वहां से भी समय पर कोई उत्तर नहीं मिलने पर राकेश सिंह ने असम राज्य सूचना आयोग का दरवाजा खटखटाया। आयोग ने अपील स्वीकार करते हुए मामले की सुनवाई शुरू की और २३ अप्रैल तथा ८ जून २०२६ को दो अलग-अलग तिथियां निर्धारित कीं। हालांकि दोनों ही सुनवाई में संबंधित अधिकारी अनुपस्थित रहे। इतना ही नहीं, आयोग द्वारा जारी कारण बताओ नोटिस का भी कोई उत्तर नहीं दिया गया और न ही आयोग के समक्ष कोई लिखित स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया गया। इन परिस्थितियों को गंभीर मानते हुए असम राज्य सूचना आयोग ने मेमो संख्या 575419/CCR/40/2024/19 दिनांक ३ जुलाई २०२६ के माध्यम से अधिनियम की धारा २०(१) के तहत २० हजार रुपये का जुर्माना लगाने का आदेश जारी किया। आयोग ने यह भी उल्लेख किया है कि यद्यपि राकेश सिंह द्वारा दायर अपील का निस्तारण कर दिया गया है, लेकिन जुर्माने की राशि ३० दिनों के भीतर जमा नहीं होने पर आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। इस पूरे मामले के सामने आने के बाद यह सवाल भी उठने लगे हैं कि आरटीआई के तहत मांगी गई जानकारी आखिर क्यों उपलब्ध नहीं कराई गई। हालांकि सूचना आयोग के आदेश में दंड लगाने के कारणों का उल्लेख किया गया है, लेकिन सूचना उपलब्ध न कराने के पीछे के कारणों पर संबंधित अधिकारी की ओर से कोई आधिकारिक स्पष्टीकरण सामने नहीं आया है। ऐसे में यह मामला प्रशासनिक पारदर्शिता और जवाबदेही को लेकर चर्चा का विषय बना हुआ है।

लखीपुर विधानसभा क्षेत्र की विकास परियोजनाओं की...

परियोजनाओं का कार्य निर्धारित समयसीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा किया जाए। उन्होंने विकास कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही से बचने तथा आम जनता को समय पर परियोजनाओं का लाभ सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया। बैठक के दौरान विभिन्न योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, आवश्यक प्रशासनिक समन्वय तथा विकास कार्यों में तेजी लाने के लिए आवश्यक कदमों पर भी विस्तृत विचार-विमर्श किया गया।इस अवसर पर जिला परिषद के अध्यक्ष कंकन नारायण सिकिदार, जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) डोरोथी सुचियांग, एसीएस, सहायक आयुक्त पीयूष राज, आईएएस, जिला परिषद के उपाध्यक्ष देबज्योति बाउरी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

संघ कभी सूर्यास्त नहीं देखता, सदैव चिरयुवा .....

दृष्टि और विचारों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि डॉ. हेडगेवार व्यक्तिपूजा और व्यक्तिवाद के विरोधी थे। उनका मानना था कि किसी भी संगठन की वास्तविक शक्ति उसके कार्यकर्ताओं की समान भागीदारी, अनुशासन और समर्पण में निहित होती है। इसी सोच के अनुरूप उन्होंने संघ की कार्यप्रणाली विकसित की, जिसमें सभी स्वयंसेवकों के लिए समान अवसर और समान सम्मान की भावना है।

प्रो. सिन्हा ने कहा कि डॉ. हेडगेवार के प्रत्येक संगठनात्मक प्रयोग का मूल उद्देश्य समाज का संगठन और मानव कल्याण था। उन्होंने कहा कि समाज को जाति, भाषा, क्षेत्र और संकीर्ण पहचान के आधार पर विभाजित करने वाली प्रवृत्तियां राष्ट्रीय एकता के लिए चुनौती हैं। जब तक समाज इन विभाजनों से ऊपर उठकर स्वयं को एक राष्ट्र के रूप में नहीं देखेगा, तब तक एक सशक्त और संगठित भारत का निर्माण संभव नहीं होगा।राकेश सिन्हा ने सभी नागरिकों से जाति, अस्पृश्यता, क्षेत्रीयता और भाषाई भेदभाव जैसी संकीर्णताओं से ऊपर उठकर स्वयं को भारत माता की संतान मानने और सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि समाज में स्थायी परिवर्तन केवल सकारात्मक वैचारिक जागरण और सामाजिक संगठन के माध्यम से ही संभव है।अपने संबोधन में प्रो. सिन्हा ने कहा कि केवल बाहरी धार्मिक आक्रामकता या किसी संकट के कारण उत्पन्न एकता स्थायी नहीं होती। समाज की वास्तविक एकता उसके साझा सांस्कृतिक मूल्यों, पारस्परिक विश्वास और राष्ट्रीय चेतना पर आधारित होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और शासन दो अलग-अलग संस्थाएं हैं तथा संघ की विचारधारा किसी भी सरकार या शासक की इच्छा के अनुसार संचालित नहीं होती, बल्कि वह अपने मूल सिद्धांतों और संगठनात्मक दृष्टिकोण के अनुरूप कार्य करता है।कार्यक्रम का संचालन उत्तर असम प्रांत के प्रचार प्रमुख किशोर शिवम ने किया। समापन सत्र में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग की अध्यक्ष प्रो. कल्पना बोरा ने अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे वैचारिक कार्यक्रम समाज और युवाओं के बीच संवाद तथा चिंतन की नई दिशा प्रदान करते हैं।

सोनाई नदी में अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने से ....

शव को दोबारा नदी की धारा में बहा दिया। इस घटना को लेकर क्षेत्रवासियों में रोष है। उनका कहना है कि यदि पुलिस समय पर पहुंचती, तो शव की पहचान और प्रारंभिक जांच की प्रक्रिया आसानी से शुरू की जा सकती थी। इधर, पिछले चार दिनों से लापता मोनियारखाल चाय बागान क्षेत्र के निवासी प्रजा राजभर के परिजन भी शव की पहचान के लिए घटनास्थल पर पहुंचे थे। हालांकि, उनके पहुंचने से पहले ही शव को नदी में बहा दिया गया। समाचार लिखे जाने तक शव की पहचान नहीं हो सकी थी। घटना को लेकर पुलिस की आगे की कार्रवाई और जांच पर अब स्थानीय लोगों की नजरें टिकी हैं।

असम विश्वविद्यालय में सोमवार से सप्ताहव्यापी लैंगिक संवेदनशीलता कार्यशाला

प्रे.सं. शिलचर, १८ जुलाई: असम विश्वविद्यालय में २० से २५ जुलाई तक 'जेंडर सेंसिटाइजेशन, पॉश (POSH) अधिनियम एवं महिला सशक्तिकरण' विषय पर सप्ताहव्यापी कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम का संयुक्त आयोजन विश्वविद्यालय की आंतरिक शिकायत समिति (खउउ) तथा मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (चचढढउ), असम विश्वविद्यालय चैप्टर द्वारा किया जा रहा है। कार्यशाला में देशभर के प्रतिष्ठित शिक्षाविद्, प्रशासक एवं विषय-विशेषज्ञ भाग लेंगे। कार्यशाला का उद्घाटन सत्र २० जुलाई को प्रातः १०:०० बजे विश्वविद्यालय के बिपिन चंद्र पाल सेमिनार हॉल में आयोजित होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. राजीव मोहन पंत करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता उपस्थित रहेंगी। स्वागत भाषण आंतरिक शिकायत समिति की अध्यक्ष प्रो. करबी दत्ता चौधरी देंगी। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. प्रदोष किरण नाथ, एमएमटीटीसी के निदेशक प्रो. रमैया बालकृष्णन, उपनिदेशक प्रो. अजय कुमार सिंह सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहेंगे। कार्यशाला में प्रमुख वक्ताओं एवं संसाधन विशेषज्ञों के रूप में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलसचिव प्रो. एम. डी. महताब आलम रिजवी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मानबेन्द्र दत्ता चौधरी, कलकत्ता विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति प्रो. शांता दत्ता डे, नई दिल्ली स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ सेक्रेटेरियट ट्रेनिंग एंड मैनेजमेंट (खढढच) की संयुक्त निदेशक नमिता मलिक, जादवपुर विश्वविद्यालय की आंतरिक शिकायत समिति की बाह्य सदस्य डॉ. अनिंदिता बंद्योपाध्याय तम्टा, एनआईटी दुर्गापुर की आईसीसी अध्यक्ष प्रो. सीमा सरकार, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति प्रो. अन्नपूर्णा नौटियाल तथा सेवानिवृत्त शिक्षाविद् प्रो. विनोद नौटियाल अपने विचार साझा करेंगे। आयोजकों की ओर से डॉ. सोभन कुमार बेदाझा ने बताया कि कार्यशाला में लैंगिक संवेदनशीलता, कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम (झजडक) अधिनियम, महिला अधिकार, लैंगिक समानता तथा महिला सशक्तिकरण से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा होगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा अन्य प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी से यह कार्यशाला अत्यंत सार्थक एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

डिब्रूगढ़ जिले में मोबाइल मेडिकल यूनिट बनी स्वास्थ्य सेवा की नई पहचान - स्वास्थ्य विभाग की उल्लेखनीय सफलता

डिब्रूगढ़: (अर्णव शर्मा) १८ जुलाई : राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, असम की मोबाइल मेडिकल यूनिट (MMU) आज डिब्रूगढ़ जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का सबसे सशक्त माध्यम बन चुकी है। जिला स्वास्थ्य विभाग, डिब्रूगढ़ के सतत प्रयासों, दूरदर्शी योजना और जमीनी क्रियान्वयन के कारण MMU ने जिले के स्वास्थ्य परिदृश्य में एक नई पहचान बनाई है। विशेषकर जिले के दूरस्थ, सीमांत और चाय बागान क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए यह सेवा वरदान साबित हो रही है।

डिब्रूगढ़ जिले में वर्तमान में कुल २१ मोबाइल मेडिकल यूनिट कार्यरत हैं। इनमें से २० MMU जिले के १४७ चाय बागानों के लिए समर्पित हैं, जबकि १ MMU गैर-चाय बागान एवं अन्य वंचित क्षेत्रों में सेवाएं दे रही है। इस व्यवस्थित मॉडल के कारण चाय बागान समुदाय को उनके द्वार पर ही विशेषज्ञ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो पाई है। प्रत्येक चचण में एक चिकित्सक, GNM नर्स, लैब तकनीशियन, नेत्र सहायक और फार्मासिस्ट की पूर्ण टीम तैनात है। यह इकाई एक 'चलते-फिरते अस्पताल' की तरह काम करती है, जहाँ जझऊ परामर्श, डऋढ, घऋढ, उइउ, एउऋ जैसी प्रयोगशाला जांचें, नेत्र परीक्षण एवं परामर्श के साथ-साथ निःशुल्क दवाएं भी प्रदान की जाती हैं। डिब्रूगढ़ स्वास्थ्य विभाग की योजना और निगरानी के परिणामस्वरूप चचण ने २०२४-२५ वित्तीय वर्ष में ३,९१,४०३ लोगों की, पिछले वित्तीय वर्ष २०२५-२६ में ६३०० शिविरों का सफल आयोजन किया और ३,९४,४२८ लोगों की स्वास्थ्य स्क्रीनिंग संभव हो पाई। चालू वित्तीय वर्ष में (अप्रैल ,२०२६- जून,२०२६) अब तक ९८,५०३ लोगों की स्क्रीनिंग की जा चुकी है, जिसमें समय पर जांच और परामर्श के द्वारा कई गंभीर बीमारियों की शीघ्र पहचान कर उपचार सुनिश्चित किया गया। MMU में स्क्रीनिंग के साथ-साथ स्वास्थ्य शिक्षा, माइकिंग और ऑडियो-विजुअल माध्यमों से जागरूकता कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं, जिससे लोगों में स्वास्थ्य के प्रति समझ और सरकारी योजनाओं के प्रति विश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।MMU के कारण डिब्रूगढ़ जिले की चाय बागानों में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, कुपोषण, एनीमिया और गैर-संचारी रोगों के प्रबंधन में सकारात्मक बदलाव आया है। समय पर उपचार और जांच की सुविधा मिलने से रेफरल मामलों में कमी आई है और जिला अस्पतालों पर दबाव भी घटा है। इस प्रकार MMU न केवल उपचार का माध्यम बनी है, बल्कि रोकथाम और जागरूकता की दिशा में भी एक मजबूत स्तंभ सिद्ध हुई है।जिला स्वास्थ्य समिति, डिब्रूगढ़ 'सबके लिए सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य' के संकल्प के साथ कार्य कर रही है। चचण के माध्यम से विभाग यह सुनिश्चित कर रहा है कि जिले का कोई भी नागरिक, चाहे वह कितने भी दूरस्थ क्षेत्र में क्यों न रहता हो, स्वास्थ्य सेवा से वंचित न रहे। यह पहल डिब्रूगढ़ स्वास्थ्य विभाग की प्रतिबद्धता और सफल क्रियान्वयन का जीवंत उदाहरण है।

शिवसागर में ८०वें स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियों का रिव्यू

शिवसागर: (अर्णव शर्मा) १८ जुलाई : ८०वें स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारी के लिए, शिवसागर जिला प्रशासन ने जिला कमिश्नर मृदुल यादव की अध्यक्षता में जिला कमिश्नर ऑफिस के सुकाफा कॉन्फ्रेंस हॉल में एक हाई-लेवल कोऑर्डिनेशन मीटिंग बुलाई।मीटिंग में जिले के ऑफिशियल स्वतंत्रता दिवस प्रोग्राम के पूरे इंतजामों का रिव्यू किया गया और समारोह को आसानी से, डिसिप्लिन में और शांति से कराने के लिए अलग-अलग सरकारी डिपार्टमेंट की जम्मेिदारियों को बताया गया।अधिकारियों को संबोधित करते हुए, जिला कमिश्नर ने मिलकर कोशिश करने की अहमियत पर जोर दिया और सभी डिपार्टमेंट को निर्देश दिया कि वे राष्ट्रीय कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए अपनी-अपनी ड्यूटी ईमानदारी और कुशलता से निभाएं।

मीटिंग में जिला परिषद के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर सतीश चंद्र ठाकुरिया; एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर लुकुमोनी बोरा, सोनोत्रिष्णा घरफलिया, मीनाक्षी परमे और गौरीप्रिया देवरी; इलेक्शन ऑफिसर अदिति नियोग; असिस्टेंट कमिश्नर अन्वेषा ठाकुर और नीलाक्षी भुयान शामिल हुए; अलग-अलग सरकारी डिपार्टमेंट के अधिकारियों, सीनियर सिटिजन और आम लोगों के दूसरे जाने-माने लोगों के साथ।जलि़ा एडमिनिस्ट्रेशन से उम्मीद है कि वह सभी लॉजिस्टिक, सिक्योरिटी, प्रोटोकॉल और सेरेमोनियल अरेंजमेंट को काफी पहले फाइनल कर लेगा ताकि यह पक्का हो सके कि ८०वां स्वतंत्रता दिवस पूरे शिवसागर जलि़े में सम्मान, देशभक्ति और लोगों की भागीदारी के साथ मनाया जाए।

असम के चराईदेउ में अभयपुर रिजर्व फॉरेस्ट के पास जंगली हाथी मरा हुआ मिला

चराईदेउ: (अर्णव शर्मा) १८ जुलाई : असम के चराईदेउ जलि़े में अभयपुर रिजर्व फॉरेस्ट के पास शनिवार को एक जंगली हाथी रहस्यमयी हालात में मरा हुआ मिला, जिससे वाइल्डलाइफ अधिकारियों और स्थानीय लोगों में चिंता फैल गई।शुरुआती रिपोर्ट के मुताबिक, हाथी खाने की तलाश में रिजर्व फॉरेस्ट से बाहर निकला था, इससे पहले कि उसकी लाश जंगल के किनारे मिली। मौत का सही कारण अभी पता नहीं चला है। जानकारी मिलते ही, सोनारी पुलिस स्टेशन के लोग और रीजनल फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के अधिकारी मौके पर पहुँचे और जाँच शुरू की। मौत का कारण पता लगाने के लिए जानवरों के डॉक्टर की टीम के पोस्टमॉर्टम करने की उम्मीद है, जबकि फॉरेस्ट अधिकारियों ने मौके से शुरुआती सबूत इकट्ठा किए हैं। अधिकारियों ने बिजली का झटका, जहर, या इंसान-वाइल्डलाइफ टकराव के किसी भी दूसरे तरीके की संभावना से इनकार नहीं किया है। अधिकारियों ने कहा कि मौत का आखिरी कारण फॉरेंसिक और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चलेगा। इस घटना ने एक बार फिर असम में इंसान-हाथी टकराव की बढ़ती चुनौती को सामने ला दिया है, जहाँ जंगली हाथी अक्सर रहने की जगह में गड़बड़ी और घटते प्राकृतिक संसाधनों के कारण खाने की तलाश में जंगल छोड़ देते हैं। चराईदेउ के अभयपुर रिजर्व फॉरेस्ट में हाल के सालों में हाथियों के आने-जाने से जुड़ी कई घटनाएँ हुई हैं, जिससे बार-बार मजबूत बचाव उपायों और वाइल्डलाइफ कॉरिडोर की सुरक्षा की माँग उठ रही है। फॉरेस्ट अधिकारियों ने भरोसा दिलाया है कि पूरी जाँच चल रही है और अगर कोई गड़बड़ी पाई जाती है तो जरूरी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

अरुणाचल कैबिनेट ने 'टीम अरुणाचल' के १० साल पूरे होने का जश्न मनाया

प्रस्ताव में मुख्यमंत्री पेमा खांडू के नेतृत्व में एक दशक के सुधारों की तारीफ की गई, इंफ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा, टूरिज्म और भलाई में हुई तरक्की पर जोर दिया गया

ईटानगर:(अर्णव शर्मा) १८ जुलाई : अरुणाचल प्रदेश कैबिनेट ने मुख्यमंत्री पेमा खांडू के नेतृत्व में 'टीम अरुणाचल' के १० साल पूरे होने के मौके पर एकमत से एक प्रस्ताव पास किया है, जिसमें पूरे राज्य में शांति, सम्मान, खुशहाली और सबको साथ लेकर चलने वाले विकास के लिए अपना वादा दोहराया गया है।कैबिनेट ने मुख्यमंत्री खांडू को इस अहम कामयाबी पर बधाई दी और अरुणाचल प्रदेश के लोगों की भलाई और पूरी तरक्की के लिए काम करते रहने का वादा किया।प्रस्ताव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चुने हुए प्रधानमंत्री के तौर पर ४,३९९ दिन पूरे करने पर भी बधाई दी गई, जिससे वह लगातार चुने हुए कार्यकाल में सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले प्रधानमंत्री बन गए। कैबिनेट ने २०१४ से नॉर्थईस्ट, खासकर अरुणाचल प्रदेश के विकास को तेज करने में लगातार मदद के लिए भारत सरकार का शुक्रिया अदा किया।प्रस्ताव के मुताबिक, पिछले दशक में राज्य के लिए उम्मीदों और उम्मीदों का एक नया दौर शुरू हुआ है, जो 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के सिद्धांतों और 'रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म' के विजन से गाइडेड है।पिछले दस सालों की उपलब्धियों पर रोशनी डालते हुए, कैबिनेट ने कहा कि सरकार ने युवाओं, महिलाओं, किसानों, छात्रों, सीनियर सिटिजन और समाज के दूसरे तबकों की उम्मीदों को पूरा करने पर फोकस किया है। इसने एजुकेशन, स्पोर्ट्स, महिला सेल्फ-हेल्प ग्रुप, एंटरप्रेन्योरशिप, स्किल डेवलपमेंट, स्टार्टअप प्रमोशन, हैंडलूम और हैंडीक्राफ्ट, खेती, बागवानी और टूरिज्म में की गई पहलों को इनक्लूसिव ग्रोथ में अहम योगदान देने का क्रेडिट दिया।कैबिनेट ने आगे कहा कि अरुणाचल प्रदेश ने इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी में शानदार तरक्की देखी है, जो कभी स्ट्रेटेजिक नजरअंदाज से प्रभावित क्षेत्र से भारत की ग्रोथ स्टोरी का एक जरूरी हिस्सा बन गया है। सेलिब्रेशन के हिस्से के तौर पर, मुख्यमंत्री पेमा खांडू, उपमुख्यमंत्री चौना मीन और दूसरे बड़े लोगों ने टीम अरुणाचल के दस साल लंबे सफर के पूरा होने पर एक खास यादगार पोस्टेज स्टैम्प जारी किया। इस प्रस्ताव में विकास की रफ्तार बनाए रखने और एक खुशहाल, सबको साथ लेकर चलने वाला और आत्मनिर्भर अरुणाचल प्रदेश बनाने की दिशा में काम करते रहने के सरकार के इरादे को फिर से पक्का किया गया।

जोरहाट डिस्ट्रिक्ट हेल्थ सोसाइटी ने हेल्थ और एंटरप्रेन्योरशिप के जरिए किशोर लड़कियों को मजबूत बनाने के लिए प्रोग्राम शुरू किए

जोरहाट:(अर्णव शर्मा) १८ जुलाई : असम में किशोर लड़कियों को मजबूत बनाने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए, जोरहाट डिस्ट्रिक्ट हेल्थ सोसाइटी ने चाय बागानों और ग्रामीण समुदायों में हेल्थकेयर जागरूकता बढ़ाने, बाल विवाह रोकने और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के मकसद से कई पहल शुरू की हैं।जोरहाट डिस्ट्रिक्ट हेल्थ सोसाइटी ने, एडिशनल चीफ मेडिकल एंड हेल्थ ऑफिसर (पब्लिक हेल्थ), डॉ. भक्तिमय भट्टाचार्जी के नेतृत्व में, जिले के चाय बागानों और पिछड़े गांवों के इलाकों में किशोर लड़कियों को मजबूत बनाने के लिए कई प्रोग्राम शुरू किए हैं।इस पहल का मकसद महिलाओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा को बढ़ावा देना, बाल विवाह और टीनएज प्रेग्नेंसी को रोकना है, साथ ही लड़कियों को छोटे पैमाने पर खेती-बाड़ी करके आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने के लिए बढ़ावा देना है।इस प्रोग्राम के हिस्से के तौर पर, जिला प्रशासन और डिस्ट्रिक्ट हेल्थ सोसाइटी की मदद से चाय बागानों और ग्रामीण इलाकों में १० किशोर लड़कियों के क्लब पहले ही बनाए जा चुके हैं। ये क्लब महिलाओं की हेल्थ, न्यूट्रिशन, पर्सनल हाइजीन, मेंटल हेल्थ और तंबाकू और ड्रग्स के गलत इस्तेमाल के नुकसानदायक असर पर रेगुलर अवेयरनेस सेशन करेंगे।इस पहल की एक खास बात मशरूम की खेती की ट्रेनिंग है, जिसे इसके मजबूत कमर्शियल पोटेंशियल के लिए चुना गया है। अधिकारियों ने कहा कि ट्रेनिंग से लड़कियों को रोजी-रोटी के मौके मिलेंगे, साथ ही कम्युनिटी को खाने लायक मशरूम की पहचान करने और जहरीली किस्मों के गलती से खाने से होने वाली मौतों को रोकने के बारे में भी जानकारी मिलेगी।मशरूम की खेती का प्रोग्राम असम एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी (AAU) के टेक्निकल सपोर्ट से चलाया जा रहा है और हाल ही में सिन्नामारा टी एस्टेट में शुरू हुआ है। पहले ट्रेनिंग सेशन में एडोलसेंट गर्ल्स क्लब की लगभग ५० मेंबर्स ने हिस्सा लिया। यह प्रोग्राम सोशल वर्कर मिनोती पूरन नयना, सिन्नामारा टी एस्टेट हॉस्पिटल की कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर कबायश्री महंता और सीनियर मैनेजर ऐचुत बरन चौधरी के सपोर्ट से ऑर्गनाइज किया गया था।अधिकारियों ने बताया कि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की भागीदारी पक्का करने के लिए रविवार और छुट्टियों के दिन क्लब की एक्टिविटीज, जिसमें हेल्थ अवेयरनेस कैंपेन और एग्रीकल्चरल एंटरप्रेन्योरशिप ट्रेनिंग शामिल हैं, की जाएंगी। यह पहल नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (छएझ) २०२० के साथ भी जुड़ी हुई है, जो स्टूडेंट्स के बीच कम्युनिटी एंगेजमेंट और प्रैक्टिकल फील्डवर्क को बढ़ावा देती है, साथ ही टीनएज लड़कियों के लिए अवेयरनेस, हेल्थ और रोजी-रोटी के मौकों को मजबूत करती है।जोरहाट डिस्ट्रिक्ट हेल्थ सोसाइटी का मानना ??है कि यह प्रोग्राम चाय बागानों और ग्रामीण समुदायों में गंभीर सामाजिक चुनौतियों का समाधान करते हुए, ज़्यादा हेल्दी, ज़्यादा कॉन्फिडेंट और आर्थिक रूप से मजबूत युवतियों को बनाने में मदद करेगा।

अरुणाचल कैबिनेट ने हेल्थकेयर और वेलफेयर सर्विसेज को मजबूत करने के लिए CM CARES को मंजूरी दी

ईटानगर:(अर्णव शर्मा) १८ जुलाई : पब्लिक हेल्थकेयर और सोशल सिक्योरिटी को बढ़ाने के एक अहम कदम में, अरुणाचल प्रदेश कैबिनेट ने, जिसकी अध्यक्षता मुख्यमंत्री पेमा खांडू कर रहे हैं, उच उअठएड (चीफ मिनिस्टर्स कॉम्प्रिहेंसिव एक्शन फॉर रेसिलिएंट, इक्विटेबल एंड हेल्दी स्टेट) को लॉन्च करने की मंजूरी दे दी है। यह एक खास पहल है जिसका मकसद पूरे राज्य में हेल्थकेयर तक पहुंच, किफायत और वेलफेयर सर्विसेज के तालमेल को बेहतर बनाना है।इस अम्ब्रेला प्रोग्राम का मकसद मौजूदा हेल्थ और वेलफेयर स्कीमों को जोड़ना और उन्हें आसान बनाना है, ताकि यह पक्का हो सके कि नागरिकों, खासकर दूर-दराज और पिछड़े इलाकों में रहने वाले लोगों को समय पर और अच्छी क्वालिटी की हेल्थकेयर के साथ-साथ बेहतर फाइनेंशियल सुरक्षा मिले। इस पहल से सरकारी डिपार्टमेंट और वेलफेयर प्रोग्राम के बीच बेहतर तालमेल के जरिए सर्विस में अंतर कम होने की उम्मीद है।उसी कैबिनेट मीटिंग में, सरकार ने मिशन सुरक्षा को भी मंजूरी दी, जो रोकथाम, इलाज, रिहैबिलिटेशन और लागू करने के उपायों के जरिए ड्रग्स और नशीली दवाओं के गलत इस्तेमाल से निपटने के लिए एक बड़ी पहल है। इसके अलावा, कैबिनेट ने टीबी को खत्म करने, बीमारी का जल्दी पता लगाने और बेहतर पब्लिक हेल्थ आउटरीच पर फोकस करते हुए ३० दिन का राज्यव्यापी इंटीग्रेटेड हेल्थ कैंपेन शुरू किया। ये फैसले हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, सोशल प्रोटेक्शन बढ़ाने और अरुणाचल प्रदेश के लोगों के जीवन की पूरी क्वालिटी को बेहतर बनाने के लिए राज्य सरकार के कमिटमेंट को दिखाते हैं। कैबिनेट ने पूरे राज्य में पब्लिक सर्विस डिलीवरी और इनक्लूसिव ग्रोथ को बढ़ाने के मकसद से कई बड़े गवर्नेंस और डेवलपमेंट सुधारों को भी मंजूरी दी।

डिब्रूगढ़ में बड़ा ड्रग भंडाफोड़; पुलिस ने १.३५ kg हेरोइन, १४.०६ लाख रुपये कैश जब्त किया; एक गिरफ्तार, मुख्य आरोपी फरार

डिब्रूगढ़: (अर्णव शर्मा) १८ जुलाई : ड्रग तस्करी पर एक बड़ी कार्रवाई करते हुए, डिब्रूगढ़ पुलिस ने टिंगखोंग पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र में एक सफल एंटी-नारकोटिक्स ऑपरेशन चलाया, जिसमें १०७ साबुन के डिब्बों में छिपाई गई १.३५ किलोग्राम हेरोइन और १४,०६,६०० रुपये कैश जब्त किया गया।यह ऑपरेशन खास खुफिया जानकारी मिलने के बाद किया गया था। छापे के दौरान, पुलिस ने एक बोलेरो पिकअप गाड़ी और आरोपी के घर की तलाशी ली, जिसमें गैर-कानूनी नारकोटिक्स तस्करी से जुड़ा संदिग्ध प्रतिबंधित सामान और कैश बरामद किया गया।पुलिस ने मुख्य आरोपी की पत्नी श्रीमती गुलापी गोगोई को टिंगखोंग पुलिस स्टेशन के तहत महमोरा कपौहुवा गांव से पकड़ा। हालांकि, मुख्य आरोपी, मनोज गोगोई (२९), जो मृदुल गोगोई का बेटा है, गिरफ्तारी से बचने में कामयाब रहा और अभी फरार है। उसे ढूंढने और पकड़ने के लिए तलाशी शुरू कर दी गई है।नारकोटिक्स और कैश के अलावा, पुलिस ने एक बोलेरो पिकअप और एक महिंद्रा स्कॉर्पियो भी जब्त की, माना जा रहा है कि इनका इस्तेमाल गैर-कानूनी ड्रग के धंधे में किया गया था।जब्ती में १०७ साबुन के डिब्बों में छिपाई गई १.३५ ङ्गस हेरोइन, १४,०६,६०० रुपये कैश, एक बोलेरो पिकअप और एक महिंद्रा स्कॉर्पियो शामिल हैं।डिब्रूगढ़ पुलिस ने कहा कि यह ऑपरेशन जिले में नारकोटिक्स नेटवर्क को खत्म करने और ड्रग ट्रैफिकिंग के खतरे को रोकने के लिए उसके लगातार कमिटमेंट को दिखाता है। इसमें शामिल दूसरे लोगों की पहचान करने और गैर-कानूनी धंधे के पीछे के बड़े नेटवर्क का पता लगाने के लिए आगे की जांच चल रही है।

डिब्रूगढ़ में क्लाइमेट-रेजीलिएंट अर्बन प्लानिंग पर इनसेप्शन वर्कशॉप हुई

डिब्रूगढ़: (अर्णव शर्मा) १८ जुलाई : शनिवार को डिब्रूगढ़ डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ऑफिस के कॉन्फ्रेंस हॉल में मेट्रोपॉलिटन प्लानिंग कमेटी (चझउ) की एक मीटिंग हुई। इसमें 'दस शहर, एक पहल' प्रोग्राम के तहत 'असम में शहरी बाढ़ और गर्मी के खतरों के लिए क्लाइमेट-रेजीलिएंट स्ट्रैटेजी' नाम के प्रोजेक्ट के लिए आने वाली इनसेप्शन वर्कशॉप पर चर्चा हुई। यह प्रोजेक्ट असम सरकार के टाउन एंड कंट्री प्लानिंग डायरेक्टरेट द्वारा जनाग्रह और उ-ढढएझ के साथ मिलकर लागू किया जा रहा है, जिसका मकसद बाढ़ और बहुत ज़्यादा गर्मी के बढ़ते खतरों के खिलाफ शहरी रेजिलिएंस को मजबूत करना है। मीटिंग के दौरान, अधिकारियों को प्रोजेक्ट के मकसद, दायरे और लागू करने की स्ट्रैटेजी के बारे में बताया गया। हिस्सा लेने वालों ने शहरी बाढ़ और गर्मी से जुड़े खतरों से निपटने के लिए किए जा रहे मौजूदा उपायों का भी रिव्यू किया और मिलकर प्लानिंग और स्टेकहोल्डर की भागीदारी से डिब्रूगढ़ में क्लाइमेट रेजिलिएंस को बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। मीटिंग में मुख्य स्टेकहोल्डर्स से इनपुट मांगे गए ताकि शहरी बाढ़ और बढ़ते तापमान के असर को कम करने के लिए असरदार और टिकाऊ स्ट्रैटेजी बनाई जा सकें, साथ ही क्लाइमेट से जुड़ी चुनौतियों के लिए शहर की तैयारी को

बेहतर बनाया जा सके। मीटिंग में डिब्रूगढ़ म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन की नई कमिश्नर शिवानी जर्नागेल, IAS, म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के सीनियर अधिकारी, अलग-अलग डिपार्टमेंट के प्रतिनिधि, जनाग्रह के अधिकारी और दूसरे स्टेकहोल्डर्स शामिल हुए। यह पहल डिब्रूगढ़ में ज़्यादा क्लाइमेट-रेजीलिएंट शहरी इकोसिस्टम बनाने की दिशा में एक जरूरी कदम है और यह असम की टिकाऊ और आपदा-रेजीलिएंट शहरी डेवलपमेंट को बढ़ावा देने की बड़ी कोशिशों से मेल खाती है।

अर्नब शर्माआरटीआई कानून के उल्लंघन पर लखीपुर के तत्कालीन एसडीओ (सिविल) पर २० हजार रुपये का जुर्माना।

प्रथम पृष्ठ का शेषांश.....

श्रीहरिकोटा स्पेस सेंटर से विक्रम-१ का सफल....

बूस्टर और ३डी-प्रिंटेड लिक्विड इंजन से बनाया गया है; विक्रम-१ भारत की बढती प्राइवेट-सेक्टर लॉन्च क्षमताओं को दिखाता है।- विक्रम-१ का प्रक्षेपण 'मिशन आगमन' के तहत १२ जुलाई से ४ अगस्त, २०२६ के बीच निर्धारित है। इस मिशन की सफलता भारत की स्वदेशी वाणिज्यिक प्रक्षेपण क्षमता और अंतरिक्ष क्षेत्र में किए गए सरकारी सुधारों की प्रभावशीलता को प्रदर्शित करेगी।- इस मिशन के तहत कई ग्राहक पेलोड को पृथ्वी की निचली कक्षा में ४५० किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थापित किया जाएगा। इनमें स्काईरूट का स्कोप उपग्रह, डीक्यूब्ड का प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पेलोड, ग्रहा स्पेस का सोलारास एस-३ उपग्रह तथा कॉस्मोसर्व स्पेस की 'एम्ब्रेस' नामक रोबोटिक भुजा शामिल है। 'एम्ब्रेस' को अंतरिक्ष में मौजूद मलबे को पकडने के लिए विकसित किया गया है।- विक्रम-१ की पहली उडान में दो विशेष वस्तुएं भी भेजी जाएंगी'कॉस्मिक ब्लूम', जो फूल के आकार की एक कलाकृति है और १८ कैरेट सोने से बना एक सूक्ष्म रॉकेट। इस सूक्ष्म रॉकेट पर सी. वी. रमन, विक्रम साराभाई और डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की अत्यंत सूक्ष्म आकृतियां उकेरी गई हैं, जिनमें से प्रत्येक का आकार चावल के एक दाने से भी छोटा है। यह भारत के महान वैज्ञानिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का एक प्रयास है।

भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी को सक्षम बनाने वाले प्रमुख सुधार -भारत सरकार ने अंतरिक्ष क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधारों के माध्यम से निजी क्षेत्र की भागीदारी बढाने और नवाचार के नए अवसरों को प्रोत्साहित करने की दिशा में कई अहम कदम उठाए हैं।भारत सरकार ने भारतीय अंतरिक्ष नीति, २०२३ अधिसूचित की है, जिसके तहत गैर-सरकारी संस्थाओं को अंतरिक्ष क्षेत्र की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में भागीदारी की अनुमति दी गई है। इस नीति ने भारत में निजी क्षेत्र के लिए अंतरिक्ष गतिविधियों के नए अवसर खोले हैं। इसका उद्देश्य प्रौद्योगिकी में नवाचार को बढावा देना, नए विचारों और उद्यमों को प्रोत्साहित करना तथा अंतरिक्ष क्षेत्र में निवेश को बढाना है। साथ ही, यह नीति अंतरराष्ट्रीय सहयोग को भी बढावा देती है और अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग एवं अन्वेषण के लिए वैश्विक साझेदारियों को मजबूत करती है। ये सभी कदम मिलकर एक महत्वपूर्ण बदलाव की ओर अग्रसर हैं।

एकल-खिडकी अंतरिक्ष नियामक -भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं की अंतरिक्ष गतिविधियों को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें आवश्यक अनुमतियां प्रदान करने के लिए एक स्वतंत्र एकल-खिडकी एजेंसी के रूप में कार्य कर रहा है। भारतीय अंतरिक्ष नीति, २०२३ के लागू होने के बाद इन-स्पेस को और अधिक सशक्त बनाया गया है। यह संस्थानों को एक स्पष्ट और स्थिर नियामक ढांचा उपलब्ध कराता है तथा उद्योग की व्यापक भागीदारी को आसान बनाता है। साथ ही, यह इसरो की सुविधाओं, प्रौद्योगिकी और तकनीकी विशेषज्ञता तक पहुंच उपलब्ध कराता है तथा पारदशी दिशा-निर्देशों के माध्यम से अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाता है। जून २०२६ तक इन-स्पेस ने ४,५०० से अधिक संस्थाओं का पंजीकरण, १३३ अनुमतियां जारी की हैं और १०६ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं।इसके अलावा, फरवरी २०२६ तक इन-स्पेस ने वर्ष २०२५ के दौरान भारतीय अंतरिक्ष स्टार्टअप्स में १५ करोड.अमेरिकी डॉलर का निवेश आकर्षित करने में सहायता की, जबकि शीर्ष १० स्टार्टअप्स को इसी मूल्य के पुष्ट वाणिज्यिक ऑर्डर प्राप्त हुए। जून २०२६ तक इन-स्पेस ने ११८ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौतों को सुगम बनाया तथा १८९ संयुक्त परियोजना कार्यान्वयन योजनाओं, प्रौद्योगिकी साझेदारी समझौतों और व्यावसायिक साझेदारी समझौतों पर हस्ताक्षर कराए, जिससे प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण और उद्योग के बीच सहयोग को नई गति मिली।

इन-स्पेस सीड फंड योजना: यह योजना अंतरिक्ष क्षेत्र के स्टार्टअप्स तथा सूक्ष्म और लघु उद्यमों को शुरुआती चरण में वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसका उद्देश्य नई अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों के विकास को बढावा देना है। योजना के तहत पात्र आवेदकों को एक करोड.रुपये तक का अनुदान दिया जाता है। वित्तीय सहायता के साथ-साथ मेंटरशिप, प्रशिक्षण और नेटवर्किंग जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाती हैं, ताकि स्टार्टअप्स को आगे बढने में मदद मिल सके। यह योजना कृषि, आपदा प्रबंधन और शहरी विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आधारित समाधानों के विकास को भी प्रोत्साहित करती है।

१,००० करोड.रुपये का वेंचर कैपिटल (वीसी) कोष: इन-स्पेस के तहत स्थापित इस वेंचर कैपिटल कोष का उद्देश्य अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी को बढावा देना है। यह निधि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और उससे जुडे.क्षेत्रों में कार्यरत उभरते स्टार्टअप्स को शुरुआती चरण में पूंजी उपलब्ध कराती है। साथ ही, यह घरेलू अंतरिक्ष स्टार्टअप्स के उत्पादन को समर्थन देने और इस क्षेत्र में निजी निवेश को आकर्षित करने का भी माध्यम है। इस पहल का लक्ष्य अगले दशक में भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को पाँच गुना बढाना है। यह फंड वित्त वर्ष २०२५-२६ से २०२९-३० तक पांच वर्षों में चरणबद्ध तरीके से उपयोग किया जाएगा, जिसके तहत प्रतिवर्ष १०० करोड.रुपये से २५० करोड.रुपये तक का निवेश किया जाएगा।५०० करोड.रुपये का प्रौद्योगिकी अंगीकरण कोष (टेक्नोलॉजी अडॉप्शन फंड-टीएएफ): इन-स्पेस द्वारा शुरू किए गए इस कोष का उद्देश्य गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा विकसित स्वदेशी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के उपयोग को तेजी से बढावा देना है। यह प्रारंभिक चरण की प्रौद्योगिकियों को व्यावसायिक रूप से सफल उत्पादों में बदलने में भी सहायता करता है। इस योजना के तहत स्टार्टअप्स और एमएसएमई को परियोजना लागत का ६० प्रतिशत तक तथा बडी कंपनियों को ४० प्रतिशत तक वित्तीय सहायता दी जाती है। प्रत्येक परियोजना के लिए अधिकतम २५ करोड. रुपये तक की सहायता प्रदान की जा सकती है।

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का व्यवसायीकरण : न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल)

भारतीय अंतरिक्ष नीति, २०२३ के तहत न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल) को इसरो की वाणिज्यिक शाखा के रूप में परिभाषित किया गया है। एनएसआईएल वाणिज्यिक सिद्धांतों के आधार पर अंतरिक्ष प्रणालियों का निर्माण और अधिग्रहण करती है तथा सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं को एंड-टू-एंड अंतरिक्ष समाधान उपलब्ध कराती है। यह पीएसएलवी के उत्पादन, छोटे उपग्रहों की प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, अंतरिक्ष उत्पादों एवं स्पिन-ऑफ प्रौद्योगिकियों के विपणन तथा उपग्रह सेवाओं के माध्यम से निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढावा देती है।

पिछले कुछ वर्षों में एनएसआईएल के राजस्व में दस गुना वृद्धि दर्ज की गई है, जो वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में उसकी बढती वाणिज्यिक उपस्थिति को दर्शाती है। दिसंबर २०२५ तक इसरो द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों के ७० से अधिक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौतों के माध्यम से उद्योगों को तकनीक उपलब्ध कराई गई, जिससे उनके व्यावसायीकरण को गति मिली। वहीं, जुलाई २०२६ तक एनएसआईएल ने कुल १४१ उपग्रहों का प्रक्षेपण किया है, जिनमें १३८ अंतरराष्ट्रीय/ग्राहक उपग्रह और ३ भारतीय उपग्रह शामिल हैं। यह उपलब्धि वैश्विक स्तर पर भारत की एक विश्वसनीय प्रक्षेपण सेवा प्रदाता के रूप में स्थिति को और मजबूत करती है।

अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए उदार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति

अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नीति को अधिक उदार और निवेशक-अनुकूल बनाया गया है। नई नीति के तहत उपग्रहों के निर्माण और संचालन में ७४ प्रतिशत तक, प्रक्षेपण यान और स्पेसपोर्ट में ४९ प्रतिशत तक तथा उपग्रहों के पुर्जों और उप-प्रणालियों के निर्माण में १०० प्रतिशत तक स्वचालित मार्ग से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी गई है। इस नीति से निवेश बढने, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और संयुक्त अनुसंधान को बढावा मिलने के साथ-साथ भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में कारोबार करना और अधिक सुगम होने की उम्मीद है।

सैटेलाइट का निर्माण और -अंतरिक्ष यान को लॉन्च करने और प्राप्त करने के लिए स्पेसपोर्ट का निर्माण।

सैटेलाइट, ग्राउंड सेगमेंट और उपयोगकर्ता सेगमेंट के लिए कंपोनेंट्स और सिस्टम/सब-सिस्टम का निर्माण करने वाली

सुधार एक सशक्त, प्रतिस्पर्धी और गतिशील अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के प्रति भारत सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। इनसे नवाचार, उद्यमिता और निवेश को बढावा मिल रहा है, आर्थिक विकास को गति मिल रही है और वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की स्थिति लगातार सुदृढ.हो रही है।नीति से प्रगति तक:-सरकार के सुधारों ने भारत के अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र में नवाचार, निजी क्षेत्र की भागीदारी और वाणिज्यिक अवसरों के नए द्वार खोले हैं। इन सुधारों के परिणामस्वरूप प्रक्षेपण सेवाओं, स्वदेशी प्रौद्योगिकी के विकास, सार्वजनिक-निजी भागीदारी और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिली है। अक्टूबर २०२२ में एनएसआईएल ने भारत का पहला समर्पित वाणिज्यिक एलवीएम-३ मिशन सफलतापूर्वक पूरा किया। इस मिशन के तहत वनवेब के ३६ उपग्रहों को पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थापित किया गया, जिससे वैश्विक वाणिज्यिक प्रक्षेपण सेवा बाजार में भारत की स्थिति और मजबूत हुई।नवंबर २०२२ में 'मिशन प्रारंभ' के तहत विक्रम-एस का प्रक्षेपण किया गया। यह भारत का पहला निजी तौर पर विकसित रॉकेट और इन-स्पेस से अनुमोदित देश का पहला निजी प्रक्षेपण था। इस प्रौद्योगिकी प्रदर्शन मिशन में सेंसर से लैस तीन ग्राहक पेलोड भेजे गए, ताकि भविष्य के कक्षीय मिशनों के लिए आवश्यक प्रक्षेपण तकनीकों का परीक्षण किया जा सके।

मई २०२४ में अग्निकुल कॉसमॉस श्रीहरिकोटा स्थित भारत के पहले निजी प्रक्षेपण परिसर 'धनुष' से रॉकेट प्रक्षेपित करने वाली पहली गैर-सरकारी संस्था बनी। इस मिशन में दुनिया के पहले एकल-खंड (सिंगल-पीस) त्रि-आयामी मुद्रित अर्ध-क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन का भी सफल प्रदर्शन किया गया। इन-स्पेस ने पृथ्वी अवलोकन उपग्रह समूह (अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट कॉन्स्टेलेशन) के विकास के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी को मंजूरी दी है। इस परियोजना का नेतृत्व पिक्सेल कर रही है, जबकि ध्रुव स्पेस, सैटश्योर एनालिटिक्स इंडिया और पियरसाइट स्पेस इसके साझेदार हैं। इस पहल का उद्देश्य कृषि, आपदा प्रबंधन, जलवायु निगरानी और शहरी नियोजन जैसी सेवाओं को सशक्त बनाना है।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण को भी नई गति मिली है। फरवरी २०२६ में इन-स्पेस ने ५११ करोड.रुपये की लागत पर १० वर्षों के लिए लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान (एसएसएलवी) की प्रौद्योगिकी हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) को हस्तांतरित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे उद्योग के माध्यम से इसके उत्पादन और प्रक्षेपण सेवाओं का मार्ग प्रशस्त हुआ। वहीं, बेलाट्रिक्स एयरोस्पेस ने डीआरडीओ के प्रौद्योगिकी विकास कोष के तहत विकसित स्वदेशी हरित प्रणोदन प्रणाली का सफल प्रदर्शन किया।

इन कार्यक्रमों ने स्वदेशी तकनीकी क्षमताओं को मजबूत किया है और भारत को वैश्विक अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आगे की राह:.सरकार द्वारा किए गए सुधारों और निजी क्षेत्र की बढती भागीदारी के कारण भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र एक नए युग की दहलीज पर खडा है। भारतीय अंतरिक्ष नीति, २०२३, उदार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नीति और विशेष वित्तीय सहायता योजनाओं ने अंतरिक्ष क्षेत्र की पूरी मूल्य श्रृंखला को नए प्रतिभागियों के लिए खोल दिया है। इन सुधारों ने एक सशक्त पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किया है, जिसमें तेजी से विकसित होते स्टार्टअप, स्वदेशी नवाचार और वाणिज्यिक गतिविधियों का विस्तार शामिल है। 'मिशन आगमन' के तहत विक्रम-१ का प्रस्तावित प्रक्षेपण केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि भारत के निजी अंतरिक्ष उद्योग की बढती क्षमता, आत्मविश्वास और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता का भी प्रतीक है। इसरो के नेतृत्व में आरंभ हुई भारत की अंतरिक्ष यात्रा अब एक सशक्त और आत्मनिर्भर अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में विकसित हो रही है, जो सरकार के सुधारों की सफलता को रेखांकित करती है। निरंतर नीतिगत समर्थन, सार्वजनिक-निजी भागीदारी और तकनीकी नवाचार के बल पर भारत वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को और सुदृढ.कर रहा है तथा भविष्य की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करने की दिशा में तेजी से आगे बढ.रहा है।

सौजन्य अंतरिक्ष विभाग

अन्ना हजारे की केंद्र को दोटूक सलाह, सोनम वांगचुक की मांगों पर फैसला करो देश को अनिश्चितता में मत रखो

नई दिल्ली. (एजें) १८ जुलाई : (जलवायु कार्यकर्ता और शिक्षा सुधारों के पैरोकार सोनम वांगचुक के अनिश्चितकालीन अनशन को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर सियासी और सामाजिक हलचल तेज हो गई है. अनशन के २१वें दिन सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे ने केंद्र सरकार से अपील करते हुए कहा कि सरकार को सोनम वांगचुक की सहनशक्ति की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए. उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सरकार को उनकी मांगों पर बातचीत करनी चाहिए और यदि मांगें स्वीकार नहीं की जा सकतीं तो साफ तौर पर 'हां' या 'ना' कह देना चाहिए. अन्ना हजारे का यह बयान ऐसे समय आया है जब दिल्ली पुलिस ने स्वास्थ्य संबंधी कारणों का हवाला देते हुए वांगचुक को सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया है, जबकि उनके समर्थकों ने इसे जबरन हिरासत में लेने जैसा कदम बताया है.सोनम वांगचुक पिछले २१ दिनों से दिल्ली के जंतर-मंतर पर अनिश्चितकालीन भूख हडताल पर बैठे हैं. उनका मुख्य आग्रह राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) पेपर लीक मामले में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर है. वांगचुक का कहना है कि देश की शिक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता बहाल करने के लिए जिम्मेदारी तय होना आवश्यक है. उनके आंदोलन को कई छात्र संगठनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और नागरिक

समूहों का समर्थन भी मिल रहा है.शनिवार को दिल्ली पुलिस ने वांगचुक को सफदरजंग अस्पताल पहुंचाया. पुलिस का कहना है कि यह कदम दिल्ली हाई कोर्ट के निर्देशों के अनुरूप उठाया गया है. अदालत ने वांगचुक के स्वास्थ्य की नियमित निगरानी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए थे. पुलिस के अनुसार चिकित्सा विशेषज्ञों की सलाह पर उन्हें अस्पताल ले जाया गया ताकि उनके स्वास्थ्य की विस्तृत जांच और आवश्यक उपचार किया जा सके.

हालांकि वांगचुक के समर्थकों और आंदोलन से जुडे.लोगों ने पुलिस की कार्रवाई पर गंभीर सवाल उठाए हैं. आंदोलन से जुडे.प्रतिनिधियों का आरोप है कि पुलिसकर्मी सामान्य कपडों में जंतर-मंतर पहुंचे और स्वयं को मेडिकल टीम का सदस्य बताकर आंदोलन स्थल में प्रवेश किया. इसके बाद उन्होंने स्वयंसेवकों को हटाकर वांगचुक को अस्पताल ले जाने की कार्रवाई की. समर्थकों का आरोप है कि यह पूरी प्रक्रिया उनकी सहमति के बिना अपनाई गई और इसे जबरन कार्रवाई के रूप में देखा जाना चाहिए.आंदोलन से जुडे. संगठन के प्रतिनिधियों ने दावा किया कि दिल्ली हाई कोर्ट ने केवल स्वास्थ्य की निगरानी करने के निर्देश दिए थे, न कि किसी प्रकार की जबरन चिकित्सीय कार्रवाई की अनुमति दी थी. उनका कहना है कि वांगचुक की नियमित रूप से मेडिकल जांच की जा रही थी और उनकी स्वास्थ्य रिपोर्ट सार्वजनिक रूप से साझा भी की जा रही थी. ऐसे में पुलिस द्वारा उन्हें अस्पताल ले जाना अदालत के आदेश की गलत व्याख्या और अवमानना के समान है. इस संबंध में कानूनी विकल्पों पर भी विचार किया जा रहा है.घटनाक्रम के दौरान कुछ छात्रों ने यह आरोप भी लगाया कि आंदोलन स्थल पर मौजूद प्रदर्शनकारियों के साथ पुलिस ने सख्ती बरती. कुछ छात्रों ने लाठीचार्ज किए जाने का भी दावा किया. हालांकि पुलिस की ओर से इन आरोपों की आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है. प्रशासन का कहना है कि पूरी कार्रवाई कानून और अदालत के निर्देशों के अनुरूप की गई तथा किसी भी प्रकार की अव्यवस्था को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाए गए.इसी बीच सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे ने पूरे घटनाक्रम पर चिंता व्यक्त करते हुए केंद्र सरकार से संवाद का रास्ता अपनाने की अपील की. उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में किसी भी गंभीर मुद्दे का समाधान बातचीत से ही निकलता है. यदि सरकार वांगचुक की मांगों से सहमत नहीं है तो उसे स्पष्ट रूप से अपनी स्थिति बतानी चाहिए, लेकिन लंबे समय तक किसी आंदोलनकारी को अनिश्चितता में रखना उचित नहीं है. उन्होंने कहा कि सरकार को उनकी सहनशक्ति की परीक्षा लेने के बजाय सकारात्मक संवाद शुरू करना चाहिए.अन्ना हजारे की यह अपील इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि वर्ष २०११ में उन्होंने स्वयं लोकपाल कानून की मांग को लेकर दिल्ली में ऐतिहासिक अनशन किया था. उस आंदोलन ने तत्कालीन संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार पर व्यापक राजनीतिक दबाव बनाया था और पूरे देश में भ्रष्टाचार विरोधी जनआंदोलन का स्वरूप ले लिया था. ऐसे में हजारे का वर्तमान बयान सरकार और आंदोलन दोनों के लिए महत्वपूर्ण संदेश माना जा रहा है.

इस बीच वांगचुक की पत्नी ने भी सार्वजनिक रूप से चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि उनकी सहमति के बिना किसी प्रकार का चिकित्सीय उपचार नहीं किया जाना चाहिए. उन्होंने संकेत दिया कि यदि वांगचुक की इच्छा के विरुद्ध कोई कार्रवाई की जाती है तो इसके लिए संबंधित लोगों को जवाबदेह ठहराया जाएगा. इस बयान के बाद पूरे मामले ने और अधिक संवेदनशील रूप ले लिया है.राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि सोनम वांगचुक का आंदोलन अब केवल एक व्यक्ति के अनशन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह शिक्षा व्यवस्था की पारदर्शिता, लोकतांत्रिक अधिकारों और शांतिपूर्ण विरोध के अधिकार जैसे व्यापक मुद्दों से भी जुडता जा रहा है. यही कारण है कि इस पूरे घटनाक्रम पर देशभर की निगाहें टिकी हुई हैं.फिलहाल सोनम वांगचुक अस्पताल में चिकित्सकीय निगरानी में हैं. उनकी स्वास्थ्य स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है, जबकि दूसरी ओर उनके समर्थक आंदोलन जारी रखने और सरकार से औपचारिक वार्ता शुरू करने की मांग पर अडे.हुए हैं. अब सबकी नजर केंद्र सरकार के अगले कदम पर है कि वह अन्ना हजारे की सलाह को कितना महत्व देती है और क्या वांगचुक की मांगों पर संवाद की पहल करती है या नहीं.

काछाड.के रजिस्ट्री कार्यालयों पर सेवा सेतु की सेवाओं में देरी कराकर आवेदकों को परेशान करने का आरोप

प्रे.सं.शिलचर, १८ जुलाई : सेवा सेतु पोर्टल और एआरटीपीएस पोर्टल को इस उद्देश्य से शुरू किया गया था कि नागरिक आवेदन के १० दिनों के भीतर सरकारी सेवाएं प्राप्त करें और निर्धारित समय के बाद देरी होने पर संबंधित अधिकारी को जवाबदेह ठहराया जाए, लेकिन काछाड.के जिला सब रजिस्ट्रार कार्यालय और डिप्टी सब रजिस्ट्रार कार्यालय के खिलाफ इस व्यवस्था को नाकाम कर काम में देरी करने और जिम्मेदारी से बचने के गंभीर आरोप सामने आए हैं। शिकायतों के अनुसार कार्यालय के बगल में स्थित पब्लिक फैसिलिटेशन सेंटर के कर्मचारियों के साथ मिलीभगत करके यह काम किया जा रहा है, जहां आवेदकों से कहा जा रहा है कि १००० से २००० रुपये देने पर २ दिन में काम हो जाएगा, और जो लोग पैसे नहीं देते हैं उनसे आवेदन के समय पहले ही दी गई जानकारी के लिए भी बार बार अनावश्यक सवाल पूछे जा रहे हैं। यह भी आरोप है कि आवेदन करते समय आवेदक के अपने फोन नंबर के बजाय पीएफसी अपना नंबर इस्तेमाल कर रहा है, जिसके कारण कार्यालय से आने वाले सभी सवाल फिर से पीएफसी के माध्यम से जाते हैं और जवाब नहीं दिए जाने पर १० दिन बीत जाने के बाद भी १० दिन की जवाबदेही का नियम लागू नहीं किया जा पाता है। इसे जवाबदेही से बचने और आम जनता को परेशान करने की जानबूझकर की गई चाल बताया जा रहा है। नागरिकों का कहना है कि सेवा सेतु जैसी अच्छी पहल के बावजूद इस तरह की प्रथाएं पारदर्शिता को कमजोर कर रही हैं और काछाड.में बुनियादी रजिस्ट्री सेवाएं लेने वाले आम लोगों को परेशानी हो रही है। समस्या को और बढाने वाली बात यह है कि पडोसी जिले हाइलाकांदी और श्रीभूमि में पहले ही धरित्री पोर्टल एक एकीकृत भूमि रिकॉर्ड प्रबंधन प्रणाली के रूप में लागू हो चुका है, जहां लोग जमाबंदी, ई खजाना और अन्य भूमि दस्तावेज ऑनलाइन बिना कार्यालय जाए प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से काछाड.जिला अभी तक धरित्री के दायरे में नहीं आया है, जिसके कारण यहां के निवासियों को भूमि रिकॉर्ड के लिए कार्यालय दर कार्यालय दौडना पड.रहा है। इस गठजोड.को तोडने और पारदशी सेवा सुनिश्चित करने के लिए नागरिकों ने मांग की है कि रजिस्ट्री कार्यालयों के पास काम करने वाले पीएफसी कर्मियों का तुरंत तबादला किया जाए या उन्हें रोटेशन के आधार पर अलग अलग स्थानों पर भेजा जाए ताकि कोई विशेष स्वार्थ समूह न बन सके। बराक घाटी के अग्रणी निजी स्वयंसेवी संगठन ग्राम उन्नयन ओ समाज सेवा संघ ने भी इस मुद्दे पर आवाज उठाई है और प्रशासन से शीघ्र हस्तक्षेप की मांग की है। लोग अब प्रशासन से मांग कर रहे हैं कि काछाड.में सेवा सेतु पोर्टल और धरित्री पोर्टल को पारदशी तरीके से जल्द से जल्द लागू किया जाए ताकि नागरिकों को सुविधा पारदर्शिता और राहत मिल सके।

होजाई महिला शाखा द्वारा बाबा जगन्नाथ शोभायात्रा में भक्तो को शीतल पेय जूस वितरण

होजाई १७ जुलाई-मारवाड़ी सम्मेलन, होजाई महिला शाखा द्वारा बाबा जगननाथ की शोभायात्रा के दौरान हजारों भक्तो को शीतल पेय एवं जूस आदि का वितरण किया।स्थानीय इस्कान मंदिर द्वारा आयोजित उक्त शोभा यात्रा जब भीमसरिया रोड से गुजर रही थी तब शाखा द्वारा भक्तों हेतु शीतल पेय एवं जूस आदि का वितरण किया।उक्त अवसर पर सरिता सरावगी मंजू भीमसरिया राधा सरावगी ईशु भीमसरिया अनिता सरावगी रितु सरावगी नीतू मोर पिंकी सरावगी कबिता सरावगी योगिता सरावगी नीमा भीमसरिया रेखा भीमसरिया ललिता भीमसरिया खुसबू भीमसरिया प्राची सरावगी किशिका सरावगी आदि सदस्य उपस्थित थीं।भक्तों ने उक्त कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की।कार्यक्रम को सफल बनाने में आशीष सरावगी का विशेष सहयोग रहा।

फकीरग्राम: बोडोलैंड स्टूडेंट्स यूनियन द्वारा करियर काउंसलिंग और व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

कोकराझार, १८ जुलाई: बोडोलैंड स्टूडेंट्स यूनियन (BSU), फकीरग्राम ब्लॉक कमिटी के तत्वावधान में आज क्षेत्र के छात्र-छात्राओं के भविष्य को दिशा देने के उद्देश्य से एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम संगठन की ओर से आयोजित 'समर कोचिंग कैंप' का हिस्सा है।?इस कार्यशाला में फकीरग्राम कॉलेज के सहायक प्रोफेसर डॉ. हसमत अली ने बतौर संसाधन व्यक्ति (Resource Person) भाग लिया। इस सत्र का मुख्य उद्देश्य कक्षा १०वीं के विद्यार्थियों को सही करियर चुनने, आत्मविश्वास बढ़ाने और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरित करना है।?कार्यक्रम की रूपरेखा: आज शनिवार की ?सुबह १०:१५ बजे: चितला हाई को स्कूल में 'करियर काउंसलिंग' पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। सुबह ११:१५ बजे: जोगदोई हाई स्कूल में 'व्यक्तित्व विकास' (झशीीपरश्रळीू ऊर्शींशश्रेशिपीं) विषय पर व्याख्यान संपन्न हुआ। प्रोफेसर डॉ. हसमत अली के मार्गदर्शन से विद्यार्थियों को शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त करने और जीवन कौशल विकसित करने में काफी मदद मिलेगी।

बरसात के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग २७ पर यातायात पूरी तरह ठप

गुवाहाटी, १८ जूलाई (हि.स.)। गुवाहाटी के बाहरी इलाका जोराबाट में शुक्रवार की दोपहर बाद महज आधे घंटे तक हुई मूसलाधार बरसात की वजह से राष्ट्रीय राजमार्ग २७ पर भारी जलजमाव हो गया। जिसकी वजह से राष्ट्रीय राजमार्ग पर यातायात पूरी तरह ठप हो गई। बरसात के बाद जोराबाट में स्थित फ्लाईओवर के नीचे भारी जल जमाव हो गया।जोराबाट के अलावा ११ माइल, १० माइल ९ माइल, ८ माइल आदि इलाके में राष्ट्रीय राजमार्ग २७ पर भारी जल जमाव की समस्या उत्पन्न हो गई । जिसकी वजह से इस मार्ग से गुजरने वाले हजारों वाहन जाम में फंस गए। स्थानीय लोगों की माने तो जल जमाव की सबसे बडी समस्या मेघालय में हो रही अवैध पहाडों की कटाई है। पहाडों की कटाई की वजह से राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे बने नाले पहाड.की लाल मिट्टी से पूरी तरह भर गया है। वही मेघालय की ओर किसी भी प्रकार की नाले की व्यवस्था नहीं है जिसकी वजह से सारा पानी सडक़ पर आ जाता है।पहली बार इस तरह के जल जमाव की समस्या सन २०१६ में उत्पन्न हुई। जब फोर लेन राष्ट्रीय राजमार्ग का काम प्रारंभ हुआ। वहीं जोराबाट तीनाली इलाके में बनाए गए फ्लाईओवर के नीचे पानी बहने वाला पुल काफी नीचे है। जिसकी वजह से जोराबाट तीनाली में हल्की सी बरसात के बाद जल जमाव की समस्या उत्पन्न हो जाती है । जल जमाव की वजह

से जोराबाट फ्लाईओवर के नीचे व्यापार कर अपनी जीविका चलाने वाले दुकानदारों को वर्ष २०१६ से काफी मुसीबतों का सामना करना पड.रहा है। आए दिन बरसात के बाद सडक़ पर हो रहे जल जमाव की वजह से राष्ट्रीय राजमार्ग की हालत जोराबाट से खानपडा तक काफी जर्जर हो गई है। राष्ट्रीय राजमार्ग की जर्जर हालत की वजह से आने वाले समय में दो पहिया वाहन चालक दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं। स्थानीय लोगों ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण से इस समस्या का जल्द से जल्द समाधान करने की मांग की है।

असम कृषि विश्वविद्यालय की पहल: तेलिपाड़ा क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र में बीज और रोपण सामग्री का वितरण

कोकराझार , १८ जुलाई: गोसाईगांव अनुमंडल के तेलिपाडा स्थित क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र (आरएआरएस) में शनिवार को असम कृषि विश्वविद्यालय की एक पहल के तहत सैकडों किसानों के बीच बीज और रोपण सामग्री का औपचारिक वितरण किया गया।

?कार्यक्रम का संचालन कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) के फसल विज्ञान विशेषज्ञ शांतनु कौशिक बोरा ने किया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण देते हुए असम कृषि विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. मनोरंजन नियोग ने किसानों को खेती के आधुनिक तरीकों और उनसे होने वाले लाभ के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने किसानों को बेहतर पैदावार के लिए मूल्यवान सुझाव भी दिए।?कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित कोकराझार जिले के उपायुक्त पंकज चक्रवर्ती ने कहा कि भारत का विकास काफी हद तक कृषि पर निर्भर है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सरकार कृषि क्षेत्र के विकास के लिए विभिन्न योजनाएं लागू कर रही है, जिसमें उत्पादन बढाने के लिए अत्याधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उपायुक्त ने किसानों से सरकार की इन योजनाओं का लाभ उठाने और अपने तथा देश के विकास में योगदान देने का आह्वान किया। साथ ही, उन्होंने किसानों को सरकारी सुविधाओं का लाभ लेने के लिए अपनी जमीन के दस्तावेजों को अद्यतन (अपडेट) रखने की सलाह दी।?इस अवसर पर बीटीसी के कृषि विभाग के निदेशक बी.बी. नार्जारी तथा विधायक शोभा राम बसुमतारी और अशरफुल इस्लाम शेख ने भी उपस्थित किसानों को संबोधित किया और उन्हें कृषि के प्रति प्रोत्साहित किया।?कार्यक्रम के अंत में कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन विशेषज्ञ डॉ. मुजाहरुल इस्लाम ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. कामेश्वर दास के अलावा जेडआरएस और केवीके के कई अधिकारी और सैकडों स्थानीय किसान उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज और विभिन्न रोपण सामग्री वितरित की गई।

ये दोस्ती है कमाल की!

बाघ के बच्चे के साथ अंजना

अमेरिका के एक अभयारण्य में रहने वाली चिम्पैंजी है अंजना। वह इतनी दयालु है कि उसने बहुत से जानवरों के बहुत से अनाथ बच्चों को अपनाया है। अब वह मां की तरह एक बाघ के बच्चे की देखरेख कर रही है और उसकी अठखेलियों में खुश भी हो रही है। वैसे चिम्पैंजी काफी बुद्धिमान और समझदार होते हैं और वे अपने साथ रहने वालों का भी ख्याल रखते हैं।

थेंबा का साथी एल्बर्ट

मां के मर जाने से नन्हा थेंबा (हाथी) बहुत दुखी हुआ और कई दिनों तक इसका शोक मनाता रहा। दक्षिण अफ्रीका के एक अभयारण्य में लाए जाने के बाद भी उसने खाना-पीना छोड़ रखा था। इसी दौरान उसे एल्बर्ट नाम की भेड़ के रूप में एक अच्छा दोस्त मिला। जल्द ही दोनों में गहरी दोस्ती हो गई। खेलने के साथ दोनों झपकियां भी साथ ही लेते। नए दोस्त ने इतनी खुशियां दीं कि थेंबा अपने दुख भूल गया और फिर से खाना-पीना शुरू कर दिया।

बालू-लियो और शेर खान की तिकड़ी

शेर खान दरअसल शेर नहीं, बल्कि एक बाघ है और उसके साथ बालू नाम का भालू और लियो नाम का शेर है। इन तीनों के साथ इनके मालिक ने बुरा सलूक किया था, जिस कारण बालू को चोट भी लग गई। इस मुश्किल की घड़ी में ये एक-दूसरे का सहारा बन गये और अब अमेरिका के एक अभयारण्य में ये अपना सारा वक्त साथ ही गुजारते हैं।

दुश्मन के भी दोस्त बनो

अमित लगातार कोशिश करता था कि किसी भी तरह करण को नीचा दिखा सके और दूसरे बच्चों के सामने उसकी खिल्ली उड़ा सके। लेकिन उसकी लाख कोशिशों के बावजूद करण अपनी पढ़ाई में और बेहतर होता जा रहा था। चाहे बात पढ़ाई की हो या खेल की, करण हर किसी में बाजी मारता और हर जगह उसकी खूब तारीफ होती। फिर आखिर ऐसा क्या हुआ जो अमित को नीचा देखना पड़ा और वह बदल गया।

बहुत पहले की बात है। एक गांव था राजनगर। वहां पर करण नाम का एक लड़का रहता था। वह लड़का स्वभाव का बहुत अच्छा था। पढ़ाई में भी होशियार था। वह बहुत आज्ञाकारी और अपने मां-बाप का कहना मानता था। स्कूल में वह ज्यादातर बच्चों की तुलना में होशियार था। स्वभाव से वह विनम्र था और सभी के साथ अच्छा व्यवहार करता था। उसके स्कूल में चाहे उससे बड़े लड़के हों या फिर छोटे, सभी उसे पसंद करते थे। लेकिन इस कारण बहुत से लड़के करण से जलते भी थे। करण की ही क्लास में एक लड़का पढ़ता था, जिसका नाम था अमित। अमित पढ़ाई में तेज नहीं था। उसका स्कूल में खेलने में बहुत मन लगता था। वह अपने माता-पिता की बात नहीं सुनता था और उनसे रूखे तरीके से बात करता था। अपनी क्लास के लड़कों को वह चिढ़ाया करता था। यहां तक कि करण को भी वह खूब परेशान करता था। वह लगातार कोशिश करता था कि किसी भी तरह करण को नीचा दिखा सके और दूसरे बच्चों के सामने उसकी खिल्ली उड़ा सके। लेकिन उसकी लाख कोशिशों के बावजूद करण अपनी पढ़ाई में और बेहतर होता जा रहा था। चाहे बात पढ़ाई की हो या खेल की, करण हर किसी में बाजी मारता और हर जगह उसकी खूब तारीफ होती।

अपने आठवें जन्मदिन पर करण को अपने पिता की तरफ से गिफ्ट के तौर पर एक सुंदर सा पेन मिला। करण स्कूल में नोट्स लिखने के लिए वह पेन ले जाने लगा। वह पेन दिखने में तो सुंदर था ही, लिखता भी तेज था। जब अमित ने करण का पेन देखा तो उसे बहुत जलन हुई। अमित ने नजरें तिरछी करके करण से पूछा, 'यह पेन तुम्हें कहां से मिला? क्या तुमने इसे खरीदा है?'

'नहीं, मुझे यह पेन मेरे मम्मी-पापा ने बर्थ डे गिफ्ट में दिया है।' करण ने जवाब दिया।

इस बात से अमित का गुस्सा और भी ज्यादा भड़क गया। अपने माता-पिता से वह खुद इतना बुरा सलूक करता था कि अब तक उसे उनसे शायद ही कोई गिफ्ट मिला हो। जब लंच का वक्त हुआ, तो उसने करण का पेन चुराने का फैसला कर लिया। जब हर कोई लंच के लिए बाहर निकल गया, तो अमित ने चुपके से करण के बैग से पेन चुरा लिया। इसके बाद उसने पेन अपने बैग में छिपा लिया और लंच करने बाहर चला गया।

जब करण वापस लौटा तो उसे बैग में अपना पेन नहीं मिला। उसने अपने टीचर को इस बारे में बताया। इसके बाद पूरी क्लास में पेन खोजा गया, लेकिन वह नहीं मिला। तब टीचर ने क्लास के मॉनीटर से कहा कि वह सबके बैग की तलाशी ले। जल्द ही अमित के बैग से पेन मिल गया। उसे गुस्से से देखते हुए टीचर ने पूछा, 'अमित, पेन तुम्हारे बैग से निकला है, इस बारे में तुम्हें कुछ कहना है?'

अमित की आंखों में आंसू आ गए। वह कुछ नहीं बोला। जब करण ने अमित को रोते हुए देखा, तो उसे अमित पर दया आ गई। उसके दिल में अमित के लिए कोई गिला-शिकवा नहीं था। उसने टीचर से कहा कि उसका खोया हुआ पेन वापस मिल गया है, अब वे अमित को सजा न दें। करण के इन शब्दों ने अमित की आंखें खोल दीं। वह हमेशा करण को परेशान करता था, लेकिन करण ने हमेशा उससे अच्छा व्यवहार किया। इस समय उसे एहसास हो रहा था कि करण कितना अच्छा लड़का है। उसने तुरंत करण और क्लास टीचर से माफी मांगी। इसके बाद करण और अमित दोस्त बन गए। फिर तो अमित का व्यवहार बदल गया और सभी उसे पसंद करने लगे। करण को अपने नए दोस्त पर नाज था।

हंसने वाला कोका

साथियों, क्या तुमने ऑस्ट्रेलिया के हंसने वाले कोका के बारे में सुना है? आजकल ऑस्ट्रेलिया में यह खूब चर्चित हो रहा है। हंसने वाले कोका का दरअसल राज यह है कि इसका मुंह इस तरह का बना होता है, मानो खुशी से हंस रहा हो। छोटे चूहे जैसा यह जानवर आजकल ऑस्ट्रेलिया में पर्यटकों के बीच खूब लोकप्रिय हो रहा है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यह बेहद सेल्फी फ्रेंडली जानवर है। इसके साथ सेल्फी आती भी बड़ी मस्त है। इसकी स्माइलिंग वाले जबड़े की बनावट के कारण कुछ समय पहले इसे दुनिया के सबसे खुश जानवर की उपाधि भी मिल चुकी है। कोका वैसे तो एक साथ रहना पसंद करते हैं। आमतौर पर ये पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के दलदली इलाकों और जंगलों में रहते हैं। ऑस्ट्रेलिया के रॉटनेस्ट आइलैंड पर ये खूब पाए जाते हैं।

एक है कैट आइलैंड

तुमने वह कहानी तो सुनी ही होगी, जिसमें एक राजा ने मक्खियों को उड़ाने की नौकरी एक बंदर को दी थी। एक दिन राजा की नाक पर बैठी मक्खी को उस बंदर ने डंडे से ऐसा भगाया कि राजा की नाक ही टूट गई। उसके बाद राजा ने ऐसे दोस्तों से तौबा कर ली थी। कुछ ऐसा ही माजरा हुआ है दक्षिण जापान के एक दूर के द्वीप पर। वहां पर अधिकतर मछुआरे रहते हैं। बेचारों ने काफी समय पहले एक ऐसे दोस्त से दोस्ती कर ली, जो अब उनकी जान की मुसीबत बन गया है। दक्षिणी जापान के आओशिमा नामक द्वीप पर मछुआरों की दोस्त बनकर आई बिल्लियां अब संख्या में इतनी ज्यादा हो गई हैं कि जिधर नजर घुमाओ, बिल्लियां ही बिल्लियां नजर आती हैं। ये इतनी ज्यादा हो गई हैं कि यहां हर एक आदमी पर छह बिल्लियों का अनुपात बन गया है। बेचारे इस द्वीप के रहने वाले। हर वक्त उन्हें भगाते ही रहते हैं। कुछ उन्हें खाना भी खिलाते हैं। कुछ वर्षों पहले जब यहां चूहे बहुत ज्यादा हो गए थे और वे आए दिन मछुआरों की नाव काटने लगे, तो बिल्लियों को इस द्वीप पर लाया गया। अब चूहे तो नहीं रहे, लेकिन चारों तरफ बिल्लियां ही बिल्लियां हैं। इस द्वीप पर कुछ बुजुर्ग और युवा ही रहते हैं। बाकी सभी बड़े शहर चले गए हैं। अब यहां इतनी बिल्लियां हैं कि कोई रेस्टोरेंट या खोमचा नहीं खोला जा सकता। यहां केवल इस 'कैट आइलैंड' को देखने आने वालों को लाने-ले जाने वाली मोटरबोट ही ज्यादा दिखती हैं। हालांकि कुछ लोगों को इस द्वीप पर बिल्लियों को देखने में खूब मजा आता है।

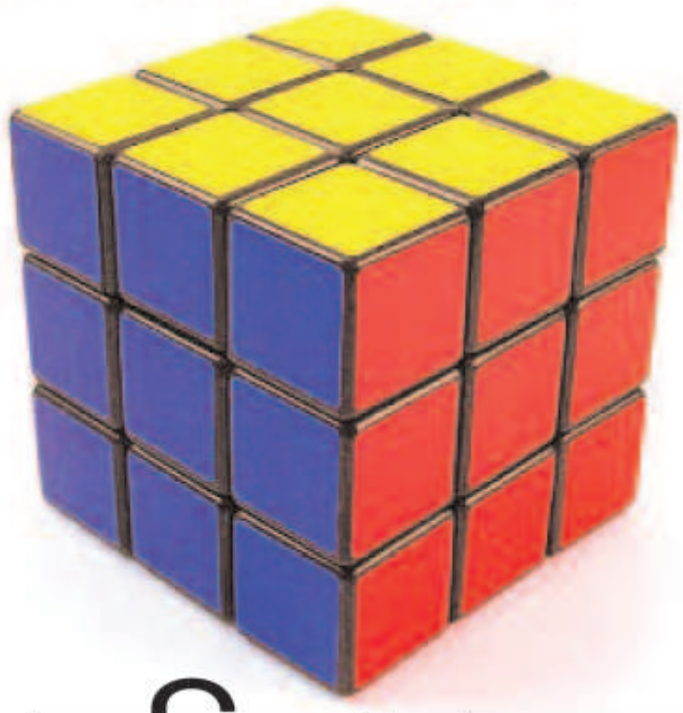

रूबिक क्यूब्स का तोड़ा रिकॉर्ड

अगर इंटेलिजेंट होने की बात आती है, तो रूबिक क्यूब्स में महारत की बात भी जरूर उठती है। आपको पता है कि रूबिक क्यूब्स क्या होते हैं?

दोस्तों, तुम सभी ने आकार में चौकोर कई रंग-बिरंगे खानों वाला यह क्यूब कभी न कभी खेला जरूर होगा। उसे हल करना आमतौर पर लोगों के लिए बहुत कठिन होता है। इसीलिए उसे जो सही-सही खेल ले, वह बड़ा बुद्धिमान माना जाता है। इस क्यूब को पसंद करने वालों में बहुत से ऐसे भी हैं, जो इसे सबसे जल्दी हल करने की प्रतियोगिता भी करते हैं। उन्हें 'स्पीड क्यूबर्स' के नाम से जाना जाता है। बहुत से लोग इसके लिए प्रसिद्ध हैं, जैसे कि भारत के भार्गव नरसिम्हन। वह एक जाने-माने स्पीड क्यूबर हैं। उनके नाम रूबिक क्यूब के दो नेशनल रिकॉर्ड हैं और अब खबर है कि उन्होंने 5 रूबीस क्यूब का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है। यह उन्होंने एक मिनट के अंदर हल कर दिया। यह काम उन्होंने केवल एक हाथ से ही कर दिखाया। वैसे भार्गव केवल 22 साल के हैं और अभी पढ़ाई कर रहे हैं। इनसे प्रेरणा लेकर तुम भी रूबिक क्यूब्स को जल्द से जल्द हल करने का मुकाबला रख सकते हो। तुम्हें बहुत मजा आएगा।

अर्जुन से बदला लेने के लिए जब कर्ण के तूणीर में पहुंचा एक जहरीला सर्प

महाभारत से इतर भी हमें महाभारत के संबंध में कुछ कथाएं मिलती हैं। उन्हीं में से एक कथा है कर्ण और सर्प के बारे में। लोककथाओं के अनुसार माना जाता है कि युद्ध के दौरान कर्ण के तूणीर में कहीं से एक बहुत ही जहरीला सर्प आकर बैठ गया। तूणीर अर्थात जहां तीर रखते हैं, जिसे तरकश भी कहते हैं। यह पीछे पीठ पर बंधी होती है। कर्ण ने जब एक तीर निकालना चाहा तो तीर की जगह यह सर्प उनके हाथ में आ गया। कर्ण ने पूछा, तुम कौन हो और यहां कहां से आ गए। तब सर्प ने कहा, हे दानवीर कर्ण, मैं अर्जुन से बदला लेने के लिए आपके तूणीर में जा बैठा था। कर्ण ने पूछा, क्यों?

इस पर सर्प ने कहा, राजन! एक बार अर्जुन ने खांडव वन में आग लगा दी थी। उस आग में मेरी माता जलकर मर गई थी, तभी से मेरे मन में अर्जुन के प्रति विद्रोह है। मैं उससे प्रतिशोध लेने का अवसर देख रहा था। वह अवसर मुझे आज मिला है। कुछ रुककर सर्प फिर बोला, आप मुझे तीर के स्थान पर चला दें। मैं सीधा अर्जुन को जाकर डस लूंगा और कुछ ही क्षणों में उसके प्राण-पखेरू उड़ जाएंगे।

सर्प की बात सुनकर कर्ण सहजता से बोले, हे सर्पराज, आप गलत कार्य कर रहे हैं। जब अर्जुन ने खांडव वन में आग लगाई होगी तो उनका उद्देश्य तुम्हारी माता को जलाना कभी न रहा होगा। ऐसे में मैं अर्जुन को दोषी नहीं मानता। दूसरा अनैतिक तरह से विजय प्राप्त करना मेरे संस्कारों में नहीं है इसलिए आप वापस लौट जाएं और अर्जुन को कोई नुकसान न पहुंचाएं। यह सुनकर सर्प वहां से उड़ गया। यदि कर्ण सर्प की बात मान लेते तो क्या होता?

विंध्याचल पर्वत माला का पौराणिक महत्व

यह पर्वत प्राचीन भारत के सप्तकुल पर्वतों में से एक है। विंध्य' शब्द की व्युत्पत्ति 'विध' धातु से कही जाती है। भूमि को बेध कर यह पर्वतमाला भारत के मध्य में स्थित है। यही मूल कल्पना इस नाम में निहित जान पड़ती है। विंध्य की गणना सप्तकुल पर्वतों में है। विंध्य का नाम पूर्व वैदिक साहित्य में नहीं है। इस पर्वत श्रंखला का वेद, महाभारत, रामायण और पुराणों में कई जगह उल्लेख किया गया है। विंध्य पहाड़ों की रानी विंध्यवासिनी माता है। मां विंध्यवासिनी देवी मंदिर (मिरजापुर, उप्र) श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केन्द्र है। देश के 51 शक्तिपीठों में से एक है विंध्याचल। विंध्यांचल पर्वतश्रेणी पहाड़ियों की टूटी-फूटी श्रृंखला है, जो भारत की मध्यवर्ती उच्च भूमि का दक्षिणी कगार बनाती है। यह पर्वतमाल भारत के पश्चिम-मध्य में स्थित प्राचीन गोलाकार पर्वतों की श्रेणियां है, जो भारत उपखंड को उत्तरी भारत व दक्षिणी भारत में बांटती है। इस पर्वतमाला का विस्तार उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, बिहार तक लगभग 1,086 किमी.तक विस्तृत फैला है। हालांकि इसकी कई छोटी बड़ी पहाड़ियों को विकास का नाम पर काट दिया गया है। इन श्रेणियों में बहुमूल्य हीरे युक्त एक भ्रंशीय पर्वत भी हैं।

इसकी प्रमुख नदियां : पहाड़ों के कटने से यहां से निकलने वाली नदियों का अस्तित्व भी संकट में है। विंध्य पर्वत में से उद्गम पाने वाली नदियां- शिप्रा या भद्रा (सिप्रा), पयोष्णी, निर्विंध्या (नेबुज), तापी निषधा या निषधावती (सिंद), वेण्वा या वेणा (वेणगंगा), वैतरणी (बैत्रणी), सिनीवाली या शिति बाहू, कुमुद्वती (स्वर्ण रेखा), करतोया या तोया (ब्राह्मणी), महागौरी (दामोदर), और पूर्णा, शोण (सोन), महानद (महानदी) और नर्मदा। मध्यप्रदेश और गुजरात की सरकार ने मिलकर सबसे बड़ी नर्मदा नदी की हत्या कर दी है। इस एक नदी के कारण संपूर्ण मध्यप्रदेश और गुजरात के जंगल हरे भरे और पशु पक्षी जीवंत रहते थे। लेकिन अब बांध बनाकर एक ओर जहां नदी के जलचर जंतु मर गए है।

प्राकृतिक संपदा : भारत में पर्यावरण विनाश की सीमा अरावली पर्वत श्रेणियों और पश्चिम के घाटों तक ही सीमित नहीं हैं, मध्यक्षेत्र में भी बेतरतीब ढंग से जारी रहकर प्राकृतिक संपदाओं के दोहन के कारण सतपुड़ा और विंध्याचल की पर्वत श्रेणियां तो खतरे में हैं ही अनेक जीवनदायी नदियों का वजूद भी संकट में है। वे लोग देशद्रोही है जो अपनी ही धरती को छलनी कर उसे विकास के नाम पर नष्ट कर रहे हैं।

पुराणों अनुसार : इसके अंतर्गत रोहतासगढ़, चुनारगढ़, कलिंजर आदि अनेक दुर्ग हैं तथा चित्रकूट, विन्ध्याचल आदि अनेक पावन तीर्थ हैं। पुराणों के अनुसार इस पर्वत ने सुमेरू सेर् ईष्या रखने के कारण सूर्यदेव का मार्ग रोक दिया था और आकाश तक बढ़ गया था, जिसे अगस्त्य ऋषि ने नीचे किया। यह शरभंग, अगस्त्य इत्यादि अनेक श्रेष्ठ ऋषियों की तप :स्थली रहा है। हिमालय के समान इसका भी धर्मग्रंथों एवं पुराणों में विस्तृत उल्लेख मिलता है।

अगस्त्य मुनि : दक्षिण भारत और हिंदु महासागर से संबंधि अगस्ति (अगस्त्य) मुनि की गाथा है। उन्होंने विंध्याचल के बीच से दक्षिण का मार्ग निकाला। किंविदंती है कि विंध्याचलपर्वत ने उनके चरणों पर झुककर प्रणाम किया। उन्होंने आशीर्वाद देकर कहा कि जब तक वे लौटकर वापस नहीं आते, वह इसी प्रकार झुका खड़ा रहे। वह वापस लौटकर नहीं आए और आज भी विंध्याचल पर्वत वैसे ही झुका उनकी प्रतीक्षा कर रहा है।

विंध्याचल के जंगल : विंध्यांचल पर्वत श्रेणियों के दोनों तरफ घने जंगल हैं, जो अब शहरी आबादी और विकास के चलते काट दिए गए हैं। अन जंगलों में शेर, चीते, भालु, बंदर, हिरणों के कई झुंड होते थे जो अब दर बदर हैं। अब चंबल, सतपुड़ा और मालवा के पठारी इलाके में ही कुछ जंगल बचे हैं। यहां की पर्वतों की कंदराओं में कई प्राचीन ऋषियों के आश्रम आज भी मौजूद हैं। यह क्षेत्र पहले ऋषि मुनियों का तप स्थल हुआ करता था। पर्वतों की कंदराओं में साधना स्थल, दुर्लभ शैल चित्र, पहाड़ों से अनवरत बहती जल की धारा, गहरी खाईयां और चारों ओर से घिरे घनघोर जंगलों पर अब संकट के बादल घिर गए हैं। यहीं पर भीम बैठका जैसी गुफाएं हैं।

शिव को क्यों प्रिय है भस्म?

शिवजी के पूजन में भस्म अर्पित करने का विशेष महत्व है। बारह ज्योर्तिलिंग में से एक उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर में प्रतिदिन भस्म आरती विशेष रूप से की जाती है। यह प्राचीन परंपरा है। आइए जानते है शिवपुराण के अनुसार शिवलिंग पर भस्म क्यों अर्पित की जाती है। भगवान शिव अद्भुत व अविनाशी हैं। भगवान शिव जितने सरल हैं, उतने ही रहस्यमयी भी हैं। भोलेनाथ का रहन-सहन, आवास, गण आदि सभी देवताओं से एकदम अलग हैं। शास्त्रों में एक ओर जहां सभी देवी-देवताओं को सुंदर वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित बताया गया है, वहीं दूसरी ओर भगवान शिव का रूप निराला ही बताया गया है। शिवजी सदैव मृगचर्म (हिरण की खाल) धारण किए रहते हैं और शरीर पर भस्म (राख) लगाए रहते हैं। शिवजी का प्रमुख वस्त्र भस्म यानी राख है, क्योंकि उनका पूरा शरीर भस्म से ढंका रहता है। शिवपुराण के अनुसार भस्म सृष्टि का सार है, एक दिन संपूर्ण सृष्टि इसी राख के रूप में परिवर्तित हो जानी है। ऐसा माना जाता है कि चारों युग (त्रेता युग, सत युग, द्वापर युग और कलियुग) के बाद इस सृष्टि का विनाश हो जाता है और पुन: सृष्टि की रचना ब्रह्माजी द्वारा की जाती है। यह क्रिया अनवरत चलती रहती है। इस सृष्टि के सार भस्म यानी राख को शिवजी सदैव धारण किए रहते हैं। इसका यही अर्थ है कि एक दिन यह संपूर्ण सृष्टि शिवजी में विलीन हो जानी है। शिवपुराण के लिए अनुसार भस्म तैयार करने के लिए कपिला गाय के गोबर से बने कंडे, शमी, पीपल, पलाश, बड़, अमलतास और बेर के वृक्ष की लकड़ियों को एक साथ जलाया जाता है। इस दौरान उचित मंत्रोच्चार किए जाते हैं। इन चीजों को जलाने पर जो भस्म प्राप्त होती है, उसे कपड़े से छान लिया जाता है। इस प्रकार तैयार की गई भस्म शिवजी को अर्पित की जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस प्रकार तैयार की गई भस्म को यदि कोई इंसान भी धारण करता है तो वह सभी सुख-सुविधाएं प्राप्त करता है। शिवपुराण के अनुसार ऐसी भस्म धारण करने से व्यक्ति का आकर्षण बढ़ता है, समाज में मान-सम्मान प्राप्त होता है। अत: शिवजी को अर्पित की गई भस्म का तिलक लगाना चाहिए। जिस प्रकार भस्म यानी राख से कई प्रकार की वस्तुएं शुद्ध और साफ की जाती है, ठीक उसी प्रकार यदि हम भी शिवजी को अर्पित की गई भस्म का तिलक लगाएंगे तो अक्षय पुण्य की प्राप्ति होगी और कई जन्मों के पापों से मुक्ति मिल जाएगी।

भस्म की यह विशेषता होती है कि यह शरीर के रोम छिद्रों को बंद कर देती है। इसे शरीर पर लगाने से गर्मी में गर्मी और सर्दी में सर्दी नहीं लगती। भस्म, त्वचा संबंधी रोगों में भी दवा का काम भी करती है। शिवजी का निवास कैलाश पर्वत पर बताया गया है, जहां का वातावरण एकदम प्रतिकूल है। इस प्रतिकूल वातावरण को अनुकूल बनाने में भस्म महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भस्म धारण करने वाले शिव संदेश देते हैं कि परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेना चाहिए। जहां जैसे हालात बनते हैं, हमें भी स्वयं को उसी के अनुरूप बना लेना चाहिए।

क्यों लगाते हैं भोलेनाथ शरीर पर भस्म, कैसे बनती है भस्मार्ती की भस्म

भगवान शिव ने अपने तन पर जो भस्म रमाई है वह उनकी पत्नी सती की चिता की भस्म थी जो कि अपने पिता द्वारा भगवान शिव के अपमान से आहत हो वहां हो रहे यज्ञ के हवनकुंड में कूद गई थी। भगवान शिव को जब इसका पता चला तो वे बहुत बेचैन हो गये। जलते कुंड से सती के शरीर को निकालकर प्रलाप करते हुए ब्रह्माण्ड में घूमते रहे। उनके क्रोध व बेचैनी से सृष्टि खतरे में पड़ गई। जहां जहां सती के अंग गिरे वहां शक्तिपीठ की स्थापना हो गई। पिर भी शिव का संताप जारी रहा। तब श्री हरि ने सती के शरीर को भस्म में परिवर्तित कर दिया। शिव विरह की अग्नि में भस्म को ही उनकी अंतिम निशानी के तौर पर तन पर लगा लिया। पहले भगवान श्री हरि ने देवी सती के शरीर को छिन्न भिन्न कर दिया था। जहां जहां उनके अंग गिरे वहीं शक्तिपीठों की स्थापना हुई। लेकिन पुराणों में भस्म का विवरण भी मिलता है। भगवान शिव के तन पर भस्म रमाने का एक रहस्य यह भी है कि राख विरक्ति का प्रतीक है। भगवान शिव चूंकि बहुत ही लौकिक देव लगते हैं। कथाओं के माध्यम से उनका रहन-सहन एक आम सन्यासी सा लगता है। एक ऐसे ऋषि सा जो गृहस्थी का पालन करते हुए मोह माया से विरक्त रहते हैं और संदेश देते हैं कि अंत काल सब कुछ राख हो जाना है। एक रहस्य यह भी हो सकता है चूंकि भगवान शिव को विनाशक भी माना जाता है। ब्रह्मा जहां सृष्टि की निर्माण करते हैं तो विष्णु पालन-पोषण लेकिन जब सृष्टि में नकारात्मकता बढ़ जाती है तो भगवान शिव विध्वंस कर डालते हैं। विध्वंस यानि की समाप्ति और भस्म इसी अंत इसी विध्वंस की प्रतीक भी है। शिव हमेशा याद दिलाते रहते हैं कि पाप के रास्ते पर चलना छोड़ दें अन्यथा अंत में सब राख ही होगा।

महाकाल की भस्मार्ती

उज्जैन स्थित महाकालेश्वर की भस्मार्ती विश्व भर में प्रसिद्ध है। ऐसी मान्यता है कि वर्षों पहले श्मशान भस्म से भूतभावन भगवान महाकाल की भस्म आरती होती थी लेकिन अब यह परंपरा खत्म हो चुकी है और अब कंडे की भस्म से आरती-श्रृंगार किया जा रहा है। वर्तमान में महाकाल की भस्म आरती में कपिला गाय के गोबर से बने औषधियुक्त उपलों में शमी, पीपल, पलाश, बड़, अमलतास और बेर की लकड़ियों को जलाकर बनाई भस्म का प्रयोग किया जाता है। जलते कंडे में जड़ीबूटी और कपूर-गुगल की मात्रा इतनी डाली जाती है कि यह भस्म ना सिर्फ सेहत की दृष्टि से उपयुक्त होती है बल्कि स्वाद में भी लाजवाब हो जाती है। श्रौत, स्मार्त और लौकिक ऐसे तीन प्रकार की भस्म कही जाती है। श्रुति की विधि से यज्ञ किया हो वह भस्म श्रौत है, स्मृति की विधि से यज्ञ किया हो वह स्मार्त भस्म है तथा कण्डे को जलाकर भस्म तैयार की हो वह लौकिक भस्म है। शिव का शरीर पर भस्म लपेटने का दार्शनिक अर्थ यही है कि यह शरीर जिस पर हम घमंड करते हैं, जिसकी सुविधा और रक्षा के लिए ना जाने क्या-क्या करते हैं एक दिन इसी इस भस्म के समान हो जाएगा। शरीर क्षणभंगुर है और आत्मा अनंत। कई सन्यासी तथा नागा साधु पूरे शरीर पर भस्म लगाते हैं। यह भस्म उनके शरीर की कीटाणुओं से तो रक्षा करता ही है तथा सब रोम कूपों को ढंककर ठंड और गर्मी से भी राहत दिलाती है। रोम कूपों के ढंक जाने से शरीर की गर्मी बाहर नहीं निकल पाती इससे शीत का अहसास नहीं होता और गर्मी में शरीर की नमी बाहर नहीं होती। इससे गर्मी से रक्षा होती है। मच्छर, खटमल आदि जीव भी भस्म रमे शरीर से दूर रहते हैं।

कैसे हुई भीष्म पितामह की पराजय

महाभारत युद्ध के दसवें दिन भी भीष्म पितामह ने पांडवों की सेना में भयंकर मारकाट मचाई। यह देखकर युधिष्ठिर ने अर्जुन से भीष्म पितामह को रोकने के लिए कहा। अर्जुन शिखंडी को आगे करके भीष्म से युद्ध करने पहुंचे। शिखंडी को देखकर भीष्म ने अर्जुन पर बाण नहीं चलाए और अर्जुन अपने तीखे बाणों से भीष्म पितामह को बींधने लगे। इस प्रकार बाणों से छलनी होकर भीष्म पितामह सूर्यास्त के समय अपने रथ से गिर गए। उस समय उनका मस्तक पूर्व दिशा की ओर था। उन्होंने देखा कि इस समय सूर्य अभी दक्षिणायन में है, अभी मृत्यु का उचित समय नही हैं, इसलिए उन्होंने उस समय अपने प्राणों का त्याग नहीं किया।

युधिष्ठिर को दिया धर्म ज्ञान

महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा कि इस समय पितामह भीष्म बाणों की शैय्या पर हैं। आप उनके पास चलकर उनके चरणों को प्रणाम कीजिए और आपके मन में जितने भी संदेह हो, उनके बारे में पूछ लीजिए। श्रीकृष्ण की बात मानकर युधिष्ठिर भीष्म पितामह के पास गए और उनसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का ज्ञान प्राप्त किया। युधिष्ठिर को ज्ञान देने के बाद भीष्म पितामह ने उनसे कहा कि अब तुम जाकर न्यायपूर्वक शासन करो, जब सूर्य उत्तरायण हो जाए, उस समय फिर मेरे पास आना।

ऐसे त्यागे भीष्म पितामह ने अपने प्राण

जब सूर्यदेव उत्तरायण हो गए तब युधिष्ठिर सहित सभी लोग भीष्म पितामह के पास पहुंचे। उन्हें देखकर भीष्म पितामह ने कहा कि इन तीखे बाणों पर शयन करते हुए मुझे 58 दिन हो गए हैं। उन्होंने श्रीकृष्ण को संबोधित करते हुए कहा कि अब मैं प्राणों का त्याग करना चाहता हूं। ऐसा कहकर भीष्मजी कुछ देर तक चुपचाप रहे। इसके बाद वे मन सहित प्राणवायु को क्रमश: भिन्न-भिन्न धारणाओं में स्थापित करने लगे। भीष्मजी का प्राण उनके जिस अंग को त्यागकर ऊपर उठता था, उस अंग के बाण अपने आप निकल जाते और उनका घाव भी भर जाता। भीष्मजी ने अपने देह के सभी द्वारों को बंद करके प्राण को सब ओर से रोक लिया, इसलिए वह उनका मस्तक (ब्रह्म रंध्र) फोड़कर आकाश में चला गया। इस प्रकार महात्मा भीष्म के प्राण आकाश में विलीन हो गए।

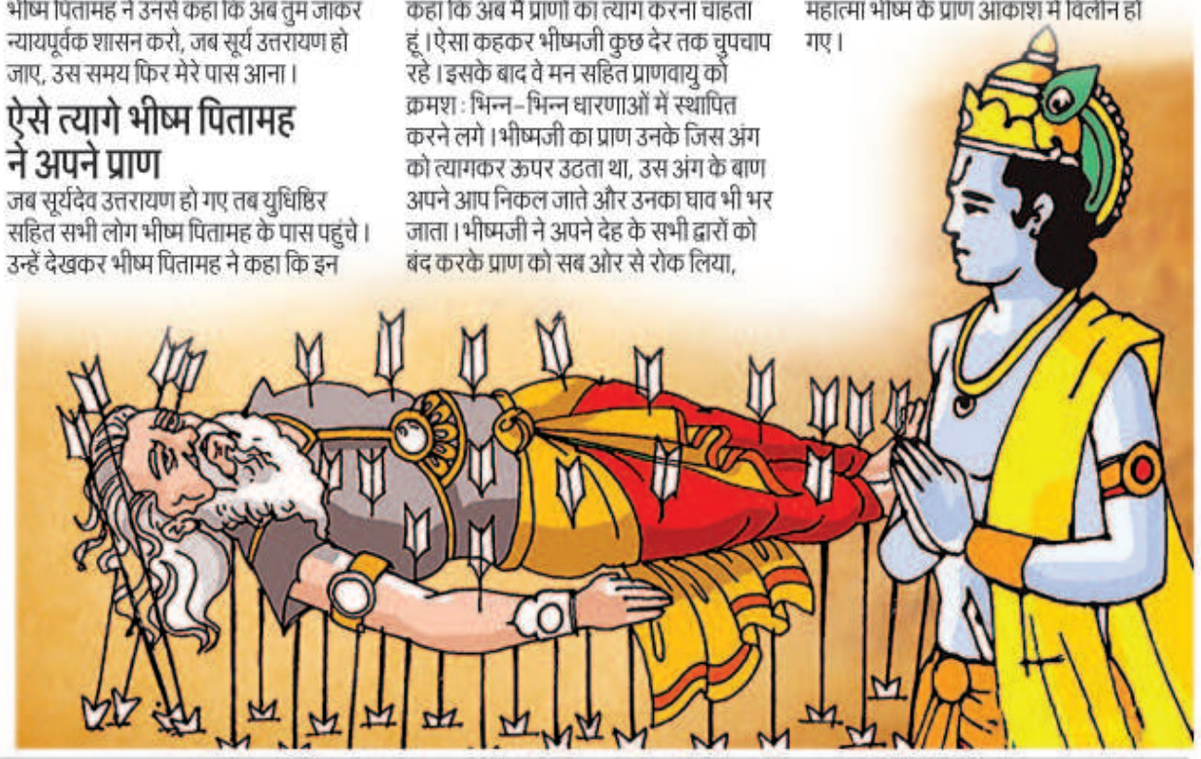

प्रेसबायोपिया: अपनी उम्र को आंखों की रोशनी के कमजोर होने का कारण न बनने दें

प्रेसबायोपिया या लेंस के सामंजस्य की क्षमता का खत्म हो जाना उम्र के साथ होने वाला सामान्य परिवर्तन है, जोकि लोगों को 40 की उम्र के बाद प्रभावित करता है हालांकि, मोबाइल फोन और इसी तरह के गैजेट्स का प्रयोग करने से कई बार अब यह उम्र से पहले ही नजर आने लगा है। यह नजदीक में केंद्रित कर पाने को कठिन बना देता है, खासकर छोटे अक्षरों और कम रोशनी में। शुरुआती चरण में व्यक्ति फोन या किताब को कुछ दूर तक रख सकता है लेकिन कुछ स्थितियों में, यहां तक कि लंबे हाथों वाले व्यक्ति भी लंबे समय तक मेन्यू के छोटे अक्षरों को नहीं पढ़ सकते। साथ ही, नजदीक का काम करने जैसे कढ़ाई या हाथों से लिखने पर उन लोगों को सिरदर्द, आंखों पर दबाव या थकान महसूस हो सकती है। और इसके बाद यह वह स्थिति होती है जब लोगों को मदद की या फिर नेत्ररोग विशेषज्ञ से मिलने की आवश्यकता हो जाती है।

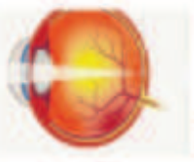

प्रेसबायोपिया का क्या होता है कारण?

जब हम बूढ़े हो जाते हैं, तो लगभग सारी चीजें कठोर या कड़ी होने लगती हैं और हमारी आंखें भी अपवाद नहीं हैं। लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, आंखों के लेंस कड़े होने लगते हैं और वे अपना लचीलापन खोने लगता है। इसके परिणामस्वरूप नजदीक की चीजों पर केंद्रित या फोकस करने की क्षमता धीरे-धीरे बिगड़ती चली जाती है, जो प्रेसबायोपिया कहलाता है।

जांच

आपके नेत्ररोग विशेषज्ञ प्रेसबायोपिया की जांच आंखों के विस्तृत परीक्षण के रूप में कर सकते हैं। इसके साथ ही आंखों की अन्य समस्याओं के लिए वे आपके प्रेसबायोपिया की गंभीरता की जांच प्रमाणिक दृष्टि परीक्षण का प्रयोग करके करेंगे।

प्रेसबायोपिया का इलाज

प्रेसबायोपिया को ठीक करने के लिए कोई भी बेहतर तरीका नहीं है। इसमें सुधार का सबसे सही तरीका आपकी आंखों और आपकी जीवनशैली पर निर्भर करता है। आपको अपने नेत्ररोग विशेषज्ञ से अपनी जीवनशैली के बारे में जरूर चर्चा करनी चाहिए, ताकि यह निर्णय लिया जा सके कि कौन-सा सुधार आपके लिए सबसे अधिक उपयुक्त हो सकता है।

चश्मा

बायफोकल या प्रोग्रेसिव लेंस के साथ वाले चश्मे प्रेसबायोपिया में सुधार के लिए सबसे आम होते हैं। बायफोकल का मतलब है, जिसमें दो फोकस होते हैं: चश्मे के लेंस का प्रमुख भाग दूरदृष्टि दोष के सुधार के लिए होता है, जबकि लेंस का निचला हिस्सा निकट दृष्टि दोष की अत्यधिक परेशानी में निकट का काम करने के लिए होता है।

कॉन्टैक्ट लेंस

प्रेसबायोपिया के लिए मल्टीफोकल कॉन्टैक्ट लेंस या मोनोविजन चुना जा सकता है, जिसमें एक आंख में दूरदृष्टि में सुधार के लिए पहना जाता है और दूसरे को निकट दृष्टिदोष के लिए पहना जाता है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि आपके आंखों की जांच नियमित रूप से होती रहे, खासकर 50 वर्ष की आयु के बाद।

सर्जरी

प्रेसबायोपिया का उपचार करने के लिए कंडक्टिव कैरेटोप्लास्टी या कॉर्नियल इन-लेज जैसे सर्जरी के विकल्प मौजूद हैं। लेजर का प्रयोग मोनोविजन तैयार करने के लिए किया जा सकता है, जिसमें एक आंख के निकट दृष्टि दोष को ठीक किया जाता है, जबकि दूसरी आंख दूरदृष्टि के लिए मजबूत बनाई जाती है। हाल में प्रेसबायोपिया में सुधार के लिए आए इंट्राऑक्यूलर लेंस के साथ कुछ लोगों में जो मोतियाबिंद की सर्जरी करवाने जा रहे हैं, हो सकता है ताकि वे सभी प्रकार की दूरी में स्पष्ट देखने में सक्षम हो पाएं।

लक्षण

प्रेसबायोपिया धीरे-धीरे विकसित होता है। आप इसके संकेतों और लक्षणों को सबसे पहले 40 वर्ष की आयु के आस-पास देख सकते हैं। अक्षर स्पष्ट नजर आएं इसके लिए पाठ्य सामग्री दूर पकड़कर रखने की आदत।

- डॉ शारदिनी व्यास

लिपस्टिक खरीदते वक्त इन बातों का रखें ध्यान

आपके पास अगर मेकअप करने का ज्यादा टाइम नहीं बचा है, तो आप काजल और लिपस्टिक लगाकर भी अपना लुक कम्पलीट कर सकती हैं। बस, लिपस्टिक लगाते वक्त आपको ख्याल रखना है कि आपके स्किन टोन और कपड़ों से मैच करती हुई लिपस्टिक ही लगाएं। लिपस्टिक खरीदते वक्त ये बातें आपको सही शॉपिंग में मदद करेंगी।

जानें चेहरे के हिसाब से कैसे चुनें शेड

रेड

रेड क्लासिक बाइडल कलर है। यह बोल्ड भी है और स्टाइलिश भी। अगर आपने हेवी आई मेकअप नहीं किया है तो आप बोल्ड रेज लिपस्टिक ट्राई कर सकती हैं।

न्यूड

न्यूड लिपस्टिक आपको क्लासिक लुक देगा। फेयर स्किन टोन पर यह काफी सूट करते हैं। इसके अलावा अगर आप चाहती हैं कि आपका आई मेकअप और ड्रेस ज्यादा हाइलाइट हों तो आप न्यूड लिपस्टिक ही चुनें।

पिंक

मीडियम स्किन टोन पर पिंक लिपस्टिक जचती है। यह आपके लुक को एक रोमांटिक टच देता है। पिंक में भी कई तरह के शेड्स अवेलेबल हैं जिनमें से आप अपनी पसंद की लिपस्टिक चुन सकती हैं।

लिपस्टिक पैटर्न का भी रखें खास ख्याल

मैट आपको ड्रैमेटिक और बोल्ड अपियरेंस देता है। अगर आपको पाउट वाले फोटोज खिंचाना पसंद है तो आपको मैट लिपस्टिक ही यूज करें। अगर आपके ड्राई लिप्स हैं तो ग्लॉस का इस्तेमाल करें। अगर आप किसी तरह के फ्लॉ से बचना चाहती हैं तो भी ग्लॉस आपके लिए सही ऑप्शन है।

लिप साइज

सही लिपस्टिक चुनने में लिप का साइज भी अहम है। अगर आपके होंठ पतले हैं तो आपको डार्क कलर्स से बचना चाहिए। वहीं बड़े होठों पर डार्क कलर्स आपके मेकअप में चार चांद लगा देंगे।

आप लिपस्टिक के कई शेड और पैटर्न अमेजॉन, फ्लिपकार्ट, मिंत्रा से भी खरीद सकते हैं। यहां कई बेहतरीन ऑप्शन उपलब्ध हैं।

चना साग

सामग्री

- चने का साग- 250 ग्राम
- पालक- 250 ग्राम
- मेथी के पत्ते- 100 ग्राम
- मूंग की दाल- 250 ग्राम (बिना छिलके वाली)
- लहसुन- 5-6 कलियां
- अदरक- आधा इंच टुकड़ा (कद्दूकस किया)
- हरी मिर्च- 2 (कटी हुई)
- हींग- चुटकीभर
- मक्के का आटा- 2 टेबलस्पून
- हरी धनिया- बारीक कटी हुई
- बटर- 1 टीस्पून
- साबुत लाल मिर्च- 2
- नमक- स्वादानुसार
- तेल- 2 टेबलस्पून

विधि

चने के पत्तों को अच्छे से धोने के बाद काट लें। एक बाउल में मक्के का आटा और पानी मिलाकर अच्छे से मिक्स कर पेस्ट बना लें। फिर एक बाउल में मूंग की दाल को पानी में भिगोकर आधा घंटा रख दें। आधे घंटे बाद पानी से छानकर अच्छे से सूखा लें। इसके बाद प्रेशर कुकर में चने का साग, पालक, मेथी के पत्ते, 2 कप पानी, अदरक, हरा धनिया, नमक और मक्के के आटे का पेस्ट डालकर तीन सीटी आने तक पका लें। अब इसे थोड़ा ठंडा होने दें। फिर मेशर की मदद से मैश कर लें। कढ़ाई में तेल गरम करें। तेल जब गर्म हो जाए, तब इसमें जीरा, लहसुन और हरी मिर्च डालकर एक मिनट तक भून लें। फिर इसमें हींग, लाल मिर्च, मूंग की दाल और मैश किया हुआ साग डालकर लगातार चलाते हुए दो मिनट तक भून लें। इसके बाद इसमें नमक डालकर इसका पानी सूखने तक लगातार चलाते हुए पका लें। फिर इसमें ऊपर से हरा धनिया डालकर मिक्स कर लें और दो मिनट तक पका लें। इसे सर्विंग बाउल में निकालें और ऊपर से बटर डालकर गरमा गरम रोटी के साथ सर्व करें।

मटर कोफ्ते

सामग्री

- 1 कप मटर के दाने
- 2 उबले आलू
- 1 टीस्पून अरारोट या बेसन
- 1 टुकड़ा कसा हुआ अदरक
- 1-2 हरी मिर्च
- नमक स्वादानुसार।
- 3 मध्यम आकार के टमाटर
- 2 हरी मिर्च
- 1 इंच टुकड़ा अदरक
- 2 टीस्पून तेल या घी
- 1/2 टीस्पून जीरा
- 1/2 टीस्पून हल्दी पाउडर
- 1/2 टीस्पून धनिया पाउडर
- 2 टीस्पून मलाई
- लाल मिर्च
- 1/2 टीस्पून गर्म मसाला
- बारीक कटा हरा धनिया।

विधि

मटर को उबाल कर दरदरा पीस लें। आलू मैश करें। कोफ्ते की सारी सामग्री को अच्छी तरह मिलाएं। थोड़ी सामग्री अलग करें और बाकी सामग्री से नींबू के आकार के गोले बनाकर तैयार कर लें। कोफ्तों को ब्राउन होने तक तलकर अलग रखें।

ग्रेवी के लिए: टमाटर, हरी मिर्च और अदरक का पेस्ट बना लें। फ्राइंगपैन में तेल डालकर जीरा, हल्दी और धनिया पाउडर डालें। अब मसाले का पेस्ट डालें और उसे तेल छोड़ने तक भूनें। मसाले में मलाई डालकर 2 मिनट भूनें। नमक, लाल मिर्च, गर्म मसाला डालें। ग्रेवी को जितना गाढ़ा करना चाहती हैं, उतना ही पानी डालें। उबाल आने के बाद 2 मिनट तक और पकाएं। ग्रेवी में कोफ्ते डालकर 2 मिनट ढककर रख दें। बारीक कटे हुए धनिये से गार्निश करें। चावल या रोटी के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ)

संतान की ओर से हर्ष के प्रसंग बनेंगे। समय को देखकर कार्य करना ज्यादा हितकर रहेगा। परिश्रम अधिक करना पड़ेगा तभी आप लाभ की आशा कर सकते ह। कार्य क्षेत्र में पदोन्नति के योग बनेंगे। आलस्य को त्याग। पुरुषार्थ का सहारा लें। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। शुभांक-3-6-9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो)

कर्म बल पर आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में वर्तमान क्षमता को बढ़ायेंगें। उपक्रम का विस्तार करने का प्रयास सफल होगा। अच्छी सफलताएं प्राप्त करेंग। बुद्धि कौशल से चुनौतीपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से समय उपलब्धिकारक रहेगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-1-5-7

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा)

मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य कमजोर बना रहेगा। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते ह। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। श्रम अधिक करना पड सकता है। वरिष्ठजनों से मतभेद उभर सकते है। शुभांक-2-5-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)

शनैः-शनैः स्थिति पक्ष की बनने लगेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होगी। अभिभावकों के प्रति उत्तरदायित्व निभाने होंग। शुभांक-4-6-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)

विकास के लिए बनाई योजना सफल होगी। अच्छा हो कि आप अपने उद्देश्य को लेकर सचेत रहें। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जा सकते है जो कि अतिविश्वसनीय व्यक्तियों को ही दिये जाते हैं। कार्य सार्थक दिन है व्यर्थ न गंवाऐ। शुभांक-5-7-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)

क्षमता से अधिक कार्य करने की नौबत आ सकती हैं। उत्तरदायित्व की अधिकता निजी जीवन में अपने ही ढंग की परेशानियां पैदा करेंगी। कारोबार की उन्नति के लिये एक से अधिक सीढ़ी चढ़कर लोगो को आश्चर्य में डाल देंगे। बौद्धिक क्षेत्र में प्रतियोगिता जीतने का मौका मिलेगा। शुभांक-1-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते)

सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होंगी। अल्प-परिश्रम से ही लाभ होगा। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। घरेलू बहुमूल्य वस्तुओं के क्रय का योग है। शुभांक-4-5-7

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू)

परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा। अधिकारी वर्ग से आपकी निकटता बढ़ेगी। व्यावसायिक उपक्रम में उलटफेर की शुरूआत हो सकती हैं। स्थाई सम्पति के निर्माण, मरम्मत व पुर्नस्थापना पर व्यय भार बढ़ेगा। महत्वपूर्ण यात्राओं के संकेत है। चल-अचल सम्पति में वृद्धि होगी। शुभांक-3-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे)

कार्य सार्धक दिन है व्यर्थ न गंवाऐ। विश्वस्त लोगों के कहे अनुसार चलें। राजकीय कार्यों में सतर्कता बर्तें। मान-सम्मान को ठेस लग सकती है। जोश से कम व होश में रहकर कार्य करें। नये आगंतुकों से लाभ होगा। चल-अचल सम्पति में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। शुभांक-5-7-9

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी)

पुरानी पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शुभांक-2-5-7

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)

दाम्पत्य जीवन में तनाव का वातावरण बन सकता है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। आत्मचिंतन करें। पुराने मित्र से मिलन होगा। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। अपने अधीनस्थ लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शुभांक-6-8-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)

कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे निपटा लें। नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। शुभांक-3-5-7

काकुरो पहेली 5015

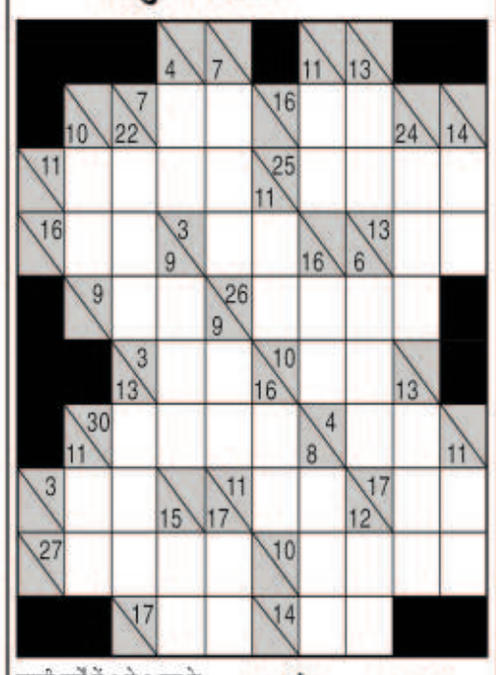

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

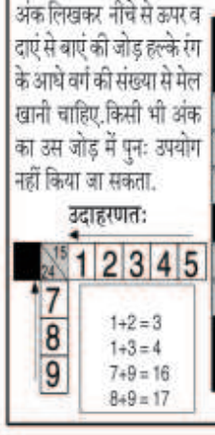

काकुरो - 5014 का हल

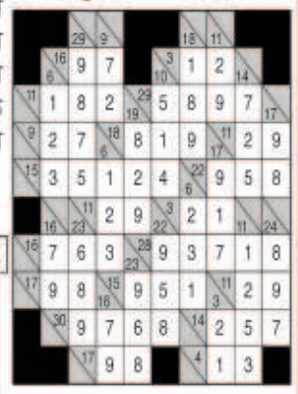

लॉफिंग ज़ोन

रमन (नरेश से)- तुम्हारी पत्नी रोजाना घर में इतनी? खिटपिट करती रहती है। तुम इतना तनावपूर्ण वातावरण को कैसे सह लेते हो?

नरेश (बड़े इत्मीनान से बोला)- दोस्त! ऑफिस एक ऐसा स्थान है, जहाँ आप घर के तनावों से मुक्ति पाकर विश्राम कर सकते हैं। और रोजाना मैं भी वही करता हूँ।

▯ ▯ ▯

रमन-चमन आपस मे बातें कर रहे थे।

रमन (चमन से)- मेरी पत्नी दूसरी मंजिल से गिर गई।

चमन- क्या वह मर गई?

रमन- नहीं यार, यह तो अच्छा हुआ कि वह बाल-बाल बच गई।

चमन- अरे यार, तुम केवल बालों का क्या करोगे।

▯ ▯ ▯

रमन (मित्र से)- 'यार तेरा हाथ कैसे फ्रैक्चर हो गया?'

चमन- 'कल मैं तेज मोटरसाइकल चलाकर घर आ रहा था, तभी सामने से एक ट्रक आ गया। मैंने ब्रेक मारा और...।'

रमन- 'उसने तुझे टक्कर मार दी।'

▯ ▯ ▯

फिल्म वर्ग पहेली- 5015

बायें से दायें:-

१. शाहरुख, अपूर्व अग्निहोत्री, महिमा की 'किसी रोज तुम से' गीत वाली फिल्म-४
४. 'हम बेवफा हरगिज न थे' गीत वाली धर्मेन्द्र, जीनत अमान की फिल्म-४
६. विनोद मेहरा, रीना राय की 'दिल का तोहफा लाई हूँ' गीत वाली फिल्म-४
९. 'मुझे दुनियावालों शराबी' गीत वाली दिलीपकुमार, वैजयंती की फिल्म-३
११. अजय, सैफ, विवेक, करीना, बिपाशा की 'बीड़ी जलई' गीतवाली फिल्म-४
१३. 'आ ये हसीना रात' गीत वाली जीतेंद्र, आदित्य, एकता की फिल्म-४
१६. अक्षयकुमार, रवीना की 'क्यूं आँचल हमारा गिरा जा' गीत वाली फिल्म-२
१७. 'आँखों से दिल में' गीत वाली फराज खान, सुमन रंगनाथन की फिल्म-३
१८. दिलीपकुमार, सायरा की 'सारे शहर में आपसा कोई' गीत वाली फिल्म-३
१९. 'रात दुल्हन बनी चाँद दूल्हा बना' गीत वाली जीतेंद्र, बिस्वजीत, माला सिन्हा, मुमताज की फिल्म-३
२३. धर्मेन्द्र, संजीव, शर्मिला की 'जिंदगी है क्या बोलो' गीत वाली फिल्म-४
२५. 'दिल गम से' गीत वाली विजय, सुरैया की फिल्म जो सुरैया की अंतिम फिल्म थी-२
२६. संजयदत्त, उर्मिला की 'ओ भंवरे देखो हम दीवानों को' गीत वाली फिल्म-२
२७. आमिर, ममता कुलकर्णी की 'बाजी' में मुख्यमंत्री विश्वासराव चौधरी की भूमिका किसने की थी-२,३
२८. सनी, सुनील शेट्टी, शिल्पा की 'कोई परी आती नहीं' गीत वाली फिल्म-२
२९. फिल्म 'सात रंग के सपने' में अरविंद स्वामी के साथ नायिका कौन थी-२

ऊपर से नीचे:-

१. अमिताभ, शाहरुख, सुनील, रानी, जूही की फिल्म-३
२. 'दुनिया में ऐसा कहाँ सबका नसीब' गीत वाली फिल्म-३
३. नसीरुद्दीनशाह, पूजा भट्ट की फिल्म-२
४. 'आते जाते हुए मैं सब पे नजर' गीत वाली फिल्म-२
५. इंद्रकुमार, आयशा जुल्का की फिल्म-३
७. आर्यन वैद, सोनाली कुलकर्णी की मकरंद देशपांडे निर्देशित फिल्म-३
८. सुनीलदत्त, आशा पारेख की फिल्म-२
१०. 'जादू तेरी नजर' गीत वाली फिल्म-२
११. अतीन भल्ला, संदली सिन्हा की फिल्म-२
१२. 'लम्हा लम्हा जिंदगी है' गीत वाली फिल्म-४
१३. मोहित अहलावत, निशा की फिल्म-२
१४. 'ये वादा करो चाँद' गीत वाली फिल्म-४
१५. मनोज बाजपेयी, रेखा, करिश्मा की फिल्म-३
१६. 'हम दर्द के मारों का इतना ही' गीत वाली फिल्म-२
२०. धर्मेन्द्र, संजीवकुमार, आशा की फिल्म-३
२१. 'जागे जागे नैनों में' गीत वाली फिल्म-३
२२. आफताब शिवदासानी, अमीषा पटेल, एशा देओल की फिल्म-४
२३. 'जब जब प्यार पे पहरा हुआ' गीत वाली फिल्म-३
२४. जीतेंद्र, श्रीदेवी की फिल्म-३
२५. 'इंतहा हो गई इंतजार की' गीत वाली अमिताभ, जया प्रदा की फिल्म-३

फिल्म वर्ग पहेली- 5014

सूडोकु -5015

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -5014 हल

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1

शब्द पहेली - 5015

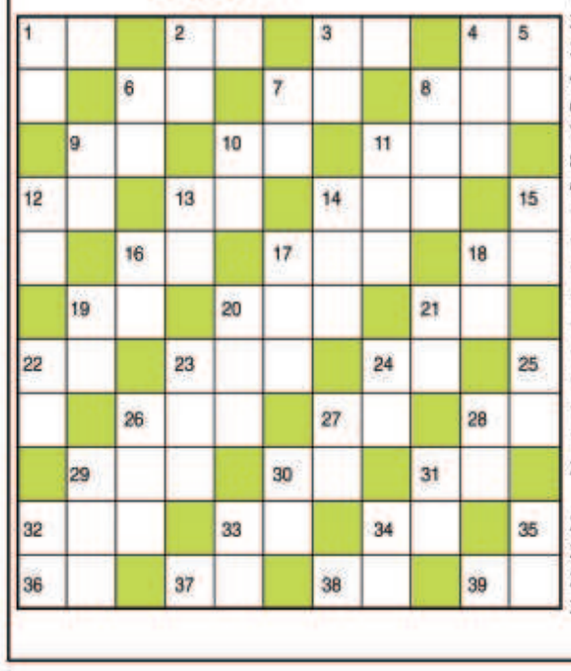

बाएँ से दाएँ
1.बरस,वर्ष-2
2.आफत,मुसीबत-2
3.यमराज-2
4.तीर, बाण-2
6.आनेवाला दिन-2
7.उत्साह-2
8.उचित, सही-3
9.बंधन-2
10.बाण-2
11.उपवन, जंगल-3
12.सरिता-2
13.शिविर, तंबू-2
14.रुई साफ करना-3
16.फंदा, पाश-2
17.भीरु, डरपोक-3
18.तालाब -2
19.सम्मान-2
20.पासों फैक कर भविष्य देखने की विद्या-3
21.श्याम,काले रंग का-2
22.देह, तन, बदन-2
23.चुनना, छांटना-3
24.रघुवीर, सियावर-2
26.जलजला-3
27.कोलाहल-2
28.अवरोध-2
29.दलदल-3
30.पत्नी का भाई-2
31.रिवाज, रस्म-2
32.कक्ष, रूम-3
33.गधा, गर्दभ-2
34.जनकपुत्री-2
36.वोट, राय-2
37.विजय-2
38.मां का भाई-2
39.मूल्य-2

ऊपर से नीचे
1.परछाई-2
2.दम, ताकत-2
3.यमराज-2
4.सोना, निद्रा लेना-3
5.धूल, मिट्टी-2
6.शारीरिक ऊंचाई-2
7.बल, दम-2
8.पहचानना-3
9.बंधक-2
10.मोमबत्ती (उर्दू-2)
11.विवश-3
12.भीगा हुआ-2
13.क्रीडा-2
14.सहमत-3
15.फंदा-2
16.प्राण-2
17.आकांक्षा-3
18.लॉक-2
19.प्रकृति,धन-2
20.घावक-3
21.कार्य-2
22.सवारी गाड़ी-2
23.जंगल-3
24.झगड़ा-2
25.सरल-2
26.कूड़ा-3
27.अंगारा-2
28.वार्तालाप-2
29.दाम, मूल्य-3
30.सारांश-2
31.खाली-2
32.थोड़ा-2
33.पत्र, चिट्ठी-2
34.हद-2
35.बल, ताकत-2

शब्द पहेली - 5014 हल

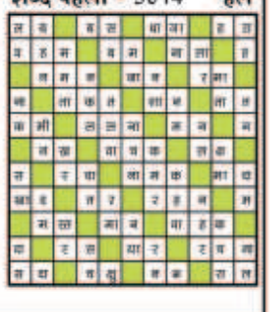

धुबरी में अजमल सुपर ४० की शानदार सफलता, ऑल इंडिया छएएढ परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों का सम्मान

सलीम शेख, धुबरी, १८ जुलाई: हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी धुबरी के अजमल सुपर ४० ने शानदार प्रदर्शन किया है। ऑल इंडिया छएएढ परीक्षा के प्रथम चरण के परिणाम में अजमल सुपर ४० के छात्रों ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। संस्थान के अनुसार, ८० से अधिक छात्रों के कट-ऑफ अंक पार करने की संभावना है।प्रथम चरण के छएएढ परिणाम में धुबरी जिले का नाम रोशन करने वाले अजमल सुपर ४० के छात्रों का संस्थान के शिक्षकों ने सम्मान किया। धुबरी जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले सफल विद्यार्थियों को बधाई दी गई। इस अवसर पर केक काटकर छात्रों ने खुशी का इजहार किया और जश्न मनाया।इसके बाद छएएढ में सफल सभी छात्रों के साथ एक विशाल रैली भी निकाली गई। सफल छात्रों में अधिकांश आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से हैं। अजमल फाउंडेशन ने बताया कि इन सभी छात्रों को पूरी तरह से निःशुल्क शैक्षणिक सहयोग और सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं।

अजमल सुपर ४०, धुबरी कैंपस ने यह भी जानकारी दी कि इस वर्ष ८० से अधिक छात्रों के छएएढ कट-ऑफ पार करने की संभावना है। उल्लेखनीय है कि पूरे असम में अजमल सुपर ४० के ७०० से अधिक विद्यार्थियों ने छएएढ परीक्षा में सफलता प्राप्त की है।

मोबाइल और माइक लेकर कोई भी पत्रकार नहीं बन जाता, जवाबदेही भी जरूरी: दिल्ली हाईकोर्ट

नई दिल्ली, (एजें) १८ जुलाई । दिल्ली हाईकोर्ट ने प्रेस की स्वतंत्रता को लोकतंत्र की आधारशिला बताते हुए कहा है कि इसकी आड.में गैर-जिम्मेदाराना गतिविधियों को बढावा नहीं दिया जा सकता। अदालत ने टिप्पणी की कि आज के समय में मोबाइल फोन और माइक्रोफोन लेकर कोई भी स्वयं को पत्रकार बताने लगता है, जबकि पत्रकारिता के लिए प्रशिक्षण, नैतिकता और जवाबदेही भी उतनी ही आवश्यक है।हाईकोर्ट ने कहा कि डिजिटल और सोशल मीडिया के तेजी से विस्तार के बीच पत्रकारिता के नाम पर फर्जी, गैर-जिम्मेदाराना और डराने-धमकाने वाली गतिविधियां भी बढी हैं। ऐसे मामलों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए अब सरकार को एक संतुलित रेगुलेटरी फ्रेमवर्क तैयार करने पर विचार करना चाहिए।

अदालत ने स्पष्ट किया कि ऐसा ंचा प्रेस की स्वतंत्रता को सीमित करने के लिए नहीं, बल्कि वास्तविक पत्रकारिता की गरिमा बनाए रखने और फर्जी या गैर-जिम्मेदाराना गतिविधियों पर जवाबदेही तय करने के उद्देश्य से होना चाहिए।

कोर्ट ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस की आजादी लोकतांत्रिक व्यवस्था के मूल स्तंभ हैं, लेकिन इनके साथ जिम्मेदारी और जवाबदेही भी जुडी हुई है। इसलिए एक ऐसा संतुलित तंत्र विकसित किया जाना चाहिए, जिससे स्वतंत्र पत्रकारिता सुरक्षित रहे और उसके दुरुपयोग पर प्रभावी रोक लगाई जा सके। मान्यता है कि रथयात्रा के दौरान भगवान के रथ नंदीघोष की रस्सी खींचने से भक्तों के पापों का क्षय होता है तथा उन्हें पुण्य और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसी आस्था के साथ श्रद्धालुओं ने पूरे उत्साह और श्रद्धा से इस पावन आयोजन में भाग लेकर भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया।

लखीमपुर में वन्यजीव हत्या और कुत्तों की तस्करी पर लगाम,ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक के माध्यम से वन विभाग से तत्काल कार्रवाई की मांग

लखीमपुर १८ जुलाई लखीमपुर जिले में वन्यजीवों और बेसहारा जानवरों पर अत्याचार के मामले लगातार बढ. रहे हैं। इसको लेकर पशु अधिकार कार्यकर्ता प्रियंमज्योति फूकन ने १७ जुलाई २०२६ को लखीमपुर जिला ज्येष्ठ पुलिश अधीक्षक गुनेंद्र डेका को एक स्मारक पत्र सौंपकर तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। पत्र में कहा गया है कि सौरपोशिव के जंगल में कुछ लोगों ने एक असहाय हिरन को मारकर उसके मांस के टुकडे.कर दिए। वन्यजीव संरक्षण अधिनियम १९७२ के तहत हिरन का शिकार दंडनीय अपराध है, जिसमें ३ से ७ साल तक की जेल का प्रावधान है।

३ जुलाई २०२६ को पूर्व तेलाही आदिवासी क्षेत्र में अजय ताईड नामक संदिग्ध व्यक्ति को साइकिल पर बैग में बंद कुत्ते के साथ देखा गया। पूछताछ में उसने कुत्ते को सफाई के लिए ले जाने की बात कही। जांच में सामने आया कि कापाक चापरित क्षेत्र में कुछ लोग विभिन्न स्थानों से कुत्तों को लाकर अवैध रूप से मारकर मांस बेचते हैं। यह पशु कूरता निवारण अधिनियम १९६० का स्पष्ट उल्लंघन है।लखीमपुर शहर के खेलमाटी क्षेत्र में हाल ही में २ कुत्तों को चाकू से गोदकर और उबलता गर्म पानी डालकर मारने का प्रयास किया गया। इनमें से एक कुत्ते को गंभीर हालत में बचाकर पनिगांव सेंटर में भर्ती कराया गया है। संगठन का आरोप है कि नागालैंड से कुत्तों का मांस लाकर बेचने वाला गिरोह फिर से सक्रिय हो गया है। इससे पहले भी लखीमपुर पुलिस ने इस गिरोह के एक सदस्य को गिरफ्तार किया था। स्मारक पत्र में विभिन्नय मांग शामिल है जिसमें हिरन हत्या के आरोपियों की गिरफ्तारी सौरपोशिव में हिरन की हत्या में शामिल लोगों को तुरंत गिरफ्तार कर कडी सजा दी जाए। अवैध तस्करी पर रोक गाय-भैंस चोरी,गाय-भैंस और कुत्ते के मांस की अवैध तस्करी करने वाले गिरोह को पूरी तरह खत्म किया जाए। बाजारों में मवेशी बिक्री के कागजात की जांच हो। निगरानी बढे.शहर और जिले के संवेदनशील स्थानों पर नियमित गश्त और उउढत फुटेज की निगरानी की जाए। कुत्ते के मांस का कारोबार बंद हो कुत्तों को पकडक़र मांस के लिए बेचने वाले गिरोह को चिन्हित कर कठोर कार्रवाई की जाए। नागालैंड की तरफ कुत्तों की तस्करी रोकने के लिए सीमा पर सुरक्षा बढाई जाए। पुराने मामलों में कडी कार्रवाई लालुक थाने केस नं. ९७/२०२६ और सदर थाने केस नं. ४३५/२०२५ के आरोपियों को जमानत पर न छोडा जाए। संयुक्त अभियान गुवाहाटी पुलिस की तरह लखीमपुर पुलिस भी काबी आंगलोंग और अन्य इलाकों में अवैध तस्करी गिरोहों के खिलाफ अभियान चलाए।पत्र में कहा गया है कि लखीमपुर से असम के अन्य जिलों तक फैले इस अंतरराज्यीय गिरोह को जल्द से जल्द ध्वस्त करना जरूरी है, ताकि जिले में पशु कूरता पर पूरी तरह अंकुश लग सके।

उधारबंद में श्रद्धा और उत्साह के साथ निकली भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा, जय जगन्नाथ के जयघोष से गूंजा क्षेत्र

नीहार कांति राय, उधारबंद १८ जुलाई : रथयात्रा केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि आस्था, परंपरा और सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रतीक है। कभी ऊंचे-ऊंचे लकडी के रथ, रंग-बिरंगी कागजी झालरों और पत्तों से सजे भव्य रथ, मिट्टी के खिलौनों से सजी मेले की रौनक तथा मोटी रस्सियों से रथ खींचने की सामूहिक परंपरा इस पर्व की विशेष पहचान हुआ करती थी। आरती के बाद प्रसाद ग्रहण करने के लिए श्रद्धालुओं की उमडती भीड.आज भी लोगों की स्मृतियों को ताजा कर देती है। समय के साथ स्वरूप में कुछ बदलाव अवश्य आया है, लेकिन रथयात्रा की परंपरा और श्रद्धा आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है।इसी परंपरा को आगे बढाते हुए गुरुवार को उधारबंद में भगवान श्री जगन्नाथ की रथयात्रा श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ संपन्न हुई। रथयात्रा को लेकर पूरे क्षेत्र में उत्सव जैसा माहौल रहा। सुबह से ही विभिन्न अखाडों और पूजा मंडपों में विशेष पूजा-अर्चना की गई तथा दोपहर में श्रद्धालुओं के बीच महाप्रसाद वितरित किया गया।

उधारबंद के कालाचांद अखाडा, दीप भट्टाचार्य के आवास तथा स्वर्गीय गौरी शर्मा के घर स्थित मंडप में श्रद्धालुओं की भारी भीड.उमडी। शाम लगभग पांच बजे इन तीनों स्थानों से भगवान जगन्नाथ की प्रतिमा को सुसज्जित रथों पर विराजमान कर शोभायात्रा निकाली गई।रथ की रस्सी खींचने के लिए श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। पूरे मार्ग में 'जय जगन्नाथ' के जयघोष और संकीर्तन से वातावरण भक्तिमय बना रहा। विभिन्न स्थानों पर रथ रोककर श्रद्धालुओं ने भगवान के दर्शन किए और श्रद्धापूर्वक प्रणाम अर्पित किया।

रथयात्रा के दौरान किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए प्रशासन पूरी तरह सतर्क रहा। उधारबंद के पुलिस अधिकारी चिरंजीव बरा के नेतृत्व में विभिन्न स्थानों पर पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया गया, जिससे कार्यक्रम शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। रथयात्रा के दौरान प्रेरणा भारती से बातचीत में स्वर्गीय गौरी शर्मा स्मृति मंडप रथयात्रा आयोजन समिति के अध्यक्ष निरेश्वर सिंह (मना) ने बताया कि उनके मंडप का रथ कई दशक पुराना है। उन्होंने कहा कि इस वर्ष भी श्रद्धालुओं के सहयोग और उत्साह के साथ रथयात्रा अत्यंत हर्षोल्लास एवं शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई।

असम विधानसभा में मुख्यमंत्री और वित्त मंत्री के आरोपों पर भाजपा ने अखिल गोगोई से मांगा जवाब

गुवाहाटी, १८ जुलाई (हि.स.)। राइजर दल के प्रमुख एवं शिवसागर के विधायक अखिल गोगोई द्वारा संचालित काजीरंगा ऑर्किड एंड बायोडायवर्सिटी पार्क में कथित वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) चोरी के मामले को लेकर असम प्रदेश भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने शुक्रवार को उन पर तीखा हमला बोला। पार्टी ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा और वित्त मंत्री जयंत मल्लबरुवा द्वारा विधानसभा में लगाए गए गंभीर आरोपों का अखिल गोगोई अब तक स्पष्ट और तथ्यात्मक जवाब नहीं दे सके हैं।

प्रदेश भाजपा मुख्यालय अटल बिहारी वाजपेयी भवन में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता कमल कुमार मेधी ने आरोप लगाया कि विधानसभा में मामला उठने के बाद भी अखिल गोगोई ने आरोपों का सीधा जवाब देने के बजाय मुख्य मुद्दों से ध्यान भटकाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक जीवन में रहने वाले व्यक्ति को अपने ऊपर लगे आरोपों का तथ्यों के आधार पर जवाब देना चाहिए।मेधी ने दावा किया कि काजीरंगा ऑर्किड एंड बायोडायवर्सिटी पार्क की वार्षिक आय लगभग १० से १२ करोड.रुपये है, जिसमें से सात से आठ करोड.रुपये केवल प्रवेश शुल्क से प्राप्त होते हैं। उनका आरोप था कि वर्तमान जीएसटी व्यवस्था के अनुसार इस आय पर प्रतिवर्ष लगभग १.५ करोड.रुपये का जीएसटी देय होना चाहिए। भाजपा का दावा है कि पिछले आठ वर्षों में लगभग १२ से १५ करोड.रुपये के जीएसटी का भुगतान नहीं किया गया।भाजपा प्रवक्ता ने यह भी आरोप लगाया कि पार्क में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों से प्राप्त आय का पूरा विवरण वार्षिक लेखा-जोखा में दर्ज नहीं किया गया। उन्होंने दावा किया कि प्रवेश शुल्क की राशि कर्मचारियों के व्यक्तिगत बैंक खातों में जमा कराई गई। मेधी ने अखिल गोगोई से पिछले आठ वर्षों में पार्क में आने वाले पर्यटकों की कुल संख्या और प्रतिदिन के वित्तीय लेनदेन का विवरण सार्वजनिक करने की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि अब अखिल गोगोई पूरे मामले की जिम्मेदारी चार्टर्ड अकाउंटेंट और सदस्य सचिव पर डालकर स्वयं को वित्तीय मामलों से अलग दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। मेधी ने कहा कि यदि पार्क के सभी वित्तीय निर्णय उनकी जानकारी और स्वीकृति से होते रहे हैं, तो कथित अनियमितताओं की जिम्मेदारी से वे बच नहीं सकते।भाजपा ने पार्क की भूमि को लेकर भी सवाल उठाए। मेधी ने दावा किया कि प्रारंभ में पार्क के लिए २६ बीघा से अधिक भूमि स्वीकृत की गई थी, जबकि वर्तमान में इसका विस्तार १०० बीघा से अधिक क्षेत्र में हो चुका है। उन्होंने पूछा कि यदि संस्था आर्थिक संकट में थी, जैसा कि अखिल गोगोई ने पहले दावा किया था, तो अतिरिक्त भूमि किस प्रकार प्राप्त की गई। उन्होंने इस विस्तार के लिए धन के स्रोत और भूमि के अधिग्रहण की प्रक्रिया सार्वजनिक करने की मांग की।मेधी ने अखिल गोगोई के उस बयान का भी उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने आवश्यकता पडने पर पार्क सरकार को सौंपने की बात कही थी। भाजपा प्रवक्ता ने दावा किया कि पार्क का संचालन करने वाली समिति के १० निदेशकों में से चार अखिल गोगोई के परिवार के सदस्य हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा या सरकार की ओर से पार्क पर कब्जा करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है और इस मुद्दे पर लोगों की भावनाएं भडक़ाने की कोशिश नहीं की जानी चाहिए।भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि पार्क के माध्यम से असम की विभिन्न जनजातीय और सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण सराहनीय पहल है, लेकिन सांस्कृतिक गतिविधियों की आड.में कर नियमों के कथित उल्लंघन को उचित नहीं ठहराया जा सकता। भाजपा ने मांग की कि यदि अखिल गोगोई पारदर्शिता और जवाबदेही में विश्वास रखते हैं तो पूरे मामले के वित्तीय दस्तावेज सार्वजनिक करें।भाजपा ने विधानसभा में मुख्यमंत्री द्वारा लगाए गए उस आरोप का भी उल्लेख किया, जिसमें कहा गया था कि विधानसभा चुनाव से पहले शिवसागर क्षेत्र के नामघरों में १.५ लाख रुपये नकद वितरित किए गए थे। मेधी ने कहा कि अखिल गोगोई इस आरोप पर भी संतोषजनक जवाब नहीं दे सके हैं। उन्होंने दावा किया कि भाजपा इस मामले की निष्पक्ष जांच की मांग करती है।

संवाददाता सम्मेलन में प्रदेश प्रवक्ता प्रांजल कलिता और मीडिया पैनलिस्ट कौशिक पाल दास भी उपस्थित थे।

अखिल भारतीय NEET परीक्षा में धुबरी के १२ छात्रों ने किया शानदार प्रदर्शन

सलीम शेख, धुबरी, १८ जुलाई: छएएढ प्रश्नपत्र लीक होने के बाद पहली परीक्षा रद्द कर दोबारा आयोजित की गई थी। लंबे विवाद और आंदोलनों के बीच आखिरकार बीती रात अखिल भारतीय छएएढ परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया।इस परिणाम में देशभर के साथ-साथ असम के धुबरी जिले के कुल १२ विद्यार्थियों ने उल्लेखनीय सफलता हासिल कर जिले का नाम रोशन किया।धुबरी के हावरारपार निवासी एमडी तासीन मुत्ताकी सरकार ने ७२० में से ६८५ अंक प्राप्त कर ऑल इंडिया रैंक (अखठ) २१३ हासिल की और जिले का गौरव बढाया।वहीं, आर्थिक कठिनाइयों को मात देते हुए अजमल सुपर ४० के छात्र आरियन हुसैन ने ६५७ अंक प्राप्त कर ऑल इंडिया रैंक १०२० हासिल की।गौरीपुर के एक बढई के पुत्र लुत्फर अली ने ५९२ अंक प्राप्त कर जिले को गौरवान्वित किया।धुबरी धर्मशाला के अल रब्बी ने ५४२ अंक, जबकि तामारहाट क्षेत्र की जन्नत फिरदौसी ने ५३३ अंक प्राप्त कर सफलता हासिल की।इसी प्रकार, धुबरी जिले के बिरसिंग क्षेत्र से भी कई विद्यार्थियों ने छएएढ परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। बिरसिंग ग्राम पंचायत के मेहदी हसन ने ५७४ अंक, सातसिया गांव के फिरदौस अली ने ५६० अंक, फकीरगंज के मेधावी छात्र रुबाई अल मुवाब्बस ने ५५४ अंक, कटलामारी गांव की छात्रा मेहजेबीन अफसिन ने ५४३ अंक, मो. मुजाहारुल इस्लाम ने ५३८ अंक, जोसमिनारा परवीन ने ५३० अंक, सातसिया गांव की छात्रा आश्रुफा अहमद ने ५२५ अंक तथा फकीरगंज के छात्र मसूद अहमद ने भी ५२५ अंक प्राप्त किए। जानकारी के अनुसार, इन सफल विद्यार्थियों में अधिकांश परीक्षाथी धुबरी जिले के चर (नदी द्वीप) क्षेत्रों से हैं। इन छात्रों की सफलता ने पूरे जिले में खुशी और गर्व का माहौल बना दिया है।

दुमदुमा अंचल के फिलोबाडी में एक ही रात में तीन धार्मिक स्थलों पर चोरी

दुमदुमा प्रे.. १८ जुलाई :-- दुमदुमा सम -जिला के अंतर्गत फिलोबाडी में कल रात तीन धार्मिक स्थलों पर चोरी की घटना घटित हुई है। मिली जानकारी के अनुसार कल रात फिलोबारी के घूरनी शिव मंदिर , रूपजान नामघर और गाभरूभेटी ११ नंबर बामुनगांव के काली मंदिर में चोरी की घटना हुई है । रूपजान नामघर में चोरों के एक दल ने ताला तोडक़र मणिकूट (गर्भगृह) के अंदर चोरी को अंजाम दिया । चोरों ने गर्भगृह के अंदर संदूक का ताला तोडक़र करीब ५० हजार रुपये लेकर फरार हो गए । चोरों ने गोदाम घर में भी चोरी की वारदात को अंजाम दिया । नामघर प्रबंधन समिति ने इस घटना के संबंध में स्थानीय पुलिस को सूचित कर दिया है। वहीं दूसरी ओर, गाभरूभेटी ११ नंबर बामुनगांव स्थित श्री श्री काली मंदिर में भी कल रात के समय चोरी की घटना हुई । चोरों ने काली मंदिर का दानपात्र तोडक़र नकदी लेकर रफूचक्कर हो गए। इसी बीच, फिलोबाडी घूरनी स्थित श्री श्री शिव मंदिर का दानपात्र भी उसी रात चोरी हो गया। इसके साथ ही, फिलोबाडी विष्णुपुर के निवासी बाबुल कलिता की 'अड २३ छ २३०२' नंबर वाली पल्सर मोटरसाइकिल भी रात में चोरी हो गई । दुमदुमा अंचल में इन दिनों चोर मंदिरों में चोरी की घटना को अंजाम दे रहे हैं। पीछले दिनों बड्हापजान काली मंदिर में भी लाखों रूपए की चोरी हुई थी । जिसमें आज तक चोर पुलिस की गिरफ्त से बाहर है ।

जीवन भर की कमाई समाज को समर्पित: सेवानिवृत्त प्रोफेसर दंपती ने विश्वविद्यालय को दान किए एक करोड.

गुवाहाटी, १८ जुलाई (हि.स.)। त्याग, सादगी और समाजसेवा की अद्भुत मिसाल पेश करते हुए कॉटन कॉलेज के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. पन्नालाल गोस्वामी और डॉ. नंदिता भट्टाचार्य गोस्वामी ने अपनी जीवन भर की मेहनत की कमाई एक करोड.रुपये कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय को दान कर दी।डॉ. नंदिता भट्टाचार्य गोस्वामी ने कहा कि धन उनके लिए अब बोझ बन चुका था। उन्होंने कहा, 'यह धन आखिरकार जनता का ही था। इसे समाज को समर्पित कर हमने अपना बोझ हल्का किया है। हमारा जीवन मंत्र हमेशा 'सादा जीवन, उच्च विचार' रहा है।'दंपती के इस प्रेरणादायक कदम की हर ओर सराहना हो रही है। उनका मानना है कि जीवन की सबसे बडी उपलब्धि धन संग्रह नहीं, बल्कि समाज के हित में उसका सदुपयोग है। उनका यह दान आने वाली पीढिय़ों के लिए सेवा, सादगी और उदारता का प्रेरक संदेश है।

डॉ. पन्नालाल गोस्वामी ने असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा को अपना पूर्व छात्र बताते हुए कहा, 'वे मेरे छात्र रहे हैं और मुझे उन पर बेहद गर्व है।'प्रोफेसर दंपती की यह महान पहल समाज को यह संदेश देती है कि सच्ची संपत्ति वही है, जो मानवता और शिक्षा के उत्थान में समर्पित हो।

दिवंगत गौतम यादव को श्रद्धांजलि, यादव महासभा, न्यू सिलचर मंडल भाजपा तथा विभिन्न वाहन संगठनों की ओर से पुत्र को किया गया सम्मानित

प्रे.सं. शिलचर, १८ जूलाई: दिवंगत गौतम यादव की स्मृति में शुक्रवार को मेहरपुर स्थित उनके आवास पर श्रद्धांजलि एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। भाजपा नेता भोलानाथ यादव के भाई गौतम यादव के श्राद्ध कार्यक्रम के अवसर पर आयोजित समारोह में यादव महासभा, न्यू सिलचर मंडल भाजपा तथा विभिन्न वाहन संगठनों की ओर से उनके इकलौते पुत्र को सम्मानित कर मानपत्र प्रदान किया गया। समारोह में भाजपा के कछार जिला अध्यक्ष रूपम साहा, पूर्व विधायक दीपायन चक्रवर्ती प्रेम राज ग्वाला, प्रदीप ग्वाला, रामकुमार ग्वाला, नंदलाल ग्वाला, धर्मराज ग्वाला, पप्पू यादव, परमानंद ग्वाला, प्रिंस यादव, महावीर ग्वाला, रामसेकर यादव, विशाल यादव, कन्हैयालाल ग्वाला तथा भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष सुस्मिता पुरकायस्थ सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। वक्ताओं ने दिवंगत गौतम यादव के सामाजिक योगदान और व्यक्तित्व को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

PM-AJAY योजना के तहत १.१२ करोड.रुपये की अनुदान राशि वितरित अनुसूचित जाति के आत्मनिर्भरता अभियान को मिली नई गति

प्रीतम दास हाइलाकांदी, १८ जुलाई:अनुसूचित जाति समुदाय के सामाजिक आर्थिक विकास आत्मनिर्भरता को बढावा देने तथा ग्रामीण आजीविका को सशक्त बनाने के उद्देश्य से केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री अनुसूचित जाति अभ्युदय योजना (झच-अगअध) के अंतर्गत शनिवार को हाइलाकांदी के रवीन्द्र भवन सभागार में एक भव्य अनुदान वितरण समारोह का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला आयुक्त जय विकास तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में हाइलाकांदी विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ. मिलन दास उपस्थित रहे।यह कार्यक्रम जिला मिशन प्रबंधन इकाई (ऊचचण) असम राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (अडठङच) तथा अनुसूचित जाति एवं अन्य पिछडा वर्ग कल्याण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया।समारोह में जिले के १८५ अनुसूचित जाति स्वयं सहायता समूहों (डउ डक्रीव) को अनुदान राशि प्रदान की गई। इसके अलावा ४३ स्वयं सहायता समूह सदस्यों को व्यक्तिगत वित्तीय सहायता भी दी गई। इस प्रकार हैलाकांडी जिले में कुल १ करोड.१२ लाख ३८ हजार रुपये की अनुदान राशि वितरित की गई।अपने संबोधन में विधायक डॉ. मिलन दास ने कहा कि प्रधानमंत्री अनुसूचित जाति अभ्युदय योजना अनुसूचित जाति समुदाय के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। उन्होंने कहा कि इस योजना से स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी तथा छोटे-छोटे उद्यम स्थापित करने के नए अवसर उपलब्ध होंगे।उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य केवल आर्थिक सहायता प्रदान करना नहीं है बल्कि लाभार्थियों के लिए स्थायी आय के स्रोत विकसित कर उन्हें वास्तविक अर्थों में आत्मनिर्भर बनाना है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और समाज के वंचित वर्गों के जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार आएगा।डॉ. मिलन दास ने आगे कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार समाज के अंतिम पंक्ति के लोगों के कल्याण के लिए अनेक जनहितकारी योजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन कर रही हैं। झच-अगअध ऐसी ही एक महत्वपूर्ण योजना है जो अनुसूचित जाति समुदाय के लोगों के सशक्तिकरण और आर्थिक स्वावलंबन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

कार्यक्रम में जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (उएज) जिला परिषद की अध्यक्ष फातिमा बेगम चौधरी अलगापुर कटलीछडा विधानसभा क्षेत्र के विधायक के प्रतिनिधि सैदुल इस्लाम बरभुइया विभिन्न सरकारी विभागों के वरिष्ठ अधिकारी जनप्रतिनिधि तथा बडी संख्या में स्वयं सहायता समूहों के सदस्य उपस्थित थे।जिला प्रशासन ने बताया कि सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ वास्तविक पात्र लाभार्थियों तक पहुंचाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। झच-अगअध के अंतर्गत यह अनुदान वितरण उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

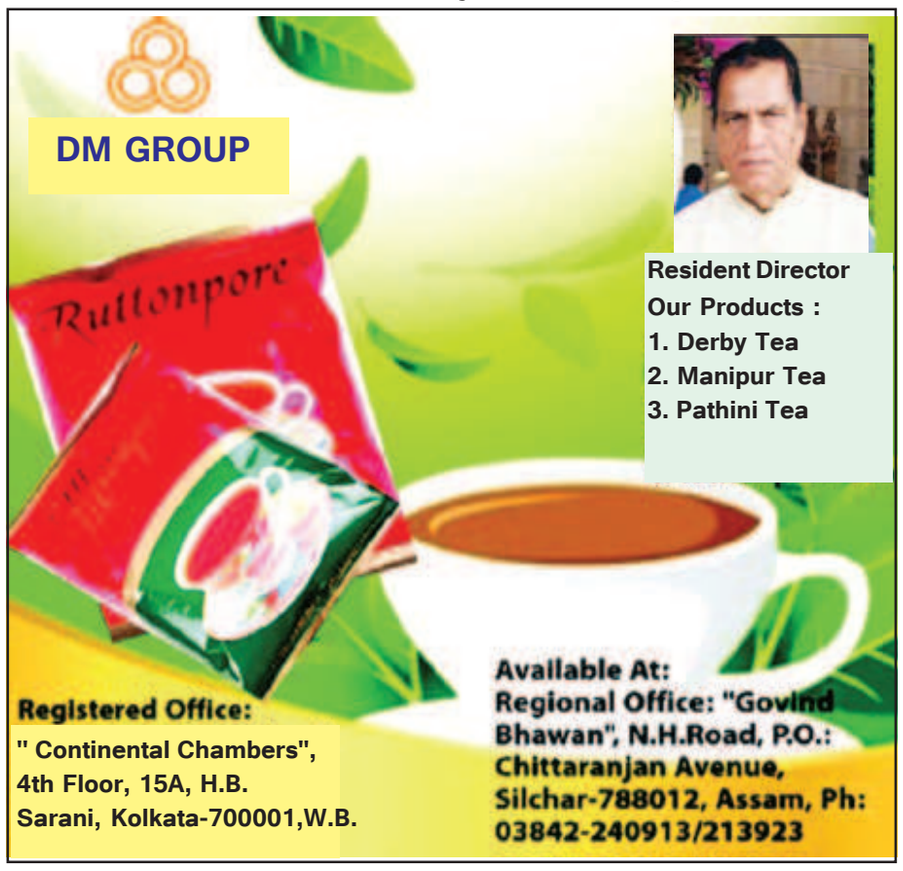

मुद्रक, प्रकाशक व स्वामी श्री दिलीप कुमार द्वारा भारती ऑफसेट मुद्रणालय, कटहल रोड, शिलचर-05 (असम) से मुद्रित व प्रकाशित, सम्पादक-श्रीमती सीमा कुमार, Ph & Fax (03842) 242633, (M) 9435213512